Vol.21, Issue 12 | Annual Subscription ₹480

@NewsRotary

/RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

अक्टूबर 2022

Rotary

Rotary

VISAKHA VISTA

New horizon

Rotary Institute - 2022

Zone 4,5,6,7

IMAGINE ROTARY

9th to 11th December, 2022

REGISTER HERE

rotaryinstitute2022.com

Venue

Radisson Blu Resort

Visakhapatnam, Andhra Pradesh

30th Nov to 1st Dec, 2022

GETS/GNTS

W Abu Dhabi- Yas Island
United Arab Emirates

8th Dec, 2022

GOLF TOURNAMENT

07:00 AM

TRF Seminar & Dinner

3:00 PM to 10:30 PM

9th Dec, 2022

- DG Mid-Year Review Meet
- District Trainers Seminar
- Women in Rotary
- Rotaractors Seminar

09:30 AM to 01:00 PM

Lunch

01:00 PM

Institute Inauguration

03:00 PM to 6:00 PM

Dinner/Entertainment

07:00 PM

10th Dec, 2022

Service Projects Inauguration

Rotary Institute

10:00 AM to 5:00 PM

Lunch

01:00 PM

Dinner/Entertainment

07:00 PM

11th Dec, 2022

Run to read (10k Run)

6:00 AM

Rotary Institute

10:00 AM to 01:00 PM

Lunch

01:00 PM

JENNIFER E. JONES
PRESIDENT
ROTARY INTERNATIONAL

Dr. MAHESH KOTBAGI
CONVENOR
ROTARY INTERNATIONAL DIRECTOR 2021-23

CH. KISHORE KUMAR
CHAIRMAN
PAST DISTRICT GOVERNOR 3020

Dr. Sagadevan
CHAIRMAN - PROMOTION COMMITTEE
PAST DISTRICT GOVERNOR 3203

CONTACT

PDG Ch. Kishore Kumar
Chairman | +919849487870

PDG Dr. E.K. SAGADHEVAN
Chairman - Promotion | +919994477725

Email
rotaryinstitute2022@gmail.com

ADVT.

विषयसूची

12
आखिर भारतीय महारानी को क्यों पसंद करते थे, ब्रिटिश राज से नफरत करने के बावजूद?

20
पुणे के रोटेरियनों ने पिंगोरी गांव की तस्वीर बदल दी

30
व्हीलचेयर से विकलांगता अधिकारों की लड़ाई

34
अहमदाबाद के इंटरेक्टरों ने यूक्रेन और पाकिस्तान के लिए धन जुटाया

40
दिल्ली में साइकिल रैली ने कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाई

44
अध्यक्ष जोन्स ने पुणे में एक रेडीऐशन सेंटर का उद्घाटन किया

46
हम रोटरी की वजह से बेहतर लोग हैं: रो ई अध्यक्ष

48
TRF का शानदार काम देखकर अच्छा लगा: इयान राइसली

58
नवजात इकाई, रोटरी क्लब तिरुचेंगोड का गौरव

60
इको-फ्रेंडली होने के शुरुआती सबक

62
श्वेत गैंडे और अश्वेत मांबास

74
डीमापुर क्लब, नागा बच्चों के लिए वरदान

76
आपकी खुशी और बेहतर स्वास्थ्य के लिए

Advertise in Rotary News

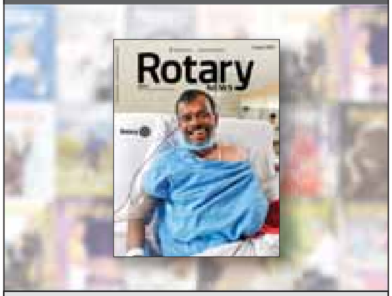

Tariff	
Back cover	₹1,00,000
Inner Front Cover	₹60,000
Inner Back Cover	₹60,000
Inside Full Page	₹30,000
Half Page	₹20,000
Specifications	
17 x 25 cm	Full page
17 x 12 cm	Half page

Advertisements in colour only

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

Use Rotary's free Club Locator and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

District Wise TRF Contributions as on August 2022–23 (Interim Results)

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus Fund	Endowment Fund	Other Funds	Total Contribution
			India		
2981	7,998	127	0	625	8,750
2982	5,095	1,099	2,001	14,538	22,733
3000	4,580	1,361	0	0	5,941
3011	7,344	100	127	44,582	52,152
3012	541	0	0	21,810	22,351
3020	5,443	160	30,000	0	35,603
3030	5,274	43	0	1,150	6,468
3040	4,412	258	0	5,747	10,416
3053	19,068	0	0	0	19,068
3054	2,664	0	0	0	2,664
3060	17,208	125	0	38,072	55,405
3070	11,136	100	8,400	2,975	22,612
3080	5,083	1,397	0	0	6,480
3090	1,098	0	2,190	0	3,288
3100	17,248	0	0	0	17,248
3110	3,233	229	2,025	242,000	247,487
3120	4,089	0	0	0	4,089
3131	73,282	381	22,785	73,316	169,765
3132	9,508	583	25,000	0	35,090
3141	290,163	27,200	1,000	8,114	326,477
3142	43,442	1,100	0	25	44,567
3150	8,581	1,109	0	313	10,003
3160	945	1,063	0	0	2,009
3170	26,906	10,636	506	0	38,048
3181	28,565	6	25	399	28,995
3182	5,482	253	0	0	5,735
3190	7,425	95	0	735	8,255
3201	22,837	531	0	251,245	274,613
3203	744	387	0	11,522	12,653
3204	3,575	0	0	152	3,727
3211	46,406	0	0	1,049	47,455
3212	7,287	10,041	0	31,646	48,974
3231	39,331	18,248	32,025	525	90,129
3232	24,659	3,051	0	16,312	44,022
3240	10,582	6,073	1,000	0	17,655
3250	2,449	75	0	10,500	13,024
3261	290	13	0	200	503
3262	530	23	0	27,471	28,023
3291	18,827	13	15,033	0	33,873
India Total	**793,330**	**85,879**	**142,118**	**805,023**	**1,826,350**
3220 Sri Lanka	6,221	211	0	0	6,431
3271 Pakistan	25	25	0	250	300
3272 Pakistan	300	0	0	5,000	5,300
3281 Bangladesh	29,277	393	20,000	7,352	57,023
3282 Bangladesh	575	1,000	0	2,806	4,381
3292 Nepal	3,248	907	0	9,326	13,481
South Asia Total	**832,976**	**88,415**	**162,118**	**829,758**	**1,913,267**

Annual Fund (AF) includes SHARE, Areas of Focus, World Fund and Disaster Response.

Source: RI South Asia Office

आपके पत्र

एक सुसज्जित पत्रिका

सितंबर अंक की कवर फोटो में रो ई मंडल 2981 द्वारा बनाए जा रहे मियावाकी जंगल के एक अनूठे शॉट को दर्शाया गया है। रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स का *'असहज जोखिम लेने की शक्ति'* पर भाषण प्रेरणादायक है। समाज में असमानता और उत्पीड़न को खत्म करने की आवश्यकता पर संपादक की टिप्पणी पढ़ना दिलचस्प है।

लेख *जहां स्कूल जाना एक विलासिता है* गांवों में आदिवासियों की दयनीय स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। अन्य लेख जैसे *खरपतवारों को मत पनपने दो, तमिलनाडु प्रोजेक्ट्स ने रो ई अध्यक्ष जोन्स का दिल जीत लिया, रोटरी के लिए सदस्यों को व्यस्त रखना महत्वपूर्ण, बाढ़ पीड़ितों को मिली रोटरी क्लब वलसाड से मदद, एक शांति दूत, चाय के ग्रैंडमास्टर,* और *हमारे घुटने हमें एथलीट बनाते है,* सभी पढ़ने योग्य लेख है। *भारत अध्यक्ष जोन्स का स्वागत करता है* शीर्षक के साथ प्रस्तुत तस्वीरें रंगीन और आकर्षक है।

फिलिप मुलप्पोन एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

जमशेदपुर (अगस्त अंक) में डॉ विजया भारत द्वारा शुरू की गई पेसमेकर को ठीक करने की एक प्रभावशाली परियोजना पर लिखित लेख में अफगान हृदय रोगी शादाब की कहानी पढ़ना दिल को छू लेने वाला था। TRF न्यासी गीता मानेक का साक्षात्कार प्रेरणादायक है।

डॉ जगदीश वघासिया
रोटरी क्लब सूरत ईस्ट - मंडल 3060

DEI पर स्पॉटलाइट

अपने स्पष्टवादी अगस्त संदेश में, अध्यक्ष जोन्स ने रोटरी पदानुक्रम में DEI पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है और रोटरी की सदस्यता में विविधता लाने के प्रयासों की बात कही है। वह चाहती हैं कि क्लब की बैठकें और कार्यक्रम DEI के उद्देश्यों को पूरा करने की बात को ध्यान में रखते हुए आयोजित किए जाएं।

रोटरी भारत में अगले साल पहली बार सात महिला गवर्नर होंगी और जोन्स ने पुणे में *लक्ष्य* निर्धारित करने वाले सम्मेलन लक्ष्य में उन्हें बधाई दी। मरीजों के दिलों पर पेसमेकर लगाने के लिए रोटरी क्लब जमशेदपुर द्वारा टाटा मेन हॉस्पिटल के साथ साझेदारी करने की कवर स्टोरी वाकई दिल को छू लेने वाली है।

एस मुनियांदी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

रो ई अध्यक्ष जेनिफर ने अपने अगस्त संदेश में और ह्यूस्टन सम्मेलन के समापन सत्र के अपने संबोधन में रोटरी के कई पहलुओं को छुआ है। सबसे महत्वपूर्ण क्लब स्तर पर नए सदस्यों की व्यस्तता को लेकर उनकी चिंता थी।

रोटरी की सबसे बड़ी संपत्ति इसका व्यक्तिगत रोटेरियन है। मुझे PRIP ग्लेन किनरॉस के शब्द याद आते है: ''हर बार जब हम एक सदस्य खोते है, वह भी हाल ही में शामिल हुआ सदस्य, तो हमारी संपत्ति कम हो जाती है। सिर्फ नए सदस्यों को शिक्षित करने पर ध्यान देने से ही क्लब अवरोधन दर में काफी सुधार कर सकते है।'' जैसा कि जोन्स कहती है, हमें क्लब के नए सदस्यों की अपेक्षाओं को बहुत ही सम्मानपूर्वक सुनना होगा।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

तस्वीर सब बयां करती है

एक रोटेरियन के रूप में मेरा दिल तब गर्व से चौड़ा हो गया जब मेरे 14 वर्षीय बेटे, समर्थ, ने मुझे अगस्त अंक की कवर फोटो दिखाई जिसमें अस्पताल के बिस्तर पर एक मुस्कुराते हुए रोगी की तस्वीर थी। उसने कहा कि ज्यादातर पत्रिकाओं में वह कवर पेज पर बॉलीवुड सितारों, खेल हस्तियों और राजनीतिक नेताओं की तस्वीरें देखते है, लेकिन इस रोटरी पत्रिका में एक मुस्कुराते हुए व्यक्ति की तस्वीर है जो शायद अस्पताल में है। आखिर ऐसा क्यों, उसने पूछा।

जब मैंने उसे बताया कि वह उन दिल के रोगियों में से एक है जिसे रोटरी क्लब द्वारा प्रायोजित पेसमेकर लगा है, तो मेरे बेटे ने जवाब दिया कि उसके चेहरे की मुस्कुराहट से पता चलता है कि इस सर्जरी ने उसके जीवन में कितना अंतर डाला है। मैं न केवल उसके अवलोकन से प्रभावित था, बल्कि मुझे दुनिया भर में रोटरी क्लबों द्वारा की जाने वाली जीवन-रक्षक परियोजनाओं पर भी गर्व हुआ।

रोटरी न्यूज़ को बधाई, हमारी सेवा परियोजनाओं को इतने विस्तार और सही परिप्रेक्ष्य में चित्रित करने के लिए, रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए।

आर मुरली कृष्ण
रोटरी क्लब ब्रह्मपुर - मंडल 3262

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं rotarynews@rosaonline.org या rushbhagat@gmail.com पर संपादक को मेल कीजिए। rotarynewsmagazine@gmail.com पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा rushbhagat@gmail.com या rotarynewsmagazine@gmail.com पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अधिक रोटरी परियोजनाओं के बारे में पढ़ने के लिए हमारी वेब साइट www.rotarynewsonline.org पर Rotary News Plus पर क्लिक करें।

कवर पर: 1953 में अपने राज्याभिषेक के दौरान महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय।

पोलियो पर स्पॉट लाइट

अगस्त में, मुझे पाकिस्तान का दौरा करके वहाँ पर रोटरी के शीर्ष लक्ष्य, पोलियो उन्मूलन, पर प्रकाश डालकर गर्व महसूस हुआ। पोलियो उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं पर प्रकाश डालने का भी यह एक शानदार अवसर था।

इस महीने, जब हम विश्व पोलियो दिवस मना रहे है, तो हम पहले वैश्विक पोलियो उन्मूलन अभियान का नेतृत्व करने के अपने 30 से अधिक वर्षों के प्रयास और इस विशाल लक्ष्य को पूरा करने हेतु हमारे द्वारा निर्मित की गई सक्षम साझेदारियो की सफलता पर भी प्रकाश डाल रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि यह इतिहास की सबसे महत्वाकांक्षी वैश्विक स्वास्थ्य पहलों में से एक है और हमने दुनिया भर में पोलियो के मामलों को 99.9 प्रतिशत से अधिक कम कर दिया है।

पाकिस्तान दुनिया के उन दो देशों में से एक है जहाँ यह खतरनाक पोलियो वायरस स्थानिक बना हुआ है। (दूसरा इसका पड़ोसी देश अफगानिस्तान है। मुझे पाकिस्तान के टीकाकरण अभियानों को देखने और उसमें भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ और मेरे जाने के तुरंत बाद वहाँ पर एक बड़ा राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान शुरू हुआ जो 5 वर्ष से कम उम्र के 43 मिलियन बच्चों पर केंद्रित था। पाकिस्तान में टीका लगाने वालों में 60 प्रतिशत से अधिक महिलाएं है जो उल्लेखनीय काम कर रही हैं।

यह सब प्रत्यक्ष रूप से देखते हुए, मैं जानती हूँ कि रोटरी जगत में पोलियो को समाप्त करने की इच्छाशक्ति मौजूद है और मुझे विश्वास है कि हमारे पास इसकी रणनीति है। पाकिस्तानी मीडिया भी हमारे प्रयासों का बहुत समर्थन कर रहा है और इससे परिवर्तन आ रहा है। इस महीने, बर्लिन में विश्व स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन में एक नवीन वैश्विक प्रतिज्ञा क्षण इन समय-संवेदनशील उन्मूलन प्रयासों के निधियन के लिए अधिक संसाधनों को एक साथ लाने का वादा करता है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम अपनी भूमिका निभाएं और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन से 1 के बदले 2 का मिलान प्राप्त करने के लिए 50 मिलियन डॉलर जुटाएं।

मैंने पाकिस्तान में जो देखा उसने मुझे आश्वस्त किया कि हम काम पूरा कर सकते है और उसे पूरा करना ही होगा, लेकिन यह तभी होगा जब हम एक रणनीति के लिए प्रतिबद्ध रहें जो काम कर रही है और जो सभी आवश्यक संसाधनों के साथ इसका समर्थन करती है।

पोलियो के मोर्चे पर आशावाद एक बड़ा मुद्दा है - लेकिन कुछ चौंका देने वाली नई घटनाएं हो रही है जिन्होंने इस चुनौती को और बढ़ा दिया है। पिछले कुछ महीनों में, इज़रायल, यूनाइटेड किंगडम और हाल ही में न्यूयॉर्क शहर के क्षेत्रों में नए पोलियो का प्रकोप दिखाई दिया। ये कहानियां भयावह है लेकिन हर मामले में प्रतिक्रिया स्पष्ट है - टीके काम करते है और यदि पोलियो फैल रहा है तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि सबसे अधिक जोखिम वाले लोगों का टीकाकरण समय पर होता रहे।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अब इस वायरस को खत्म करना होगा। यदि पोलियो कहीं भी मौजूद है तो यह हर जगह फैल सकता है। मैंने पाकिस्तान में जो देखा उसने मुझे आश्वस्त किया कि हम काम पूरा कर सकते है और उसे पूरा करना ही होगा, लेकिन यह तभी होगा जब हम एक रणनीति के लिए प्रतिबद्ध रहें जो काम कर रही है और जो सभी आवश्यक संसाधनों के साथ इसका समर्थन करती है।

हमारी प्रतिबद्धता, उदारता और दृढ़ संकल्प के माध्यम से, हम एपवझेश्रळे अर्थात पोलियो को खत्म करेंगे।

जेनिफर जोन्स
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

खौला जमील

पोलियो का टीका देने के बाद, जोन्स पाकिस्तान के कराची में एक बच्चे के साथ बातचीत करते हुए।

संपादक
का संदेश

महारानी एलिज़ाबेथ
द्वितीय से नेतृत्व के सबक

ये उन विडंबनापूर्ण परिस्थितियों का वर्णन है जहां हम रहते हैं, अतिक्रमण, संघर्ष और युद्ध से विदीर्ण हो चुकी एक दुनिया जो क्षेत्रों, सम्प्रदायों और जातियों में भीतर तक विभाजित है, जहां कोविड महामारी के विनाश के साथ - साथ प्रचंड प्राकृतिक आपदाओं ने कई राष्ट्रों को गंभीर आर्थिक आघात पहुंचाए, पिछले महीने यहां 400 से अधिक वैश्विक नेता औपचारिक एकजुटता दिखाते हुए एकत्र हुए। हर तरह की आपसी रंजिश और मतभेदों के बावजूद, पूर्ण शिष्टता, श्रद्धा और शालीनता से समूह में एक साथ आए, ब्रिटिश महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए, जिनका निधन 96 वर्ष की आयु में हो गया।

इससे भी बड़ी विडंबना, जिस महिला की स्मृति में वे इतने सम्मान से खड़े थे, उस महिला के पास उन्हें वहां तक खींच लाने के लिए कोई बहुत बड़ी राजनीतिक शक्ति नहीं थी। वास्तव में, एक समय, निर्दयी औपनिवेशिक शक्ति का प्रतीक होने के कारण, भारत सहित कई देशों पर ब्रिटिश साम्राज्य ने जो अत्याचार किए थे, उनकी अक्सर निंदा और भर्त्सना की जाती थी। इतिहास भरा पड़ा है, ब्रिटिश साम्राज्य की काली करतूतों से, जिसने इसके हजारों स्थानीय निवासियों पर अत्याचार करते हुए इसके उपनिवेशों को लूटा और कंगाल बनाया।

और फिर भी, वही ब्रिटेन, राष्ट्रमंडल का गठन कर उसका प्रमुख बना, जिसका प्रतिनिधित्व रानी द्वारा किया गया सबके प्रति समभाव, गरिमा, प्रभावशाली, दयाभाव सहित... इन सभी तत्वों की करिश्माई मौजूदगी ने उन्हें एक ऐसी विनम्र शक्ति (सॉफ्ट पावर) बना दिया कि उनके निधन से दुनिया के अधिकांश लोगों को अपूरणीय क्षति का अहसास हुआ। और यह उस तरह का विलाप नहीं था जो राजकुमारी डायना के लिए फूट पड़ा था, जो अपने जीवन के उत्कर्ष पर एक भीषण सड़क दुर्घटना में काल का ग्रास बन गई थी। यदि कभी कोई असामयिक मृत्यु हुई है तो वो यही थी। लेकिन रानी ने अपना भरपूर जीवन जिया ... नब्बे से भी अधिक।

एलिजाबेथ दुनिया के नेताओं के लिए मंथन और अनुकरण करने योग्य अपने पीछे जो विरासत छोड़ गई है, है, वो है सहनशीलता और सम्मानजनक तरीका, जिसमें सार्वजनिक आक्रोश, आलोचना और आरोप प्रत्यारोप से सहजता से निपटा जा सकता है, बिना आपा खोये और शान्ति के साथ। एक और सबक यह कि जब कटुता अपने चरम पर होती है, तो इस तूफ़ान को शांत करने में मौन बहुत कुछ कर सकता है। एक महत्वपूर्ण सबक, उनमें अहंकार और क्रोध की अनुपस्थिति, कम से कम सार्वजनिक रूप से, सबके सामने। बेशक, यह तर्क दिया जा सकता है कि वर्षों तक अथक शिक्षण और प्रशिक्षण की वजह से इसकी जड़ें उनके भीतर समाहित थीं, और विशेष रूप से तब से, जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि भविष्य में वह इंग्लैंड की रानी बनेंगी। दुर्भाग्य की बात ये है कि, आज की राजनीति में नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए न तो शिक्षण, प्रशिक्षण को और न ही शालीनता और गरिमा को ज़रूरी समझा जाता है।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आज की दुनिया में राष्ट्रों के शीर्ष पटल पर ऐसे नेता बहुत कम उभर कर आ रहे हैं जो स्वार्थ रहित सम्मान, स्नेह और प्रशंसा आकृष्ट कर सकते हैं।

क्या यह अवसाद की बात नहीं है कि ब्रिटिश रानी की उपस्थिति और व्यक्तित्व के माध्यम से स्वतः उत्पन्न हुई, रहस्य और करिश्मे की छाप, शायद कुछ ऐसी जो ओझल हो रही है ...

रशीदा भगत

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 सेल्वनाथन वी
RID 2982 सरवनन पी
RID 3000 आई जेराल्ड
RID 3011 अशोक कंटूर
RID 3012 डॉ ललित खन्ना
RID 3020 भास्कर राम वी
RID 3030 डॉ आनंद ए झुंझुनूवाला
RID 3040 जिनेंद्र जैन
RID 3053 राजेश कुमार चुरा
RID 3054 डॉ बलवंत एस चिराना
RID 3060 श्रीकांत बालकृष्ण इंदानी
RID 3070 डॉ दुष्यंत चौधरी
RID 3080 कल्टा वी पी
RID 3090 गुलबहार सिंह रेटोले
RID 3100 दिनेश कुमार शर्मा
RID 3110 पवन अग्रवाल
RID 3120 अनिल अग्रवाल
RID 3131 डॉ अनिल लालचंद परमार
RID 3132 रुक्मेश पन्नालालजी जकोटिया
RID 3141 संदीप अग्रवाला
RID 3142 कैलाश जेठानी
RID 3150 तल्ला राजा शेखर रेड्डी
RID 3160 वोम्मिना नागा सतीश बाबू
RID 3170 वेंकटेश एच देशपांडे
RID 3181 एन प्रकाश कारंथ
RID 3182 डॉ जयगौरी हदीगाल
RID 3190 जीतेंद्र अनेजा
RID 3201 राजमोहन नायर एस
RID 3203 बी इलंगकुमारन
RID 3204 बी वी प्रमोद नयनार
RID 3211 के बाबूमोन
RID 3212 मुत्तु वी आर
RID 3231 पलनी जे के एन
RID 3232 डॉ नंदकुमार एन
RID 3240 कृषाणवा पाबि
RID 3250 संजीव कुमार ठाकुर
RID 3261 शशांक रस्तोगी
RID 3262 प्रबुदत्त सुबुद्धि
RID 3291 अजॉय कुमार लॉ

प्रकाशक एवं मुद्रक पीटी प्रभाकर द्वारा रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014 से मुद्रित एवम दुगर टावर्स, तीसरा फ्लोर, 34, मार्शल रोड, एग्मोर, चेन्नई से प्रकाशित। संपादक : रशीदा भगत।

प्रकाशित सामग्री में अभिव्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के स्वतंत्र विचार हैं, और आवश्यक नहीं कि वे रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट (आरएनटी) के संपादक या रोटरी इंटरनेशनल के ट्रस्टी के विचारों से मेल खाते हों। संपादकीय या विज्ञापन सामग्री से होने वाली किसी भी क्षति के लिए आरएनटी जिम्मेदार नहीं होगा। लेख और रचनाओं का स्वागत है किन्तु उन्हें संपादित किया जा सकता है। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

निदेशकों

संयुक्त राष्ट्र की भूमिका

1945 से हर साल 24 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र दिवस मनाया जाता है ताकि विभिन्न देशों में मानवाधिकारों, विविधता और प्रगति को बढ़ावा दिया जा सके। इस दिन संयुक्त राष्ट्र हस्ताक्षरकर्ताओं ने इसके संस्थापक दस्तावेज - संयुक्त राष्ट्र चार्टर - पर हस्ताक्षर किए थे। जब संयुक्त राष्ट्र चार्टर लिखा गया था, तो सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में सलाहकार के रूप में सेवा देने के लिए आमंत्रित 42 संगठनों में से रोटरी एक थी।

संयुक्त राष्ट्र अफ्रीका और एशिया में प्रमुख उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता के प्रयासों का समर्थन करने से लेकर शीत युद्ध के दौरान अपना तर्क रखने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करने तक, एक सुरक्षित, समृद्ध और न्यायसंगत दुनिया सुनिश्चित करने; और अत्यधिक गरीबी और भूख को खत्म करने से लेकर जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौती को संबोधित करने तक सबसे आगे रहा है।

रोटरी और संयुक्त राष्ट्र शांति और महत्वपूर्ण मानवीय मुद्दों के लिए एक समान दृष्टिकोण साझा करते है। कई मौकों पर, संयुक्त राष्ट्र निकाय जैसे यूनिसेफ और रोटरी विकासशील देशों के बच्चों और परिवारों को जीवन रक्षक दवाएं, स्वच्छ पेयजल, शैक्षिक सामग्री प्रदान करने में भागीदार है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में रोटरी की सीट सीमाओं से परे सद्भावना और शांति को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों को दर्शाती है। रोटरी शिक्षा और मानवीय सहायता प्रदान करने वाला सबसे बड़ा गैर-सरकारी संगठन है।

संयुक्त राष्ट्र अपनी विशेष एजेंसियों के साथ विभिन्न विचारों वाले लोगों को बातचीत करने का एक मंच प्रदान करता है और बीच का रास्ता निकालने के तरीकों की तलाश करता है। कई देशों के सैन्य युद्ध विराम और संघर्ष विराम समझौतों को संयुक्त राष्ट्र शांतिदूतों द्वारा बरकरार रखा गया है। भले ही यह संगठन पिछले कुछ वर्षों में जलवायु संकट, खाद्य असुरक्षा, कोविड महामारी और यूक्रेन युद्ध जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, फिर भी इसकी प्रासंगिकता में बढ़ोत्तरी हुई है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत का वैश्विक योगदान दक्षिण एशिया और सभी शांतिप्रिय लोकतंत्रों के लिए गौरव का विषय रहा है। कोविड रिकवरी चरण के दौरान भारत ने दुनिया के लिए एक फार्मेसी के रूप में कार्य किया है।

भारत संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और सिद्धांतों का पुरजोर समर्थन करता है और भारत ने इसके चार्टर लक्ष्यों को लागू करने तथा इसके विशिष्ट कार्यक्रमों और एजेंसियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

चूंकि संयुक्त राष्ट्र के अस्तित्व को 77 वर्ष पूरे हो चुके है, हमारे पास उन सभी का जश्न मनाने का कारण मौजूद है जो हमारे राष्ट्रों के समुदाय ने हासिल किए है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह इस तेजी से बदलती दुनिया में प्रभावी और प्रासंगिक बना रहे।

महेश कोटबागी

रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

अपने साल से आगे देखें

मेरे पास मौजूद अनेक विशेषाधिकारों में से एक यह है कि मुझे हमारे क्षेत्र के अनेक रोटेरियनों से मिलने और बातचीत करने का अवसर प्राप्त है। उनसे हुई मेरी बातचीत के दौरान एक बात तो स्पष्ट है कि क्लब के नेताओं का दृष्टिकोण शायद ही कभी एक वर्ष से परे जाता हो।

हम उन परियोजनाओं पर ही ध्यान देते है जिनकी कल्पना और निष्पादन एक वर्ष में किया जा सकता है। यह हमारी सामूहिक क्षमता को कम करते हुए हमारे प्रभाव को भी सीमित करता है। पोलियो का उन्मूलन कभी संभव नहीं होता यदि यह एक अल्पकालिक उद्देश्य होता। हमारी धन संचयन की योजनाएं, परियोजना के विचार और उसके द्वारा लाए जाने वाला परिवर्तन यह सभी दीर्घकालिक सोचने की हमारी अनिच्छा की वजह से सीमित है। क्या हम कुछ योग्य बच्चों की स्कूल फीस का भुगतान करने से संतुष्ट है या हम ऐसे वंचित बच्चों के लिए स्कूल बनाने का सपना देख सकते है? क्या हम हृदय सर्जरी की लागत को वित्त पोषित करते रहेंगे या हम अस्पताल के वार्ड के निर्माण की योजना बना सकते है?

ये कुछ ऐसे विचार है जो मैं चाहता हूँ कि आप में से प्रत्येक को आएं। हमारी पूरी क्षमता का उचित उपयोग करने की कुंजी दीर्घकालिक सोचने की हमारी इच्छा में निहित है। हमारी अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने हमसे *रोटरी की कल्पना करने* का आग्रह किया। हम उन चीजों की कल्पना करते है जो वर्तमान में मौजूद नहीं हैं! कुछ अधिक प्रभावशाली कल्पना करने में सक्षम होने का मतलब है हमारी विचार प्रक्रिया में कुछ मौलिक परिवर्तन लाना। शुरू करने के लिए हमें एक साल से परे देखने की आवश्यकता है। दूसरा, हमारा दृष्टिकोण वर्तमान में हमारे पास मौजूद संसाधनों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। जैसा कि कहा जाता है, आप कारण ढूँढे, साधन खुद पीछे आएंगे। तीसरा, हमें अन्य संगठनों या फिर अन्य रोटरी क्लबों के साथ भी सहयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

आप कल्पना कर सकते है कि यदि हमारे क्षेत्र के सभी क्लब इसे अपना लेंगे तो हम एक संगठन के रूप कितना परिवर्तन ला सकते है। रोटरी की दृश्यता भी बहुत अधिक होगी, जिसके परिणामस्वरूप शायद अधिक लोग हमारे साथ जुड़ना चाहे। तो चलिए हम अपनी बाधाओं और आशंकाओं को छोड़कर कुछ बड़ा करने की कल्पना करना शुरू करें। अब दृढ़ होने का समय है। मुझे यकीन है कि हम कर सकते है।

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

न्यासी मंडल

ए एस वेंकटेश **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3232
डॉ महेश कोटबागी **रो ई निदेशक**	RID 3131
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
पांडुरंगा सेट्टी	RID 3190
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3232
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

रो ई निदेशक-निर्वाचित

अनिरुधा रॉय चौधरी	RID 3291
टी एन सुब्रमण्यन	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2022-23)

डॉ दुष्यंत चौधरी **अध्यक्ष,गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
वेंकटेश एच देशपांडे **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3170
डॉ एन नंदकुमार **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3232
दिनेश कुमार शर्मा **सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3100

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

अपने वादे को पूरा करें

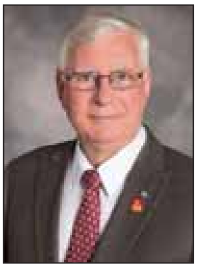

आपके रोटरी हीरो कौन है? मेरे तो क्लेम रेनौफ है जो 1978-79 में रोई अध्यक्ष थे। मैं सर क्लेम से कई मायनों में संबंधित हूँ, जिनकी मृत्यु 2020 में हुई थी। हमने एक ही पेशे और ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीयता एवं पोलियो उन्मूलन के लिए एक जैसे जुनून को साझा किया। वो क्लेम का नेतृत्व ही था जिसने पहले हमें प्रेरित किया और आज उनके द्वारा संगठित की गई वैश्विक साझेदारी के माध्यम से हम इतिहास में केवल दूसरी बार किसी मानव रोग को खत्म करने की कगार पर है।

रोटरी और उसके सहयोगियों ने जो हासिल किया है वो उल्लेखनीय है। हमने दुनिया भर में पोलियो के मामलों को 99.9 प्रतिशत तक कम करने में मदद की है, 122 देशों में 2 बिलियन से अधिक बच्चों का टीकाकरण किया है। पिछले साल ही 30 देशों के 370 मिलियन से अधिक बच्चों के टीकाकरण के लिए पोलियो टीके की एक अरब से अधिक खुराक का इस्तेमाल किया गया। जिसके परिणामस्वरूप पोलियो के मामलों में ऐतिहासिक कमी नज़र आ रही है। अगस्त 2020 में, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अफ्रीकी क्षेत्र को इस खतरनाक पोलियोवायरस से मुक्त प्रमाणित किया गया जो रोटरी सदस्यों के लिए एक अविश्वसनीय उपलब्धि और पोलियो उन्मूलन की राह पर एक बड़ा कदम है।

सक्रिय बने रहने के लिए रोटरी और उसके सहयोगी एक नया पोलियो वैक्सीन, नॉवेल ओरल पोलियो वैक्सीन टाइप 2 (nOPV2), का इस्तेमाल कर रहे है ताकि वैक्सीन-व्युत्पन्न पोलियोवायरस, जिसे पोलियोवायरस के एक वेरीअन्ट के नाम से भी जाना जाता है, के प्रकोप को प्रसारित होने से रोका जा सके क्योंकि यह अफ्रीका के साथ-साथ अफगानिस्तान और पाकिस्तान सहित एशिया और मध्य पूर्व के कई देशों के बच्चों के लिए खतरा बना हुआ है।

रोटरी हर सदस्य से कार्यवाही करने और इस ऐतिहासिक लड़ाई का हिस्सा बनने का आह्वान कर रही है। विश्व पोलियो दिवस, 24 अक्टूबर, को अपने क्लबों और समुदायों तक इस लड़ाई को ले जाएं। कार्यक्रमों और अनुदान संचयन समारोहों के माध्यम से पोलियो उन्मूलन के महत्व और इसके लिए रोटरी की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरूकता फैलाते रहें। यह न भूलें कि पोलियो उन्मूलन के लिए प्रति वर्ष 50 मिलियन डॉलर के लक्ष्य हेतु हमारे योगदान का मिलान हमारे उदार साझेदार, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, द्वारा 1 के लिए 2 से किया जाएगा।

सर क्लेम की तरह, हम सभी रोटरी के नायक हो सकते है, हम में से हर कोई हमारे संगठन की महान विरासत में एक भूमिका निभा रहा है। दान करके, जागरूकता फैलाकर या धन जुटाकर और व्यावहारिक सेवा प्रदान करके।

इयान एच एस राइसली

ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

भोजन महोत्सव

ई वी ए रेमिजान टोबा

खाने के स्टालों से लेकर फाइन डाइनिंग तक, मेलबर्न में पाक दृश्य इतना अंतरराष्ट्रीय है कि भूखे विजिटर्स के पास विकल्प में विकल्प हैं। केस इन पॉइंट:: कम से कम तीन जिले ऑस्ट्रेलियाई शहर के लिटिल साइगॉन होने का दावा करते हैं। इसलिए जब आप 2023 के रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन 27-31 मई के लिए आएं, तो अपनी भूख और रोमांच की भावनाओ को अपने साथ लाना न भूलें।

लिटिल साइगॉन के लिए किस तरह से पहुंचे? वह निर्भर करता है। आप रिचमंड, फुटस्क्रै या स्प्रिंगवेल जा सकते हैं। प्रत्येक वियतनामी समुदायों और व्यंजनों का केंद्र है, जो अनुभव करने के लिए रेस्तरां, बेकरी और किराने की दुकानों की एक भरमार प्रदान करता है। पारंपरिक वियतनामी व्यंजन और ऑस्ट्रेलियाई-प्रेरित फ्यूज़न के साथ, आप जो भी चुनते हैं, उसमें आप गलत नहीं हो सकते।

उत्तर में एक छोटी ट्राम की सवारी आपको ब्रंसविक के उपनगर में ले जाएगी, जो मेलबर्न क्षेत्र के मध्य पूर्वी भोजन दृश्य का प्रमुख केंद्र है। बाजारों, रेस्तरां, टेकआउट और बेकरी में प्रदर्शित लेबनान, तुर्की, सीरियाई और इराकी खाने के साथ, यह बहुसांस्कृतिक जिला विकल्पों की एक लम्बी श्रृंखला प्रदान करता है। कैफे कोको में बढ़िया कॉफी के साथ और या फिर आप धूम्रपान पसंद करते हैं, तो एक सुगंधित शीशें के साथ भी अपना भोजन करें।

इटालियन भोजन के लिए, लिगोन स्ट्रीट में घूमें। वहां, आपको मेलबर्न का लिटिल इटली मिलेगा, जहां शहर की कैफे कल्चर जीवंत हो जाता है। डिनर पर जाने से पहले 400 ग्रैडी में एस्प्रेसो के लिए रुकें। अपने पिज़्ज़ा के लिए प्रसिद्ध, इस रेस्तरां ने ओशिनिया में सर्वश्रेष्ठ पिज़्ज़ेरिया का खिताब लगातार तीन साल जिता है। अपने इटालियन एडवेंचर के लिए, क्षेत्र के कई डिजर्ट स्थलों में से कुछ ताज़ा जिलेटो के साथ अपनी रात को बेहतरीन बनाए।

अधिक जानने और पंजीकरण करने के लिए *convention.rotary.org* पर जाएँ।

Rotarians!

Visiting Chennai for business?

Looking for a compact meeting hall?

Use our air-conditioned Board Room with a seating capacity of 16 persons at the office of the Rotary News Trust.

Tariff:

₹2,500 for 2 hours
₹5,000 for 4 hours
₹1,000 for every additional hour

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Rotary at a glance

Rotary clubs	: 36,995
Rotaract clubs	: 11,449
Interact clubs	: 18,601
RCCs	: 12,480
Rotary members	: 1,192,376
Rotaract members	: 204,103
Interact members	: 427,823

As on September 18, 2022

Membership Summary

As on September 1, 2022 (Interim)

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians (%)	Rotaract Clubs	Rotaract Members	Interact Clubs	RCC
2981	135	6,685	8.02	63	290	55	242
2982	78	3,571	7.28	48	1,208	98	73
3000	132	5,379	9.57	99	1,548	308	214
3011	122	4,571	27.37	81	3,075	133	36
3012	149	3,727	23.18	72	1,450	85	61
3020	83	5,021	7.39	33	697	168	350
3030	98	5,269	15.13	126	2,343	358	380
3040	111	2,688	14.55	59	888	85	185
3053	74	2,956	17.32	36	522	54	128
3054	172	7,073	20.39	116	7,623	200	571
3060	105	4,938	14.95	65	2,403	80	152
3070	127	3,245	16.02	48	730	61	59
3080	107	4,311	13.43	148	2,457	209	117
3090	102	2,523	7.06	46	726	112	164
3100	100	2,132	9.85	14	83	28	151
3110	150	3,787	12.09	14	98	27	106
3120	90	3,675	16.30	66	602	36	55
3131	143	5,740	24.30	120	2,701	247	143
3132	90	3,639	12.92	35	612	126	167
3141	108	6,023	26.52	145	9,229	193	110
3142	103	3,885	21.13	85	2,132	145	87
3150	109	4,357	13.17	147	1,950	151	119
3160	78	2,727	9.64	30	320	20	82
3170	146	6,590	15.84	99	1,800	262	176
3181	87	3,584	9.79	35	449	199	116
3182	88	3,645	9.44	45	165	132	106
3190	165	6,807	19.23	207	9,974	274	72
3201	165	6,415	9.85	126	2,383	105	87
3203	94	5,013	8.18	74	838	235	38
3204	73	2,518	9.05	23	201	32	13
3211	155	5,174	8.68	8	102	29	133
3212	128	4,863	11.76	84	3,531	293	153
3231	95	3,520	8.21	34	299	99	417
3232	174	7,636	19.04	133	19,110	237	100
3240	110	3,734	17.19	68	1,487	413	226
3250	105	3,996	21.25	66	1,188	78	188
3261	93	3,316	19.18	17	50	25	44
3262	129	4,233	14.98	76	816	653	277
3291	159	4,087	24.74	137	2,039	106	680
India Total	**4,532**	**173,053**		**2,928**	**88,119**	**6,151**	**6,578**
3220	72	2,095	16.04	95	6,210	144	76
3271	142	3,118	17.70	152	2,438	192	25
3272	161	1,779	18.61	70	988	22	47
3281	309	8,661	18.67	279	2,678	156	207
3282	182	3,682	10.56	202	1,667	49	47
3292	155	5,962	18.00	176	5,130	142	131
S Asia Total	**5,553**	**198,350**		**3,902**	**107,230**	**6,856**	**7,111**

Source: RI South Asia Office

आखिर भारतीय महारानी को क्यों पसंद करते थे, ब्रिटिश राज से नफरत करने के बावजूद?

रशीदा भगत

जैसी अपेक्षा थी, महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय के निधन को अधिकांश भारतीयों ने भारी मन, गहरे दुःख और व्यक्तिगत क्षति की भावना के साथ आत्मसात किया था ... नुकसान जो एक युग के अवसान पर होता है। मुझे गलत ना समझें; ऐसा नहीं था कि पूरा देश सामूहिक शोक शोक की लहर में डूब गया था। सोशल मीडिया पर अपेक्षित कड़वी टिप्पणियां की गई थीं दुष्ट ब्रिटिश साम्राज्य के बारे में, जिसका प्रतिनिधित्व रानी करती थीं... जिसने लंबे दशकों तक भारत को गुलाम बना कर रखा और उपनिवेशित किया था, हमारा खजाना लूटा, विशेष रूप से कोहिनूर हीरा, और भारतीय पराधीनों को अनगिनत अत्याचार और कष्ट दिए।

और इसके बावजूद ब्रिटिश साम्राज्य की सौम्य शक्ति को उनकी शान, शिष्टता, बेजोड़ गरिमा और व्यक्तित्व, और इन सबसे बढ़कर, वो संक्रामक मुस्कान, जो उनकी बढ़ती उम्र के साथ जरा भी कम नहीं हुई, भारत सहित वैश्विक सम्मान मिला।

70 वर्षों तक चले इनके लंबे शासन में वो उपहास और आलोचना, चिल्लाहट, क्रोध और रोष का केंद्र बनीं, अन्य जगहों की अपेक्षा यूनाइटेड किंगडम में ज्यादा, हजारों ब्रिटिश नागरिक अक्सर पूछते थे कि ब्रिटिश राज घराने पर राजकोष इतना खर्च क्यों कर रहा था और उन के सदस्यों पर करदाताओं के पैसे से भोग विलास में डूबे रहने के अलावा और कुछ नहीं करने का आरोप लगाया।

सात दशकों तक जिस राजघराने का प्रतिनिधित्व एलिज़ाबेथ ने किया, उसके प्रति नफ़रत और नाराजगी, एक बार अपने चरम पर पहुँच गई थी जब 1997 में पेरिस में एक कार दुर्घटना में डायना की मौत हो गई थी। महारानी, उस समय स्कॉटलैंड में अपने बामोरल कैसल में थीं और डायना के साथ उनके संबंध अच्छे नहीं थे, उन्होंने कोई संकेत नहीं दिया कि डायना के अंतिम संस्कार के लिए लंदन लौटने का उनका कोई इरादा भी था। आखिरकार, चार्ल्स, तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स से तलाक के बाद, डायना अब राजसी परिवार की सदस्य तो रह नहीं गई थी। लेकिन केवल ब्रिटेन में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में राजकुमारी की मौत पर उमड़ी शोक की लहर से ब्रिटिश राजघराना स्तब्ध रह गया।

यह उनके लंबे शासनकाल का सबसे संकटपूर्ण समय रहा; जब वो वापस लंदन नहीं लौटी तो सार्वजनिक शोक के बवंडर से शाही परिवार के खिलाफ आरोप और पुख्ता हो गया,विशेष रूप से रानी के खिलाफ। अंततः, शायद मीडिया के दबाव के कारण, जिसने उन्हें एक बेमुरव्वत और बेरहम इंसान के रूप में चित्रित किया, जैसे कि *कहाँ है रानी, क्या उन्हें परवाह है,* आदि, या फिर संभव है बकिंघम पैलेस के बाहर गुलदस्ते के पहाड़ों की वजह से, रानी ने आने का फैसला कर लिया।

और बहस छिड़ गई इस बात पर कि रानी अपनी पूर्व बहू के अंतिम संस्कार में शामिल होंगी या नहीं, एलिज़ाबेथ की खासियत नज़र आई... कर्तव्य की भावना और उचित समय पर सही काम कैसे करें। यह माना जाता था कि अंततः डायना एक भावी ब्रिटिश राजा की मां होने के नाते वो महिला के लिए वो एक अंतिम निर्णायक थी, जिन्हें एक ब्रिटिश साम्राज्ञी के रूप में उनके कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति अत्यंत परिश्रम से प्रशिक्षित किया गया था।

रानी लंदन लौट आईं, अंतिम संस्कार से एक दिन पहले और बचाव में उनका मास्टरस्ट्रोक रहा, इस विषय पर एक लाइव प्रसारण, जो नाराज हुए ब्रिटिश नागरिकों के आक्रोश को ठण्डा करने में सफल रहा। उस सहज और मार्मिक भाषण में, उन्होंने कहा, ''इस तकलीफ को उन्होंने अत्यंत दुःख और कष्ट के साथ सहा है, जैसे हर कोई कोशिश करता है, अपने अपने तरीके से। नुकसान की भावना व्यक्त करना आसान नहीं है, क्योंकि शुरुआती झटका लगने के बाद अक्सर मिश्रित भावनाएं उमड़ती हैं – अविश्वास, असमंजस, क्रोध और जो पीछे रह गए हैं, उनकी चिंता। पिछले कुछ दिनों में हम सभी ने अलग अलग भावावेश को महसूस किया है। इसलिए आप की रानी और दादी के रूप में, मैं जो कुछ कह रही हूँ, अपने दिल से कह रही हूँ।'' इसके

महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय,
प्रिंस फिलिप के साथ।

बाद डायना को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई असाधारण और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के रूप में। महत्वपूर्ण ये था, उन्होंने कहा, कि इस पूरी त्रासदी से सबक लिया जाएगा।'' यह तरीका बेहतरीन रहा और शाही परिवार की साख को बट्टा नहीं लगा। उनकी छवि में इज़ाफ़ा हुआ जो अदम्य, दायित्व रहित, निर्मम व्यक्ति की छवि से कहीं दूर थी। उस भाषण से ये सन्देश गया, आखिरकार, वो भी इंसान थी।

महारानी एलिज़ाबेथ पहले इंग्लैंड, फिर ब्रिटेन, फिर यूनाइटेड किंगडम के राजाओं और रानियों की कतार में 42वीं थीं। वह 15 देशों की भी रानी और प्रमुख रहीं, फिजी, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से लेकर बहामास और कनाडा तक, जो पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा रहे थे। 70 वर्षों तक राष्ट्रमंडल का नेतृत्व करने का मतलब है 2.1 अरब लोगों की आबादी वाले 54 देशों का नेता होना,जो वैश्विक आबादी का एक तिहाई हिस्सा था। आंकड़े खुद ही अपनी कहानी कह रहे हैं। इन लोगों पर उनका कोई राजनीतिक अधिकार नहीं था, लेकिन फिर भी उन्हें एक जादुई व्यक्तित्व के साथ एक करिश्माई नेता के रूप में देखा जाता था, जो जहां भी जाती थी, लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती थी।

वास्तविक मायनों में अपने देश में भी उनके पास न तो राजनीतिक ताकत थी और ना ही निर्णय प्रभावित करने की शक्ति। लेकिन उनके पास सलाह देने का अधिकार था, और माना जाता है कि उन्होंने अपने शाही, संयमित अंदाज में एक पीएम को चेतावनी दी थी और यहां तक कि फटकार भी लगाईं थी। अपने शासनकाल के दौरान उन्होंने 15 ब्रिटिश प्रधानमंत्रियों को देखा और ''सलाह दी,'' नवीनतम लिज़ ट्रस थे।

कहा जाता है कि अपने पहले प्रधान मंत्री के साथ उनका एक ''अनोखा रिश्ता'' था, विंस्टन चर्चिल, जो भारत में जरा भी लोकप्रिय नहीं है, जिन्होंने भारत, विशेष रूप से स्वतंत्रता पूर्व भारत में महात्मा गांधी के विरुद्ध तीखी टिप्पणी की थी। उनका निर्लज्ज वाक्य बाण याद आता है, जब उन्हें 1943 में पड़े बंगाल के अकाल के बारे में बताया गया था, जिसमें भूख और कुपोषण से संबंधित बीमारियों से करीब 30 लाख भारतीय काल का ग्रास बन गए थे ? उन्होंने चिढ कर कहा थ: ''अभी तक गांधी क्यों नहीं मरे?''

ग्रीस के राजकुमार फिलिप से उनकी शादी, ग्रीस के अपदस्थ राजा के दरिद्र भतीजे की कहानी दिलचस्प है, और साबित करती है कि युवा एलिज़ाबेथ का ये निर्णय अपना था और कोई शाही बाध्यता या जबरदस्ती नहीं थी। *द गार्डीअन* में एक टिप्पणी है: ''एलिज़ाबेथ से पांच साल बड़े, सुंदर और शाही परिवार के, फिलिप उन शीर्ष दर्जन योग्य

संभावितों की सूची में नहीं थे और एलिज़ाबेथ के माता-पिता ने उन्हें उससे दूर करने का प्रयास किया था। यहां तक कि महल के नौकर भी उन का उपहास करते थे, खिल्ली उड़ाया करते थे जब वह अपने जूतों में छेद, अतिरिक्त कपड़ों की कमी और अस्वस्थ रिश्तेदारों के कारण सप्ताहांत में वहां रहने आये थे - उनकी बड़ी बहनों ने जर्मन नाजियों से शादी की थी, हालांकि फिलिप ने खुद रॉयल नेवी में डिस्टिंक्शन के साथ सेवाएं दी थीं।'' लेकिन वो अड़ी रही, उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया, और शेष इतिहास सामने है।

मज़े की बात यह है कि अपने शासनकाल में एलिज़ाबेथ 14 अमेरिकी राष्ट्रपतियों को देख चुकी थीं - ट्रूमैन से जो बिडेन तक, और लिंडन जॉनसन को छोड़कर, वो सभी से मुलाक़ात कर चुकी हैं। 96 वर्ष की आयु में जब उनका निधन हुआ, तो दुनिया के सभी हिस्सों में अवर्णित लेकिन निर्विवाद इस सौम्य शक्ति के सम्मान में अमेरिकी सरकारी भवनों पर झंडे आधे झुके हुए थे। यह श्रद्धांजलि उनकी अद्वितीय

चित्र: ट्विटर

ऊपर से दक्षिणावर्त:

- भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ महारानी एलिज़ाबेथ।
- (दाएं से) पीएम जवाहरलाल नेहरू, विजयलक्ष्मी पंडित, प्रिंस फिलिप, राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद और एस राधाकृष्णन।
- राजकुमारी डायना के साथ।
- बराक और मिशेल ओबामा के साथ।
- बिल क्लिंटन के साथ।

गरिमा, शान और शिष्टता को है कि डेमोक्रेट और रिपब्लिकन, जो अमेरिका में एक-दूसरे की टांग खींचने के लिए तैयार रहते हैं, दोनों ही ब्रिटिश रानी के प्रशंसक थे।

अमेरिकियों द्वारा किसी सम्राट का सम्मान ज़रा हास्यास्पद लगता है, लेकिन अगर उन्होंने कभी किसी सम्राट का सम्मान किया है, तो वह महारानी एलिज़ाबेथ ही थीं। ये अति विशिष्ट और सम्मानित हस्तियों के संस्मरणों से पता चलता है, उनके पद के अनुसार सभी प्रोटोकॉल की पालना होने के बावजूद, मिशेल लिखती हैं कि रानी एक कठोर और तुनकमिज़ाज नहीं थीं। अपने संस्मरण में, मिशेल कहती हैं, रानी से मिलने के दौरान, उन्होंने रानी की पीठ पर अपना हाथ रखकर बहुत बड़ी गलती की थी; प्रोटोकॉल की मांग है कि रानी को नहीं छूना चाहिए। उन्हें सिर्फ बाद में पता चला था कि उनसे एक बहुत बड़ी अशिष्टता हुई है, लेकिन रानी इसके साथ भी सहज रहीं , क्योंकि जब मैंने उन्हें छुआ तो उन्होंने दस्ताने पहने हाथ से मेरी पीठ को हल्के से दबाते हुए, मुझे अपने करीब खींच लिया था।

बिल क्लिंटन ने सही कहा था : हर मेजेस्टी ने मुझे एक ऐसे शख्स के रूप में प्रभावित किया, जिसमें एक सफल राजनेता या राजनयिक बनने के सभी गुण थे और बन सकती थीं। जैसा भी था,उन्हें दोनों ही होना था, बिल्कुल भी प्रतीत हुए बिना। सबसे अधिक स्थानों की यात्रा करने वाले लोगों में से एक थीं वह, उनके कर्तव्यों की वजह से उनका राष्ट्रमंडल और अन्य देशों में कई बार जाना हुआ। लेकिन उन्होंने कभी राजनीति नहीं की, सार्वजनिक रूप से क्रोध नहीं किया न ही दिखाया नाही कोई विवादास्पद टिप्पणी की। उनके बयान संतुलित होते थे और उसके शब्द नपे तुले।

जेल से रिहा होने के बाद के वर्षों में नेल्सन मंडेला से उनके सम्बन्ध बहुत प्रगाढ़ रहे और वो उन्हें पहले नाम से बुलाते थे। फोन पर वे अक्सर बात किया करते थे, आपसी सम्मान और स्नेह रखते थे और उनका उनके लिए एक विशेष नाम था - मोतलेपुला - जिसका अर्थ है 'बारिश के साथ आना', जो निर्दिष्ट करता है, मूसलाधार बारिश जो वह अपने साथ लाई थी, दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर लंबे समय के सूखे के बाद।

भारत और महारानी की बात करें, तो ये सवाल मुंह बाए खड़ा है कि अगर ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों को इतने लंबे वर्षों तक पीड़ित किया गया था और उसके शासकों द्वारा देश को गरीब बना दिया गया था, और जो भारत से इतनी बड़ी संपत्ति लूट कर ले गए, तो यहाँ महारानी एलिज़ाबेथ से नफरत क्यों नहीं उपजी? यह एक अत्यंत जटिल प्रश्न है जिसके कई उत्तर हैं। पहला, एलिज़ाबेथ 1952 में सिंहासन पर तब बैठी जब उनके पिता किंग जॉर्ज तख्त की मृत्यु हो गई थी और उनका राज्याभिषेक 1953 में ही हुआ था। उनके शासनकाल के पहले से ही भारत एक स्वतंत्र देश था।

इसके अलावा, जब तक भारत का उपनिवेशीकरण और शोषण हुआ, तब अंग्रेजी राजशाही नाम मात्र की शासक की बजाये एक प्रमुख शक्ति बनने की राह पर अग्रसर थी। वो शक्तिशाली ईस्ट इंडिया कंपनी थी, और राजनेताओं और शक्तिशाली अधिकारियों का एक विशाल नेटवर्क था, जिन्होंने दुनिया भर में ब्रिटिश उपनिवेशों के मुद्रीकरण का कार्य निर्धारित किया, और भारत उनकी सबसे प्रिय ''विजय'' में से एक था।

लोकप्रिय लेखक रॉबिन आर्टिसन ने रानी के निधन के बाद एक पोस्ट में इसे अच्छी तरह से व्यक्त किया, उन्होंने लिखा: ''मैं यूके के बाहर अपने दोस्तों के लिए लिखता हूं ... बहुत से लोग पिछले 400 वर्षों की औपनिवेशिक बुराई महारानी एलिज़ाबेथ, या उनके बेटे (अब राजा) चार्ल्स पर डालने का इरादा रखते हैं। मुझे नहीं लगता कि यह न्यायोचित है और ना ही ऐतिहासिक रूप से सही है। आपकी दुश्मनी - जिस चीज ने वास्तव में लोगों को औपनिवेशिक बनाया या उनकी हत्या की, या शोषण किया- वो है पूंजीवाद। और पूंजी कोई एक परिवार नहीं है, यहां तक कि परिवारों का समूह भी नहीं ; यह तो एक ऐसी भयानक बुराई है जो जीवन के कोने-कोने में फैल जाती है। शायद सदियों की बुराई के लिए दोषी ठहराया गया व्यक्ति चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता (ना ही इसे पलट सकता है) यह राज्य प्रमुख या नाममात्र का

नेल्सन मंडेला के साथ।

शासक बनने के साथ आने वाले खतरे में से एक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, हम पूंजी के वास्तविक सत्ता के दलालों को कुछ नहीं कहते और सारा दोष राष्ट्रपति पर मढ़ देते हैं, और सच तो ये है, सामरिक परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए उनकी शक्ति काफी सीमित है। शायद यह इंसान की फितरत ही है कि; हम नफरत और दोषारोपण के लिए एक चेहरा और एक नाम चाहते हैं।'' कितना परिचित सा लगता है, है ना?

इस तरह के दिलचस्प ऐतिहासिक दृष्टिकोण हमें याद दिलाते हैं कि जिसने किसी राष्ट्र का उपनिवेश किया था या किसी देश को युद्ध के लिए ललकारा, वो एलिज़ाबेथ नहीं थी। ये उनके देश के प्रधानमंत्रियों और राजनेताओं ने किया था। उन्होंने केवल वही भूमिका निभाई है जो उन्हें विरासत में मिली थी, वह एक प्रतीकात्मक और औपचारिक नाम मात्र की थी ... अतुलनीय शिष्टता, गरिमा और लालित्य के साथ। उनमें अहंकार या घमंड का कोई निशान नहीं था जैसी किसी शक्तिशाली साम्राज्ञी में हो सकती थी।

और सारे कोलाहल, घोटालों और उथल-पुथल के बीच, शाही परिवार जिसकी अध्यक्षता करते हुए अपने शासनकाल के वर्षों में उन्होंने यह सब सहा। उन्हें कई विफल विवाहों का साक्षी होना पड़ा था - चार्ल्स, ऐनी और एंड्रयू के - और डायना के कोप का भाजन जिसने मीडिया को दिए साक्षात्कार में शाही रहस्यों को उजागर किया था जिसके चलते, ब्रिटिश राजशाही को पहले से कहीं ज़्यादा जिल्लत का सामना करना पड़ा था। ये शाही धारावाहिक कार्यक्रम पिछले कुछ वर्षों तक जारी रहा, एंड्रयू जिसे उनके सबसे चहेते बेटे के रूप में माना जाता था, बचपन की एक अमेरिकी मित्र से दोस्ती के लिए उसे अपने शाही कर्तव्यों को त्यागने के लिए मजबूर किया गया था और अंतिम, लेकिन कमतर ये भी नहीं है, अमेरिकी अभिनेत्री मेघन मार्कल से शादी के बाद, प्रिंस हैरी ने शाही परिवार के दायित्वों से अपने आप को मुक्त कर लिया।

लेकिन एलिज़ाबेथ दृढ़ता से आगे बढ़ती रही, यहां तक कि उनकी उम्र के बढ़ते वर्षों ने नियमित सार्वजनिक व्यस्तताओं से अवकाश लेने के लिए मजबूर कर दिया। अपने प्लेटिनम जुबली समारोह के दौरान, वह बकिंघम पैलेस की बालकनी पर केवल दो बार ही नज़र आ सकीं, वो भी थोड़ी देर के लिए।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और राष्ट्रपति ज़ैल सिंह के साथ।

यह उनके परिश्रम और कर्तव्य की भावना, उनकी कृपा और आकर्षण, और उनकी सौम्य शक्ति थी, जो एक विशिष्ट मुस्कान, लालित्य और करिश्मे के एक विशेष ब्रांड, अतुलनीय आचरण और समभाव से ही आ सकती है, जिसने अधिकांश भारतीयों को कम से कम, ब्रिटिश राज और उसके शोषण की भयावह यादों को, कुछ समय के लिए भुला दिया और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी श्रद्धांजलि में उन्हें हमारे समय की पूर्ण निष्ठावान सम्बोधित किया, उन्होंने सार्वजनिक जीवन में पूर्ण गरिमा और शालीनता का परिचय दिया।

यह चमत्कार ही है कि मृत्योपरान्त भी वह अधिकांश ब्रिटिश लोगों के दिलों में अपने प्रति प्रेम और सम्मान बनाये रखने में सफल रही, वही लोग जिन्होंने कभी निर्ममता से शाही परिवार पर फब्तियां कसी थीं और उनका मजाक उड़ाया था। महारानी के अंतिम संस्कार के दौरान उमड़ा जन भावनाओं का सैलाब चौंका देने वाला था, 1965 में चर्चिल की मृत्यु के बाद पहली बार आयोजित राजकीय अंत्येष्टि समारोह, इसमें शामिल होने वाले करीब 400 दुनिया के नेता भी आश्चर्यचकित रह गए थे। हालाँकि उनकी मृत्यु ने ब्रिटेन के काले औपनिवेशिक अतीत को फिर से कुरेद दिया था, लेकिन एक बीते युग के पटाक्षेप के रूप में इस पर शोक प्रकट किया गया।

ब्रिटेन और पूरी दुनिया में उमड़ी भारी नुकसान और दुख की भावना, बहुत बड़ी श्रद्धांजलि थी, रानी की कर्तव्य निष्ठा और कर्मठता को, उनकी गरिमा और आकर्षण को, और इनकी नरम शक्ति को, जो ख़ास मुस्कुराहट में झलकती थी, उनकी शिष्टता और आकर्षक व्यक्तित्व की विशिष्ट छाप। जैसा संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुएटेरेस ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा, रानी एलिज़ाबेथ विश्व मंच का वो स्तंभ थीं जिनके समकक्ष कोई शख्सियत नहीं थी। एक विश्वस्त प्रेरक उपस्थिति, दशकों से अक्सर उद्विग्न और अराजक रहे इतिहास में वो स्थायित्व का एक लंगर थी।

वो एलिज़ाबेथ का रहस्यमय तिलिस्म ही था जिसने अधिकांश भारतीयों को, कुछ देर के लिए ही सही, ब्रिटिश राज की भयावह यादों को भुला दिया और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी सहजता से इस में शामिल हो गए, जब उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि में उन्हें हमारे समय की दिग्गज कह कर सम्बोधित किया।

और शालीनता का परिचय दिया और जब भारत सरकार ने रानी के लिए शोक दिवस की घोषणा की तो किसी के माथे पर शिकन नहीं आई।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

ब्रिटिश राजघराने का रोटरी सम्बन्ध

टीम रोटरी न्यूज़

जबकि दुनिया का ध्यान महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय के निधन और प्रिंस चार्ल्स के राज्याभिषेक पर केंद्रित है, ब्रिटिश शाही परिवार के रोटरी के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध सुर्खियों में नज़र आये। किंग चार्ल्स तृतीय रोटरी क्लब बेंकोरी टर्नों, रो ई मंडल 1010, 1992 से स्कॉटलैंड के मानद सदस्य हैं और इसी जून में, उन्हें निवर्तमान रो इ अध्यक्ष शेखर मेहता द्वारा रवांडा में, रोटरी अवार्ड ऑफ़ ऑनर से सम्मानित किया गया था, स्थिरता और जैव विविधता के प्रति समर्पण के लिए।

2003 में दिल्ली के पास एक पोलियो NID में किंग चार्ल्स तृतीय।

चार्ल्स वैश्विक स्तर पर चल रहे पोलियो उन्मूलन प्रयासों के भी प्रतिबद्ध पक्षधर रहे हैं। 2003 में, उन्होंने दिल्ली के नज़दीक एक गांव में पोलियो एनआईडी कार्यक्रम में भाग लिया था। 2013 में, भारत की एक अन्य यात्रा पर, 'एंड पोलियो नाउ' स्कार्फ पहनकर, उन्होंने इस देश में पोलियो उन्मूलन में किये जा रहे रोटरी के जबरदस्त प्रयासों की प्रशंसा की। 2018 में आयोजित कॉमनवेल्थ लीडर्स समिट में उन्होंने रोटरी द्वारा किये गए पोलियो उन्मूलन के प्रयासों की सराहना की थी।

उनकी बहन प्रिंसेस ऐन ने पोलियो विषय पर टोरंटो कन्वेंशन को संबोधित किया था। वह रोटरी क्लब एल्गिन, स्कॉटलैंड की मानद सदस्य हैं। दिवंगत ड्यूक ऑफ़ एडिनबर्ग, प्रिंस फिलिप रोटरी क्लब ऑफ़ लंदन, एडिनबर्ग, किंग्स लिन, विंडसर सेंट जॉर्ज और विंडसर और ईटन के मानद सदस्य थे। 2013 में रोटरी इंटरनेशनल ने रानी को उनके राज्याभिषेक की 60वीं वर्षगांठ पर बकिंघम पैलेस में रोटरी अवार्ड ऑफ़ ऑनर प्रदान किया था। वह रोटरी के पोलियो उन्मूलन और मानवीय उद्देश्यों की समर्थक थीं।

पूर्व रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और राशि, किगाली, रवांडा में राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों की बैठक (CHOGM) में किंग चार्ल्स को एक रोटरी बैनर प्रस्तुत करते हुए।

रानी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने महारानी एलिज़ाबेथ के ''मानवीय कल्याण के प्रति समर्पण और शांति और पर्यावरण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की सराहना की (जिसने) दुनिया भर में रोटरी सदस्यों को अत्यंत गहराई से प्रेरित किया है, विशेषकर राष्ट्रमंडल देशों में।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी रेन रन ग्रीवा संबंधित कैंसर का पता लगाने का समर्थन करता है

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब पोरवोरिम, रो ई मंडल 3170, के सचिव निखिल शाह कहते है कि रोटरी रेन रन गोवा का एक बहुप्रतीक्षित कार्यक्रम है और देश के प्रीमियम मैराथनों में से एक है जिसमें दुनिया भर के धावक आते है। अगस्त में वार्षिक रूप से क्लब द्वारा आयोजित इस मानसून मैराथन के 10वें संस्करण में 3,000 धावकों ने भाग लिया। क्लब ने गोवा पर्यटन, भारतीय सेना और भारतीय नौसेना के बेस सपोर्ट फैसिलिटी (गोवा) के साथ साझेदारी की। कार्यक्रम अध्यक्ष अविनाश परमार कहते है, ''इस कार्यक्रम के लिए सेना और नौसेना का हमारे साथ होना हमारे लिए गर्व का क्षण था। उनके उत्कृष्ट लॉजिस्टिक समाधानों ने इसकी सफलता में बहुत मदद की।'' गोवा पर्यटन विभाग के साथ साझेदारी करना रोटरी के लिए एक बड़ा अवसर था।

''इस विशेष कार्यक्रम की मेजबानी करने वाले गोवा जैसे पर्यटन स्थल कुछ खास है। गैर-धावकों सहित सभी ने धावकों का उत्साहवर्धन किया और इससे रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने में मदद मिली।'' प्रत्येक वर्ष पंजीकरण से जुटाए गए धन का उपयोग क्लब द्वारा पोवोरिम में सामुदायिक

विकास परियोजनाओं के लिए किया जाता है। शाह ने आगे कहा कि इस साल की दौड़ महिलाओं में ग्रीवा संबंधित कैंसर और स्तन कैंसर का शुरुआत में पता लगाने और उनके इलाज का समर्थन करने के लिए आयोजित की गई थी। ''इस आयोजन से बची आय का उपयोग हमारी प्रमुख पहल - प्रकाश कैंसर सहायता परियोजना (PCAP) को विकसित करने के लिए किया जाएगा जो महिलाओं के स्वास्थ्य, कैंसर जागरूकता और उनका पता लगाने के लिए काम करता है। अब तक केंद्र सरकार ने 160 से अधिक परामर्श शिविर आयोजित किए है और 3,500 महिलाओं ने PAP स्मीयर टेस्ट कराया है।'' यह महिलाओं के लिए सामान्य स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता पर परामर्श प्रदान करने के अलावा उपचार के माध्यम से 20 कैंसर रोगियों की मदद करता है।

क्लब ने टाइमिंग टेक्नोलॉजीज इंडिया के साथ हाथ मिलाया है जो RFID (रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन) तकनीक का इस्तेमाल करके धावकों के दौड़ने के समय को ट्रैक करता है। शाह समझाते है, ''उन्होंने प्रतिभागियों के बिब्स में सिस्टम इंफ्रास्ट्रक्चर और टाइमिंग पॉइंट, समन्वित लॉजिस्टिक्स और एम्बेडेड टाइमिंग चिप्स स्थापित किए।''

रोटरी रेन रन में तीन श्रेणियां थी, 5, 10 और 21 किमी (हाफ मैराथन)। 10 किमी और हाफ मैराथन नियतकालिक कार्यक्रम थे। 5 किमी, 10 किमी और 21 किमी दौड़ के प्रतिभागियों को पदक और टी-शर्ट देकर सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागियों को नाश्ता और पानी उपलब्ध कराया गया। इस साल दौड़ के ब्रांड एंबेसडर, मुंबई के पैरा-एथलीट प्रदीप कुंभार और पणजी की कैंसर सर्वाइवर मारियोला मथियास थे। इस मैराथन को गोवा खेल प्राधिकरण के बम्बोलिम स्थित एथलेटिक स्टेडियम में हरी झंडी दिखाकर शुरू किया गया।■

पुणे के रोटेरियनों ने पिंगोरी गांव की तस्वीर बदल दी

रशीदा भगत

पिंगोरी, पुणे से करीब 66 किमी दूर, पश्चिमी घाट में सह्याद्री पर्वत श्रृंखला में बसा हुआ एक छोटा सा गाँव, वाघेश्वरी मंदिर और अपने समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। वर्षा ऋतु में, इस गांव की प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है, जो पर्वत श्रृंखला के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है, पूरा क्षेत्र हरियाली से आच्छादित हो जाता है। लेकिन वर्षा का वार्षिक औसत 1,300 ग्रामीणों की खेती के लिए काफी नहीं पड़ता।

यहां का मुख्य व्यवसाय खेती है और रो ई मंडल 3131 से रोटरी क्लब औंध, पुणे के पूर्व अध्यक्ष बाबा शिंदे के अनुसार, जिन्होंने इस गांव और इसके जल निकायों को गोद लिया और चमत्कारिक रूप से यहां की काया पलट दी, स्थानीय किसानों के पास बमुश्किल 1 या 2 एकड़ जमीन है। पानी की कमी के चलते

(बाएं से) *रोटरी क्लब औंध और रोटरी क्लब पिंपरी एलीट से अजय देशकर, सुखानंद जोशी, दत्ता देशकर, भावना उलंगवार, विनय कानिटकर, सदानंद नायक, वसंत मलुंजकर और बाबा शिंदे, पिंगोरी में जय गणेश झील के किनारे।*

किसान सिर्फ बाजरा, ज्वार और आम सब्जियां ही उगा रहे थे, क्योंकि जितना पानी उपलब्ध होता वो धान की खेती के लिए काफी नहीं पड़ता था। और यहां गेहूं बहुत कम उगाया जाता है।

वर्ष 2014 में, पानी की विकट स्थिति से जूझ रहे पिंगोरी गांव को रोटरी क्लब औंध के सदस्यों की जानकारी में लाया गया था। ''ग्रामीणों के साथ-साथ उनके दुधारू पशुओं दोनों के लिए पीने के पानी की भारी किल्लत थी, एक गंभीर स्थिति, क्योंकि दूध ग्रामीणों के लिए आय और जीविका का मुख्य स्रोत है। हर साल, फरवरी के बाद सिंचाई के लिए पानी की कमी हो जाती थी क्योंकि इस गाँव में पानी का स्तर कम होने के कारण इसके कुएँ और *ओढ़े* सूख जाते थे, जहाँ केवल 400 मिमी की वार्षिक वर्षा होती है, जो गाँव की खेती की जरूरतों को पूरा करने के लिए नाकाफी था। किसान मुश्किल से एक ही फसल ले पाते थे, और गायों और भैंसों के लिए चरने वाली घास भी नहीं उग सकती थी, जो गांव में हो रहे दूध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती थी,'' शिंदे कहते हैं।

ग्रामीणों के लिए स्वास्थ्य चिकित्सा की कोई सुविधा नहीं थी और स्थानीय स्कूल में शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर करने के लिए छात्रों के लिए कंप्यूटर भी नहीं थे। स्कूल आने के लिए लड़कियों सहित छात्रों को 3 से 5 किमी तक का लंबा सफर तय करना पड़ता था। आय का स्तर बहुत कम होने के कारण, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर तो ग्रामीण शायद ही ध्यान देते होंगे।

वर्ष 2014 में रोटरी क्लब औंध ने अपने हैप्पी विलेज कार्यक्रम के तहत पिंगोरी गांव को गोद लेने का फैसला किया, सबसे पहले पानी की स्थिति सुधारने पर ध्यान केंद्रित किया। क्लब ने मीना बोराटे की मदद ली, जो उस समय रो ई मंडल 3131 की WASH टीम का नेतृत्व कर रही थीं। रोटरी क्लब औंध के सदस्य दत्ता देशकर की सहायता से, दार्जिबुवाचा नाला पर क्षतिग्रस्त चेक डैम का पुनर्निर्माण करने का निर्णय लिया गया। क्लब के अध्यक्ष प्रवीण लाखे के नेतृत्व में सदस्यों ने पिंगोरी ग्राम पंचायत के साथ मिलकर इस परियोजना के लिए ₹5.5 लाख की राशि एकत्र की। बांध के पुनर्निर्माण के बाद, यह पहली बारिश में ही लगभग 30 लाख लीटर पानी का भंडारण हो सकता था। इस पहल की बदौलत आसपास के खेतों के कई कुओं को रिचार्ज किया गया और पूरे क्षेत्र में पानी का स्तर काफी ऊपर आ गया। इससे आसपास के क्षेत्रों में किसानों को दूसरी या रबी की फसल उगाने में भी मदद मिली।

अपनी पहली जल परियोजना की सफलता का मीठा स्वाद चखने के बाद, 2015-16 में क्लब के उत्साहित सदस्यों ने एक वृक्षारोपण अभियान चलाया और अगले वर्ष, इस पहाड़ी

क्लब के पहले वैश्विक अनुदान के माध्यम से **₹78 लाख** की लागत से **2.5 करोड़** लीटर और **4 करोड़** लीटर पानी के भंडारण के लिए दो विशाल पानी की टंकियां बनाई गईं।

महिला रोटेरियनों के साथ रोटरी क्लब औंध की पूर्व अध्यक्ष भावन उलंगवार।

रोटरी क्लब औंध के पूर्व अध्यक्ष रवि उलंगवार, दुकान के प्रबंधक रोहित शिंदे, भावना उलंगवार और हेमंत चौधरी।

इलाके में पानी के बहाव को रोकने के लिए ढलानों के बराबर - बराबर खाइयों का निर्माण करने की चुनौती स्वीकार की। ताकि व्यर्थ बह जाने के बजाये पानी जमीन के भीतर जाए।

रोटरी क्लब औंध के पूर्व अध्यक्ष रवींद्र उलंगवार बताते हैं, ''चूंकि पिंगोरी गांव पहाड़ी की विशाल ढलानों पर स्थित है, यहां बारिश का पानी बह जाता है, और जमीन में नहीं जा पाता। इसलिए हमने पिंगोरी की तलहटी में लगातार काउंटर खाइयों का निर्माण करके इस पानी को जमीन में भेजने के लिए इस परियोजना की शुरुआत की थी।''

2016-17 के दौरान, क्लब ने अपनी पहली वैश्विक अनुदान परियोजना रोटरी क्लब पुणे हिल्स की अगुआई में, रोटरी क्लब पुणे कोथरुड और महाड जैसे अन्य सहयोगी क्लबों के साथ क्रियान्वितकी थी। इस अनूठी जीजी परियोजना के तहत, 4 करोड़ लीटर और 2.5 करोड़ लीटर जल भंडारण क्षमता वाले दो विशाल जल भंडारण टैंक निर्मित किए गए थे। रोटरी क्लब पुणे हिल्स की सदस्य बोराटे ने अपनी मित्र मानसी नाडकर्णी (मूल रूप से पुणे की रहने वाली) की सहायता से इस जीजी के लिए, अमरीका स्थित रो ई मंडल 8000 के रोटरी क्लब मस्कटाइन को एक अंतरराष्ट्रीय भागीदार के रूप में लाये। रोटरी क्लब औंध ने उस साल क्लब की पहली महिला अध्यक्ष फोरा दीवानजी के नेतृत्व में यह प्रोजेक्ट किया था।

इस अनूठी परियोजना की लागत ₹78 लाख आई थी, जिसमें एनजीओ जनहित नगरी सहकारी पतसंस्था ने ₹17 लाख की राशि का योगदान दिया। पिंगोरी में सभी जल परियोजनाओं को करते हुए लगातार जिस चुनौती को ध्यान में रखना था वो ये कि पानी की अधिक से अधिक मात्रा को संरक्षित करने और किसी भी तरह से इसके व्यर्थ बह जाने को रोकने की थी। ''इस गांव में हमें एक स्थायी जल स्रोत विकसित करने की की आवश्यकता लगी। इसलिए इन दो पानी की टंकियों के निर्माण के दौरान, पानी का रिसाव रोकने के लिए टैंक की निचली सतह को विशेष उपचार दिया गया था। रोटरी क्लब पुणे हिलसाइड के सदस्य उमेश

नाइक ने इन दोनों टैंकों को जलरोधी बनाने और पानी के नुकसान को रोकने के लिए वाटर प्रूफिंग में अपनी विशेषज्ञता का इस्तेमाल किया। वे कहते हैं कि ये पानी की टंकियां गांव की जीवन रेखा साबित हुईं और अब वर्ष पर्यन्त पीने और सिंचाई दोनों के लिए पानी उपलब्ध कराती हैं।

पुणे में दगडुसेठ हलवाई मंदिर ने भी गणेशसागर झील की तलहटी में जमी काई और गाद निकालने के लिए पिंगोरी गाँव का सहयोग किया, जिससे लाखों लीटर वर्षा जल को संरक्षित करने में भी सहायता मिली है। अब पिंगोरी के किसान रबी सीजन के दौरान दूसरी फसल आराम से उगा सकते थे जिससे उनकी कृषि आय में खासी वृद्धि हुई।

आगामी वर्षों में, रोटरी क्लब औंध ने सघन स्वच्छता अभियान चलाया और साथ ही एक मेगा वृक्षारोपण अभियान के तहत 5,000 से अधिक पेड़ लगाये। महिलाओं में कुपोषण, विटामिन और आयरन की कमी दूर करने के लिए उन्होंने ग्रामीणों के लिए चिकित्सा जांच शिविर भी आयोजित किए। उस समय कई किसानों में मोतियाबिंद का और उन्हें दांतों की समस्या पता चला था। वर्तमान में गांव में एक स्वास्थ्य केंद्र खोल दिया गया है और वहां बुनियादी स्वास्थ्य समस्याओं का निदान किया जाता है।

15,000
पेड़ लगाने का विशेष अभियान

पौधारोपण करते क्लब के सदस्य।

अब रोटरियनों के लिए समय था वाघेश्वरी स्कूल में पढ़ने वाली छात्राओं पर ध्यान देने का जिन्हें स्कूल जाने के लिए 3 से 5 किमी के बीच पैदल चलना पड़ता था। यह स्वाभाविक रूप से छात्राओं में अनुपस्थिति की उच्च दर का कारक था। इसलिए क्लब ने लड़कियों को साइकिल देना शुरू किया; यह पहल हेमंत चौधरी (2014-15) की अध्यक्षता में शुरू हुई और अगले वर्ष उनके उत्तराधिकारी उलंगवार ने इसे जारी रखा। अब तक लड़कियों को लगभग 300 साइकिलें दी जा चुकी हैं और इससे उनकी प्रतिधारण दर में सुधार हुआ है। जब लाभार्थी पास आउट होते हैं, तो साइकिलें उनसे जूनियर छात्रों को दे दी जाती हैं, ताकि अधिक से अधिक संख्या में लड़कियों को शिक्षा मिल सके। रोटरेक्ट क्लब ऑफ औंध ने भी छात्राओं को साइकिलें दान की हैं।

गाँव में पर्याप्त जल भंडार उपलब्ध हो जाने के बाद, उस पानी के विवेकपूर्ण और इष्टतम उपयोग भी आश्वस्त किया जाना चाहिए ताकि इसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम मिल सकें। 2017-18 में बाबा शिंदे, जो मूल रूप से पिंगोरी गांव के रहने वाले हैं, क्लब के अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में, पिंगोरी को और अधिक हरा-भरा करने में मदद मिली और ग्रामीणों की जीवन शैली में सुधार हुआ। रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी के संदेश सावंत की मदद से, क्लब ने संयुक्त रूप से एक ड्रिप सिंचाई प्रणाली परियोजना शुरू की गई, जो कोलोराडो, यूएस, रो ई मंडल 5440 से रोटरी क्लब फोर्ट कॉलिन्स ब्रेकफास्ट के साथ अंतरराष्ट्रीय भागीदार के रूप में, वैश्विक अनुदान के माध्यम से की गई। विशाल संख्या में किसानों को लाभान्वित करने के लिए बनाई गई यह परियोजना 40

(बाएं से) वसंत मलुंजकर; बाबा शिंदे, आरसीसी अध्यक्ष; दत्ता देशकर, जल प्रबंधन विशेषज्ञ; सदानंद नायक; विनय कानिटकर; हेमंत चौधरी; सुमिता सिन्हा; और भावना उलंगवार।

एकड़ क्षेत्र में की गई थी, और इसकी वजह से कई छोटे और सीमांत किसान सब्जियां और अन्य रबी की फसलें उगा सकते हैं।

शिंदे बताते हैं कि पिंगोरी में औसत जुताई केवल एक एकड़ के आसपास होती है, और इस क्षेत्र में जल संसाधनों की वृद्धि से पहले, पहले छोटे और सीमांत किसान दो वक़्त की रोटी के लिए वास्तव में संघर्ष कर रहे थे।

उन्होंने पिंगोरी क्षेत्र के बाहरी इलाके में पहाड़ी ढलानों पर मेगा वृक्षारोपण अभियान को जारी रखा जिसे 2015-16 में अध्यक्ष दीपक तोशनीवाल के कार्यकाल के दौरान शुरू किया गया था। पूर्व अध्यक्ष शिंदे कहते हैं कि मुख्य रूप से ये वृक्ष देशी किस्म के हैं और छाया देने वाले पेड़ हैं, जिन्हें कम पानी की आवश्यकता पड़ती है और ये मानसून में मिट्टी की ऊपरी परतों के क्षरण को और पानी रोकने में सहायक रहे हैं। इसके बाद यहां लगभग 15,000 कस्टर्ड एपल (शरीफे) के पेड़ लगाए गए और इन फलों की मार्केटिंग के लिए पुणे के रोटेरियन किसानों की मदद कर रहे हैं।

उसी वर्ष रोटरी क्लब औंध ने वाघेश्वरी स्कूल में इंटरनेट सुविधा और आवश्यक फर्नीचर उपलब्ध कराने के साथ 10 डेस्कटॉप कंप्यूटरों वाली एक कंप्यूटर लैब की स्थापना की, और मरम्मत कार्य करवा कर लैबरूम को अपग्रेड किया। यह सुविधा पीडीजी सुभाष सराफ की याद में उनके परिवार द्वारा किए गए दान से निर्मित की गई थी।

इसके बाद पर्यावरण की रक्षा की बारी आई; रोटरी क्लब पुणे वेस्ट और डॉ सतीश पांडे की मदद से, आठ एकड़ के भूखंड पर इला हैबिटेट पक्षी अभयारण्य बनाया गया जहाँ हर महीने लगभग 30,000 लीटर पानी की बचत होती है, इन रोटेरियनों द्वारा किए गए जल संरक्षण उपायों को धन्यवाद। ''यह अभयारण्य लगभग 250 देशी किस्म के पेड़ों और पक्षियों की 48 प्रजातियों का निवास है । जल निकायों के लिए धन्यवाद, आज लोमड़ी, लकड़बग्घा और चिंकारा जैसे जानवर अपनी प्यास बुझाने इसी जगह आते हैं। गिलहरियों और कृन्तकों के लिए पेड़ों के नीचे विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए पानी के बर्तन रखे जाते हैं। यहाँ ग्रामीणों के लिए एक चिकित्सा सुविधा भी बनाई गई है।''

प्रति लीटर दूध पर किसानों की आय
₹28
से बढ़कर
₹33
हो गई है।

आज पिंगोरी एक खुशहाल गांव में बदल गया है और लोगों की पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए अब यहां पानी के टैंकरों की जरूरत नहीं पड़ती है। पिंगोरी को पानी के लिए आत्मनिर्भर बनाने, और स्कूल को प्रोन्नत करने और स्कूली पढ़ाई छोड़ने में कमी होने के बाद, विशेष रूप से लड़कियों में, पुणे के रोटेरियनों ने किसानों के उत्पाद के विपणन में मदद पर अपना ध्यान केंद्रित किया। यह संभव था क्योंकि पिंगोरी पुणे से मुश्किल से 60 किमी दूर है, जहां ताजी सब्जियों और दूध की मांग हमेशा बनी रहती है।

2018-19 में, क्लब के अध्यक्ष डॉ प्रशांत खानखोजे के नेतृत्व में, आरसीसी के चेयरमैन शिंदे ने, पुणे के अमनोरा पार्क में पिंगोरी किसानों के उत्पाद बेचने के लिए एक आउटलेट शुरू कर एक उदाहरण पेश किया है, जैसे कि फल, सब्जियां और दूध। उलंगवार कहते हैं, ''अमनोरा पार्क पुणे में सबसे बड़ी गेटेड कम्युनिटी में से एक है। इस आउटलेट को क्षेत्र के निवासियों से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली क्योंकि सब्जियां और फल दोनों ताजा थे और बहुत अच्छी गुणवत्ता के थे। एक अनअपेक्षित प्रभाव ये पड़ा कि इस पहल ने पिंगोरी के किसानों को

वागेश्वरी स्कूल में।

उनकी उपज का अच्छा मूल्य देने के अलावा, पिंगोरी के कई युवाओं को रोजगार देने में भी मदद की है, जो गाँव से पुणे तक उत्पाद पहुंचाते हैं।

आज इस आउटलेट को 'पिंगोरी फार्म आउटलेट' के नाम से जाना जाता है, किसानों के उत्पाद के लिए इसने एक ब्रांड भी स्थापित किया है। चूंकि गांव की प्रमुख गतिविधियों में से एक डेयरी फार्मिंग है, रोटेरियनों ने *कामधेनु परियोजना* के अंतर्गत ग्रामीणों को 25 गायें और ₹24 लाख की लागत से एक कॉमन शेड भी दान किया है ताकि दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो सके।

हालांकि पिंगोरी के ग्रामीणों के लिए सब कुछ बढ़िया चल रहा था, लेकिन मार्च 2020 के बाद कोविड महामारी और उसके बाद हुए लॉकडाउन से वे अत्यधिक प्रभावित हुए थे। पिंगोरी के किसानों के लिए ये विशेष रूप से विनाशकारी साबित हुआ क्योंकि वे अपने खेत की फसल बेचने के लिए पूरी तरह से पुणे के बाजार पर आश्रित थे। जैसे फल, सब्जियां और दूध उत्पाद। उनकी आय का स्रोत ही ख़त्म हो गया था। एक बार फिर, इस गांव के गॉडफादर - रोटरी क्लब औंध के रोटेरियन - एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर उनकी सहयता के लिए आगे आए, जिसके माध्यम से सदस्य सीधे किसानों को सब्जियां और फल के आर्डर भेज सकते थे। सप्ताह में दो बार गांव के युवक, सोसाइटी तक सब्जी, फल और दूध पहुंचाते थे।

ताज़ा और अच्छी गुणवत्ता के कारण सब्जियों सहित दूध आदि की मांग बढ़ती गई और कई गैर-रोटेरियन भी ऑर्डर देने लगे। वॉल्यूम बढ़ता गया और धीरे-धीरे पिंगोरी के युवाओं की एक टीम ने दिन में दो बार सब्जियां आदि टेम्पो में भर के आकाशगंगा सोसाइटी में लाना शुरू कर दिया। यह मोबाइल सेवा जल्द ही लोकप्रिय हो गई क्योंकि नागरिकों को उनके घर बैठे ही उचित मूल्य पर बढ़िया सब्जियां और फल मिलने लगे।

जैसे-जैसे महामारी की स्थिति में सुधार होता गया, पिंगोरी आउटलेट से ताजी पत्तेदार सब्जियों और फल जैसे अनार, अमरूद, पपीता आदि की बिक्री बढ़ती गई। डेयरी किसानों द्वारा उत्पादित दूध की मांग और मात्रा भी बढ़ गई क्योंकि पिंगोरी की बढ़िया उपज पुणे बाजार में आसानी से खप जाती थी। 2020-21 में, कुकुंड सुरकुटवार की अध्यक्षता में, पुणे के एक अन्य इलाके में प्रत्यक्ष बाजार से किसानों के सीधे संपर्क का विस्तार करते हुए एक और पिंगोरी फार्म आउटलेट शुरू किया गया था। रोटेरियनों ने पिंगोरी की महिलाओं को घर का बना स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ भी तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया था। तो इस प्रकार अब रोटेरियन किसानों के उत्पादों को बाजार तक पहुँचाने और विपणन में लगे युवाओं को रोजगार प्रदान करने के साथ-साथ महिलाओं की मदद भी कर रहे थे।

और अब समय आ गया था पिंगोरी उपज के लिए एक स्थायी दुकान स्थापित करने का। "बाबा शिंदे के साथ मिल कर मैंने पहल की, और सदस्यों से कहा कि जो कोई भी इस दुकान में निवेश करना चाहता है, वह ₹2 लाख का योगदान कर सकता है। आठ रोटेरियन ₹16 लाख के साथ आगे आए और हमने एक स्थायी दुकान स्थापित की और रोहित शिंदे, जो करीब 20 साल के हैं, इस दुकान को सम्हालने के लिए आगे आए और पिंगोरी से पुणे चले गए।"

"उस दुकान के प्रबंधन के लिए, बिना कोई निवेश किये, हमने उसे 50 प्रतिशत की साझेदारी दी; धीरे-धीरे इसे पुणे के अन्य इलाकों में फैलाने के लिए हम उसे और अधिक जिम्मेदारी दे रहे हैं," उलंगवार कहते हैं। पिंगोरी फार्म के लेबल में उत्पाद अच्छी तरह से पैक किए गए हैं और अब ये शहर का एक लोकप्रिय ब्रांड बन चुका है।

क्लब की कामधेनु परियोजना के लिए आईटी प्रमुख ATOS से **₹42.1 लाख** का सीएसआर अनुदान

पिंगोरी से पुणे स्थानांतरित होकर इस आउटलेट का प्रबंधन करने वाले रोहित शिंदे, अपनी उन्नति से बहुत प्रसन्न हैं। पहले वो इंजीनियरिंग की डिग्री के साथ गांव की एक छोटी सी दुकान पर काम करते थे, और अपनी दो एकड़ जमीन पर खेती भी करते थे। वहां जवार, बाजरा, दालें, कस्टर्ड एपल और यहां तक कि अंजीर के पेड़ भी उगाते थे। उनकी कुल आय ₹20,000 प्रति माह होती थी। अब उन्हें पिंगोरी आउटलेट का प्रबंधन करने के लिए हर महीने ₹20,000 मिलते हैं, और लाभ में से 50 प्रतिशत हिस्सा भी मिलता है।

शिंदे कहते हैं: "पिंगोरी से ताज़ी सब्जियां, फल, किराने का सामान और अनाज ला कर बेचने के अलावा यह दुकान ग्राहकों को होम डिलीवरी भी करती है। पिंगोरी की दुकान आधुनिक गैजेट्स जैसे पीओएस सिस्टम, इन-बिल्ट बिलिंग मेमो और डिजिटल भुगतान प्रणाली जैसे जीपे, डेबिट और क्रेडिट कार्ड और इलेक्ट्रॉनिक वजन की मशीनों से युक्त है। इस पहल के परिणामस्वरूप किसानों की आय में वृद्धि होने के साथ और युवाओं को रोजगार मिलने से पिंगोरी गांव का चहुँमुखी विकास हुआ है।" यहां के महिला स्वयं सहायता समूह को भी फायदा पहुंचा है क्योंकि इन आउटलेट्स के माध्यम से वे घर के बने खाद्य पदार्थ जैसे पापड़, सेवई, अचार, चटनी आदि की आपूर्ति कर रही हैं। पुणे शहर में पिंगोरि घी, पनीर और दही वितरित करने के साथ प्रतिदिन किसानों से दूध भी एकत्रित किया जाता है।

लेकिन इन आउटलेट में सबसे तेजी से बिकने वाली वस्तु दूध है। हर आउटलेट पिंगोरी किसानों द्वारा

उत्पादित लगभग 50 लीटर दूध बेचता है। रोहित कहते हैं, ''हम किसानों को ₹33-35 प्रति लीटर दूध का भुगतान करते हैं, और इसे संसाधित करने के बाद, परिवहन और प्रसंस्करण लागत को ध्यान में रखते हुए इसे ''₹56 प्रति लीटर पर बेचते हैं। पिंगोरी दूध की मांग इसकी गुणवत्ता के कारण बहुत अच्छी है। किसान खुश हैं क्योंकि पहले उन्हें केवल ₹28 प्रति लीटर मिलता था; अब प्रत्येक लीटर पर वे कम से कम ₹5 अतिरिक्त कमाते हैं।''

पिंगोरी के विकास को देखते हुए, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने 2019 में पिंगोरी का दौरा किया था और इसे एक *आदर्श ग्राम* के रूप में पुरुस्कृत किया था।

क्लब की वर्तमान अध्यक्ष भावना उलंगवार के नेतृत्व में, वाघेश्वरी स्कूल को पीने के पानी और शौचालय दोनों के लिए पानी के टैंक मिलने के साथ पिंगोरी का खुशनुमा सफर जारी है। शिंदे कहते हैं कि हाल ही में, रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी के साथ, रोटरी क्लब औंध को पिंगोरी में अपनी कामधेनु परियोजना के लिए एक प्रमुख आईटी फर्म ATOS से ₹42.1 लाख का सीएसआर अनुदान मिला है। इस परियोजना के तहत 25 सीमांत महिला किसानों को एक-एक गाय दी जाएगी और इन लाभार्थियों द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह द्वारा गायों को सार्वजनिक गौशाला में संयुक्त रूप से पाला जाएगा। गौशाला को सौर ऊर्जा और दूध देने वाली मशीन से लैस किया जाएगा। इस परियोजना से दूध की बिक्री से होने वाली आय को सभी लाभार्थी महिलाओं में समान रूप से बांटा जाएगा, ताकि वो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

गौशाला के लिए भूमि पूजन गत वर्ष RID 3131 के तत्कालीन गवर्नर पंकज शाह द्वारा किया गया था और यहां जल्द ही काम शुरू हो जाएगा।

पिंगोरी गांव के साथ शिंदे के संबंध काफी प्रगाढ़ हैं, यहां सप्ताह में एक बार ज़रूर आते हैं, वो कहते हैं, ''पिंगोरी गांव का परिवर्तन और उसके निवासियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता रोटरी दुनिया में हैप्पी विलेज अवधारणा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि रोटरी क्लबों के निरंतर और दीर्घकालिक प्रयासों से गांव को परिवर्तित कर पूरी तरह से उनकी कायापलट की जा सकती है, जो ग्रामीणों और अन्य हितधारकों को भागीदार के रूप में अपने साथ जोड़ कर चलते हैं।''

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी द्वारा बनाई गई पानी की टंकी।

आरआईएलएम ने एनसीईआरटी को यूनेस्को पुरस्कार प्राप्त करने में मदद की

टीम रोटरी न्यूज़

एनसीईआरटी के निदेशक हृषिकेश सेनापति (बाएं) और पीडीजी रंजन ढींगरा (दाएं) समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

एनसीईआरटी को 12 'पीएम ई - विद्या' डीटीएच टीवी चैनलों पर कक्षा 1-12 के लिए ई - लर्निंग सामग्री के लिए यूनेस्को के किंग हमद बिन ईसा अल - खलीफा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आधे घंटे के स्लॉट के 2,000 एपिसोड वाली सामग्री को रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन (आरआईएलएम) द्वारा जून 2020 में रोटरी इंडिया ह्यूमैनिटी फाउंडेशन (आरआईएचएफ) और एनसीईआरटी के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक और शिक्षा सचिव अनीता करवाल की उपस्थिति में एक साथ रखा गया था।

आरआईएलएम ने भारत सरकार के 'दीक्षा' के लिए ऑडियो - विजुअल सामग्री भी बनाई, जो स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय मंच है।

सीआईईटी - एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक अमरेंद्र पी बेहेरा ने इस वर्ष जुलाई में पेरिस में यह पुरस्कार प्राप्त किया था। एक साक्षात्कार में उन्होंने रोटेरियन्स को धन्यवाद दिया, ''जिन्होंने ई - लर्निंग को बढ़ावा देने में वर्षों तक अथक रूप से काम किया था। यूनेस्को पुरस्कार और रोटरी का योगदान देश के लिए गर्व की बात है।''

इससे पहले पीआरआईपी शेखर मेहता को लिखे अपने पत्र में उन्होंने कहा था कि यह पहल उन वंचित बच्चों के लिए डिजिटल खाई को पाट देगी, जिनके पास स्मार्टफोन के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा तक पहुंच नहीं है, लेकिन उनके पास घर पर टीवी है। ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

वर्धा में 1000 मरीजों के लिए मोतियाबिंद सर्जरी की सुविधा

विनोबा भावे अस्पताल में डीजी आनंद झुंझुनूवाला (दाएं से दूसरे) और डीआरएफसी महेश मोकलकर (दाएं से तीसरे)।

रोटरी क्लब ऑफ गांधी सिटी, वर्धा, रो ई मंडल 3030 ने रोटरी क्लब बहिया, ब्राजील रो ई मंडल 4391 के सहयोग से, महाराष्ट्र के वर्धा के पास सवांगी मेघे गांव में आचार्य विनोबा भावे ग्रामीण अस्पताल में एक नेत्र ऑपरेशन थिएटर की स्थापना की। वैश्विक अनुदान परियोजना ने 1,000 कम विशेषाधिकार प्राप्त रोगियों को मोतियाबिंद अपवर्तक सर्जरी प्रदान करने के एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ अस्पताल में एक फैको और एक ए-स्कैन मशीन और एक डिजिटल माइक्रोस्कोप स्थापित करने में मदद की, जिसकी लागत ₹45 लाख है।

डीआरएफसी महेश मोकलकर, क्लब के अध्यक्ष शैलेश सिंहल और सचिव साकेत बगरोडिया की मौजूदगी में डीजी डॉ आनंद झुनझुनूवाला ने ओटी का उद्घाटन किया। ■

व्हीलचेयर से विकलांगता अधिकारों की लड़ाई

जयश्री

सुनीता संचेती और उनका परिवार स्विट्ज़रलैंड की राजधानी बर्न में प्रसिद्ध क्लॉक टॉवर, ज़ीट ग्लॉकेंटुरम के सामने।

लोगों को विकलांग व्यक्तियों की जरूरतों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। विकलांगता अभिशाप नहीं है। यह किसी के साथ भी हो सकता है; कोई दुर्घटना या बुढ़ापे से एक व्यक्ति विभिन्न रूपों में विकलांग हो सकते है। लेकिन यह किसी की स्वतंत्रता में बाधक नहीं होना चाहिए, नीनू केवलानी कहती है।

''जब आपके पास एक सहायक परिवार और दोस्त होते है, तो आपकी विकलांगता ज्यादा मायने नहीं रखती। वे आपको आराम पहुंचाने और अपने साथ शामिल करने के लिए अपने तरीके से काम करेंगे। मेरा तरीका अद्भुत है,'' सुनीता संचेती कहती हैं।

दोनों 20 साल से अधिक समय से विकलांगता अधिकार कार्यकर्ता है, और अपनी आवाज उठाने का कोई मौका नहीं चूकती हैं। वे रोटरी क्लब मुंबई ब्रेवहार्ट्स, रो ई मंडल 3141, की नई सदस्य है। ''रोटरी ने हमें विशाल संख्या में लोगों तक पहुंचने में मदद करने के लिए एक व्यापक मंच दिया है,'' नीनू कहती है, जो नौ महीने की उम्र में पोलियो से मुकाबले करने के बाद अब व्हीलचेयर से बंधी हुई है।

अगस्त में जब क्लब ने बैडमिंटन और टेबल टेनिस टूर्नामेंट अनुदान संचयन का आयोजन किया, तो सुनीता ने एक प्रदर्शनी मैच का आयोजन किया था, जिसमें 12 शारीरिक रूप से विकलांग खिलाड़ी 'पहियों पर बैडमिंटन' खेल रहे थे। वह कहती है, ''इसका उद्देश्य यह संदेश देना था कि शारीरिक विकलांगता को किसी के व्यक्तिगत विकास को प्रतिबंधित करने की आवश्यकता नहीं है, और एजेंसियों को सभी लोगों के अनुरूप एक सुगम्य बुनियादी ढांचा तैयार करने के लिए भी संवेदनशील बनाना है।''

सुनीता 16 साल की उम्र में रीढ़ की हड्डी में ट्यूमर के इलाज के लिए की गई लापरवाह सर्जरी के बाद कमर तक लकवाग्रस्त हो गई है। ब्रिटेन के एक पुनर्वसन केंद्र में स्वयं अपना काम करने का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने के नौ सालों के संघर्ष के बाद वह अब अपनी व्हीलचेयर पर सहज महसूस करती है। ''मैं पहली बार निराश थी जब मैंने व्हीलचेयर का उपयोग करना शुरू किया क्योंकि वह भारी और बुरी तरह से फिट की गई थी। तब भारत में कोई पुनर्वसन केंद्र नहीं था जो किसी व्यक्ति को अपनी विकलांगता का प्रबंधन करने के लिए तैयार कर सकें।''

उन्हें अपनी व्हीलचेयर से बिस्तर पर जाने, या एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने में मुश्किल होती थी;

सुनीता और नीनू केवलानी रोटरी क्लब मुंबई ब्रेवहार्ट्स में शामिल होने के दौरान। पीडीजी प्रफुल्ल शर्मा (बैठे, बाएं से दूसरे) और क्लब के अध्यक्ष खुजेम साकरवाला (खड़े, दाएं से तीसरे) भी चित्र में शामिल हैं।

और इसकी संरचना के कारण गंभीर शारीरिक दर्द होता था, जब तक कि उन्होंने लंदन के एक पुनर्वसन केंद्र में सत्रों के लिए दाखिला नहीं लिया, जिसने उन्हें अपने दम पर अपना काम करना सिखाया, और सही व्हीलचेयर चुनना सिखाया। ''मैं समझ गई कि एक व्हीलचेयर सभी को सूट नहीं करती है। यह कस्टम-निर्मित और उपयोगकर्ता के अनुकूल होना चाहिए, यह ध्यान में रखते हुए कि इसका उपयोग सहायक के साथ-साथ विकलांग व्यक्ति द्वारा भी किया जाएगा। मेरी व्यक्तिगत रूप से निर्मित है; इसमें हैंडबार नहीं हैं और मैं इस पर से आसानी से कुर्सी या बिस्तर पर जा सकती हूं; समायोज्य सीट और अन्य नियंत्रण मुझे इसे आसानी से संचालित करने में मदद करते हैं।''

सुनीता अपनी स्विट्ज़रलैंड की हालिया यात्रा को याद करते हुए कहती है कि मैं वहाँ गोंडोला, संग्रहालय, पार्कों और अन्य स्थानों पर आसानी से जा पाई क्योंकि वे सभी सुगम्य है। एकमात्र अड़चन यह थी कि उन्होंने अपनी व्हीलचेयर खो दी जो मुंबई में बोर्डिंग के दौरान चेक-इन सामान पर रखी गई थी। सुनीता कहती है, यह टूथब्रश/टूथपेस्ट की तरह नहीं है जिसे बदला जा सके। ''मेरे लिए यह व्यक्तिगत सेटिंग्स वाली एक अत्यधिक व्यक्तिगत वस्तु है।''

लेकिन स्विस हवाई अड्डे ने उसे एक विकल्प दिया जब तक कि दस दिन बाद उसका पता नहीं लगाया जा सका। ''उन्होंने वहाँ मेरे आवास तक मेरी व्हीलचेयर पहुंचाई।'' लेकिन वह टूटी हुई थी और खराब हो चुकी थी और उन्होंने अपने बाकी प्रवास के लिए हवाई अड्डे की व्हीलचेयर का उपयोग करना जारी रखा। ''जब मैं वापस लौटी तो यह मुंबई हवाई अड्डे के मेरे अनुभव के ठीक विपरीत था।'' चूंकि उनकी व्हीलचेयर अनुपयोगी थी, इसलिए हवाई अड्डे के अधिकारियों ने उन्हें हवाई अड्डे की व्हीलचेयर को घर ले जाने से माना कर दिया, हालांकि उन्होंने घर पहुंचने के बाद इसे वापस करने का वादा किया था!

ताजमहल के अपने दौरे को याद करते हुए उन्होंने कहा, ''स्टीफन हॉकिंग के ताजमहल देखने जाने के एक दिन बाद मैंने आगरा का दौरा किया था। इसलिए, जब स्टीफन ताज में थे, तो उसमे हर जगह रैंप थे और वह व्हीलचेयर के अनुकूल था।

विकलांग-अनुकूल परिवेश के लिए सुझाव

रो*टरी न्यूज़* से बात करते हुए, व्हीलचेयर पर चलने वाली रोटेरियन नीनू केवलानी और सुनीता संचेती ने किसी रुकावट के बिना एक समावेशी माहौल बनने हेतु कुछ विचारों को दोहराया।

सार्वजनिक शौचालयों में रेलिंग, ग्रैब बार, एंटी-स्किड फर्श और बड़े दरवाजों का उपयोग।

फुटपाथ और पार्कों के प्रवेश द्वार पर बोलार्ड हटाना और लो फ्लोर बसों का इस्तेमाल। समुद्र तट तक पहुंचने के लिए समुद्र तटों पर रैंप। सरकारी भवनों और रेलवे स्टेशनों तक पहुंचने के लिए कम ऊंचाई वाले रैम्प/चौड़ी लिफ्ट।

अपार्टमेंट परिसरों के लॉबी क्षेत्र में विकलांग-अनुकूल शौचालय।

सुनीता कहती है, ''विकलांगों की चुनौतियों के प्रति संवेदनशील डिजाइनरों का एक प्रतिभा पूल होना चाहिए और समाज के सभी लोगों को शामिल करने के लिए सुलभ बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जाना चाहिए।''

बैडमिंटन ऑन व्हील्स टूर्नामेंट में सुनीता।

लेकिन जब हम गए तो रैंप गायब हो चुके थे। ऐसी हमारी मानसिकता है।''

सुनीता भारत में अधिक पुनर्वास केंद्रों की वकालत करती है ताकि विकलांगों को चुनौतियों से बेहतर तरीके से निपटने में मदद मिल सके। वह इस बात की पुरजोर वकालत करती हैं कि शारीरिक रूप से विकलांग एवं मूक-बधिर व्यक्तियों के साथ स्कूलों में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। ''हम मुख्यधारा में आना चाहते है। तभी अन्य बच्चे हमारी चुनौतियों को समझकर बड़े होंगे और विभिन्न स्थितियों के अनुकूल होना सीखेंगे।''

वह कक्षा 12वीं में थी जब वह लकवाग्रस्त हो गई थी और उन्हें अपनी बोर्ड परीक्षा लिखने की अनुमति नहीं थी, जिसे उन्होंने एक साल बाद पूरा किया था। अब वह आयकर रिटर्न दाखिल करने और अपने परिवार द्वारा संचालित व्यवसाय के खातों की देखभाल करने में कुशल है। वह अपने जैसे लोगों को सलाह देती है, योग करती है और पैरा बैडमिंटन खेलती है। उन्होंने कहा, ''मैंने तब बैडमिंटन में राज्य स्तरीय रजत पदक जीता था। दुर्घटना के बाद, मेरे दोस्तों ने मुझे व्हीलचेयर पर होने का बहाना छोड़कर मुझे खेलने के लिए मजबूर किया। अब मैं खेल खेलने वाले किसी भी अन्य सक्षम व्यक्ति की तरह सहज महसूस करती हूं।'' उन्होंने स्विमिंग पूल में स्कूबा डाइविंग भी की है।

दोनों महिलाओं ने वेडिंग प्लानिंग और इवेंट मैनेजमेंट का कोर्स भी किया है। ''इसने मुझे अपने भतीजे की शादी की योजना बनाने में मदद की, और हमने ₹ 5 लाख बचाए,'' एक सार्वजनिक वक्ता और एक उद्यमी नीनू कहती है।

उनके लिए, विकलांगता का अर्थ केवल शारीरिक रूप से विकलांग होना नहीं है। इसमें एक व्याकपक जनसंख्या शामिल है - बोलने में अक्षम, नेत्रहीन, मानसिक रूप से विकलांग लोग, बुजुर्ग और पूर्णकालिक गर्भवती महिलाएं। यहां तक कि छोटे कद और मोटे लोग भी इस श्रेणी में आते है। ''इन सभी लोगों को किसी प्रकार के अभिगम्यता सहायकों की आवश्यकता होती है,'' वह कहती है। नेत्रहीनों के लिए श्रवण सहायता होनी चाहिए, और मूक-बधिरों की मदद करने के लिए प्रमुख स्थानों पर उचित संकेतक होने चाहिए। ''अगर आप मुझे सरकारी कोटे पर काम पर रखते है, और मैं कार्यालय नहीं आ पाती हूँ तो मेरे लिए वह नौकरी किस काम की हुई,'' वह पूछती है।

विकलांग-अनुकूल इमारतें

इमारतों की नियमावली कहती है कि सभी इमारतों को विकलांग-अनुकूल और सुगम्य होना चाहिए। लेकिन ये सब केवल कागजों में होता है, वह अफसोस जताती हैं। एक मानक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे/सितारा होटलें/आईटी कार्यालय अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करते है और वे ज्यादातर अपने भवन को डिजाइन करने में विशेषज्ञों की सलाह लेते है। ''लेकिन तथाकथित विशेषज्ञ विकलांग-अनुकूल सार्वजनिक स्थानों को डिजाइन करने में अपना दिमाग नहीं लगाते हैं।''

नीनू कुछ अप्रिय उदाहरणों का हवाला देती है। ''बाथरूम का दरवाजा चौड़ा हो सकता है, वॉश बेसिन नीचे हो सकता है, लेकिन शीशे को एक सामान्य व्यक्ति की उपयुक्त ऊंचाई पर लगाया जाएगा। व्हीलचेयर पर सीमित होने की वजह से, हम शीशे तक पहुंचने के लिए कैसे खड़े हो सकते है? इसी तरह, जब वॉशबेसिन के नीचे एक अलमारी स्थापित की जाती है, तो मैं नीचे शेल्फ के कारण अपनी व्हीलचेयर को वॉशबेसिन के करीब नहीं ले जा पाऊँगी।''

रेलवे प्लेटफार्म एक बुरे सपने जैसे होते है, वह आगे कहती है। ''मैंने रेलवे स्टेशन पर लोगों को सीढ़ियों से रेंगकर नीचे उतरते देखा है। यह अशोभनीय है। प्लेटफार्म और कोच के बीच बड़ा अंतर होने के कारण ट्रेन में चढ़ने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।''

सुनीता और नीनू ने 28 राज्यों की राजधानियों और 40 शहरों की 84 दिनों में 19,000 किमी की यात्रा सुगम्यता को बढ़ावा देने और विकलांगता अधिकारों की वकालत करने के लिए की है। ''हमारे अधिकारों के लिए लड़ने वाले सक्रिय संगठन मौजूद है। लेकिन फिर सुनने के लिए बहुत कुछ है। हम नारे लगा रहे है, कार्यक्रम कर रहे है, जनहित याचिकाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे है और सरकारी विभागों में कागजात प्रस्तुत कर रहे है। लेकिन वास्तविकता यह है कि जब तक आपको दर्द नहीं होता, तब तक आप चुनौतियों के बारे में नहीं सोचेंगे। सहानुभूति कुंजी है,'' वह कहती है।

उन्हें अधिक मंच देने और प्रभाव बढ़ाने के लिए क्लब अध्यक्ष खुजेम सकरवाला दोनों महिलाओं को विभिन्न रोटरी क्लबों में प्रस्तुतियां देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ■

स्केल अनुदान प्राप्तकर्ता के इस साल के कार्यक्रमों की घोषणा

नाइजीरिया में स्वस्थ परिवारों के लिए एक साथ।

माताओं और बच्चों के जीवन को बचाना

रोटरी फाउंडेशन के '2022 प्रोग्राम ऑफ स्केल अनुदान नाइजीरिया' में अधिक माताओं और नवजात शिशुओं के जीवन को बचाने के लिए एक सदस्य के नेतृत्व वाले प्रयास का समर्थन करता है। रोटरी डिस्ट्रिक्ट्स 1860 (जर्मनी) और 9110, 9125, 9141 और 9142 (नाइजीरिया); प्रजनन, मातृ और बाल स्वास्थ्य के लिए रोटरी एक्शन ग्रुप; और नाइजीरियाई संघीय और राज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय, चिकित्सा संघ और सामुदायिक नेता चार नाइजीरियाई राज्यों में मातृ और नवजात मृत्यु दर को 25% तक कम करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। आर्थिक सहयोग और विकास के लिए जर्मनी के संघीय मंत्रालय और अन्य वैश्विक संगठनों से धन के साथ मिलकर 2 मिलियन डॉलर अनुदान, कार्यक्रम को परिवारों के लिए स्वास्थ्य शिक्षा का विस्तार करने के साथ - साथ गर्भवती महिलाओं, माताओं और शिशुओं के लिए गुणवत्ता नैदानिक देखभाल तक पहुंच प्रदान करने में सक्षम करेगा।

अधिक परिवारों को पनपने में मदद करने के लिए पिछली सफलताओं के बारे में पढ़ने के लिए Rotary.org पर जाएं।

rotary.org/ programsofscale के कार्यक्रमों के बारे में अधिक जानें।

Rotary

Rotary PEOPLE OF ACTION

अहमदाबाद के इंटरेक्टरों ने यूक्रेन और पाकिस्तान के लिए धन जुटाया

किरण ज़ेहरा

कैंटीन शुरू करने से लेकर स्कूल के बाद के समय में बुजुर्गों को ऑनलाइन शॉपिंग सिखाने और भेल पूरी और पानी पूरी बेचने तक, रोटरी क्लब अहमदाबाद ग्रेटर, रो ई मंडल 3054, द्वारा प्रायोजित तीन इंटरेक्ट क्लब यूक्रेन और बाढ़ प्रभावित पाकिस्तान के बच्चों के लिए धन जुटाने हेतु हर संभव प्रयास कर रहे है।

अहमदाबाद के थलतेज स्थित विश्व भारती गर्ल्स हाई स्कूल के इंटरेक्टरों ने यूक्रेन के लिए €51` (लगभग ₹5,000) जुटाने हेतु बुजुर्गों को उनके स्मार्टफोन का उपयोग करना सिखाया, बैंकिंग फॉर्म भरना सिखाया एवं उन्हें जानकारी दी, और साथ ही न्यूनतम शुल्क के साथ ऑनलाइन संपत्ति और जल कर, बिजली और रसोई गैस बिलों का भुगतान करने में उनकी मदद की। ''ये छात्राएं निम्न मध्यम आय वाले परिवारों से संबंधित है और पहले से ही अपने माता-पिता के साथ बहुत जिम्मेदारी उठा रही है, और इसके बावजूद भी उन्होंने अपनी स्थितियों से परे जाकर सोचने का फैसला किया। भले ही यह बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन वे अपना योगदान देना चाहती है,'' रोटरी क्लब अहमदाबाद ग्रेटर के इंटरेक्ट अध्यक्ष अरूप सिन्हा कहते है।

यूक्रेन के बच्चों की दुर्दशा के बारे में बात करते हुए विश्व भारती स्कूल के इंटरेक्ट क्लब की अध्यक्ष प्रियंका प्रजापति कहती है, ''बम हमलों से बचने के लिए कई बच्चे तहखाने में छिप गए, कुछ को अपनी आँखों से प्रियजनों की मौत देखनी पड़ी और कुछ को अपने घरों से भागना पड़ा। हमारी समस्याएं उनके द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के सामने कुछ भी नहीं है।''

यह सब तब शुरू हुआ जब इंटरेक्ट क्लब की सदस्य राठौड़ खुशी हरेशभाई से क्लब की एक बैठक में पूछा गया कि उन्होंने स्कूल यूनिफ़ॉर्म क्यों नहीं पहनी। खुशी कहती है, ''मुझे अपनी यूनिफ़ॉर्म और किताबों में से किसी एक को चुनना पड़ा क्योंकि मेरे माता-पिता इन दोनों का खर्च नहीं उठा सकते थे।'' जब क्लब को उसकी स्थिति के बारे में पता चला तो इंटरेक्टरों ने प्रोजेक्ट खुशी के लिए ₹2,000 जुटाए। खुशी को ₹1,000 की लागत से एक नई यूनिफ़ॉर्म मिली जबकि अन्य न1,000 का उपयोग यूक्रेन के बच्चों के लिए प्रारम्भिक कोष के रूप में किया गया।

''धन जुटाने के आखिरी दिन, इंटरेक्ट क्लब के सभी सदस्य पूरा दिन बाहर थे, समुदाय को यूक्रेनी बच्चों की स्थिति के बारे में संवेदनशील कर रहे थे और हमने सभी से अपील की कि वे उनकी पीड़ा के बारे में सोचें और उनके लिए मन से दान करें न कि जेब से,'' प्रियंका कहती है।

अभिजात विद्या विहार स्कूल के इंटरेक्टरों ने परिसर में एक कैफेटेरिया शुरू किया और भुगतान काउंटर के पास एक दान पेटी रखकर आगंतुकों से उदारतापूर्वक दान करने का आग्रह किया। ''बच्चे होकर यूक्रेनी बच्चों की मदद करने के लिए पैसे जुटाने की कोशिश करने से लोगों पर भावनात्मक प्रभाव पड़ा। हमारे कैफेटेरिया का दौरा करने वाले शिक्षक और छात्र हमेशा इस कारण के लिए अतिरिक्त दान करते थे,'' क्लब के अध्यक्ष जय पटेल कहते है। इस पहल से 2,500 (€31) की कमाई हुई। ''इससे हमें और अधिक करने का आत्मविश्वास मिला,'' वह आगे कहते है। इसके बाद क्लब ने वड़ा पाव, भेल पुरी और पानी पुरी जैसे स्नैक्स बेचे और स्थानीय मिठाई की दुकानों को उनके द्वारा बनाए गए हस्तनिर्मित पेपर बैग बेचे। ''इससे हमें और €80 जुटाने में मदद मिली। यह हमारे लिए सीखने का एक और अनुभव था। हमने मार्केटिंग कौशल सीखें और यह समझा कि बिक्री के लिए योजना की आवश्यकता होती है,'' वह कहते है।

जुटाई गई धनराशि को रोटरी क्लब तारागोना ताराको अगस्त, रो ई मंडल 2202, स्पेन, को भेजा

दक्षिणावर्तः इंटरेक्टर्स सीड बॉल बनाते हुए; एक इंटरेक्टर ट्यूशन लेती हुयी; विश्वभारती गर्ल्स हाई स्कूल के इंटरैक्ट क्लब द्वारा प्रोजेक्ट ख़ुशी के तहत एक छात्रा को स्कूल के प्रिंसिपल गौरंगी एम सोयंतर और ट्रस्टी आशीष शुक्ला की उपस्थिति में एक वर्दी का उपहार मिलते हुए; अभिजीत विद्याविहार के इंटरेक्ट क्लब द्वारा कैंटीन डे।

सार्वजनिक स्थान पर थूकने से रोकने का एक उपाय

विश्व भारती इंग्लिश मीडियम स्कूल के इंटरेक्ट क्लब के अध्यक्ष प्रयागराज मेहता तब निराश और परेशान हो गए जब हम ड्राइव पर गए तो परिवार के एक सदस्य को कार के बाहर थूकते देखा। इसलिए, मैंने इसके बारे में कुछ करने का फैसला किया। उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर थूकने को रोकने के लिए एक समाधान पर काम करना शुरू किया और एक 'बायोडिग्रेडेबल स्पिट्टून' डिजाइन किया जिसे कार या बाइक के अंदर आसानी से फिट किया जा सकता है। उन्हें हाल ही में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल द्वारा उनके नवाचार के लिए यूथ इनोवेटर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

गया ताकि यूक्रेन के युद्ध-आघात वाले 20 बच्चों के लिए स्पेन की यात्रा के लिए आंशिक रूप से निधि दी जा सके। दान को स्वीकार करते हुए क्लब के सदस्य साल्वाडोर ओलिव ने कहा, ''यह देखकर खुशी हुई कि अपने देश से इतनी दूर स्थित एक देश के बच्चों की मदद करने के लिए इन इंटरेक्टरों ने कितनी मेहनत से धन जुटाया, और वो भी विभिन्न देशों के क्लब के रोटेरियनों के मार्गदर्शन में। यह है रोटरी का जादू!'' यूक्रेनी बच्चे एक महीने तक यूक्रेन में मिलने वाले शारीरिक और मनोवैज्ञानिक समर्थन का आनंद लेंगे ताकि वे उनके द्वारा सामना किए गए उस आघात को भूल सकें।

जहाँ इन दोनों क्लबों ने यूक्रेनी बच्चों के लिए €162 जुटाए वहीं विश्व भारती इंग्लिश मीडियम स्कूल के इंटरेक्ट क्लब ने एक कैंटीन दिवस की मेजबानी करते हुए सैंडविच और पोहा बेचकर बाढ़ प्रभावित पाकिस्तानी बच्चों के लिए 3,700 जुटाए। क्लब की सदस्य काव्या दवे कहती है, यह बहुत बड़ी राशि नहीं है लेकिन मुझे उम्मीद है कि इससे कुछ बच्चों को भोजन एवं पानी, या खिलौना या किताब उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। दुर्भाग्य से अंतर्राष्ट्रीय भुगतान प्रतिबंधों के कारण यह धन राशि पाकिस्तान को नहीं भेजी जा सकी। सिन्हा कहते है, हम अन्य विकल्पों पर काम कर रहे है।

इंटरेक्ट क्लब हर साल कम से कम दो परियोजनाओं का आयोजन करते है - एक जो उनके स्कूल या समुदाय की मदद करता है और दूसरा जो अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ावा देता है। हम रोटेरियन परियोजनाओं के माध्यम से उनका मार्गदर्शन करते है। लेकिन जिस तरह से उन्होंने इन राशियों को इकट्ठा किया है उससे आप यह कह सकते है कि उन्हें ज्यादा मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है, वह आगे कहते है। ■

ट्रांसजेंडर्स के लिए एक RYLA

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरियनों और RYLA प्रतिभागियों के साथ डीजी एन नंदकुमार और पीडीजी जी चंद्रमोहन।

ट्रांसजेंडर समुदाय का समर्थन करने के प्रयास में, रो ई मंडल 3232 ने 30 वर्ष से कम आयु के 63 ट्रांसजेंडरों के लिए प्राइड RYLA नामक एक दिवसीय RYLA कार्यक्रम आयोजित किया। मंडल की RYLA चेयर आशा मरीना कहती हैं, ''यह पहल संचार और दोस्ती बनाने, समस्या सुलझाने के कौशल सीखने और एक अच्छा नेता बनने के लिए रणनीतियों की खोज करने पर केंद्रित थी।''

इस कार्यक्रम की शुरुआत पहले पहल करनेवाले सत्र के साथ हुई ताकि ''उन्हें आराम महसूस हो सके और अपने समुदाय के अधिक लोगों को जान सकें जो बदलाव लाना चाहते हैं।'' अन्य सत्रों में उद्यमिता, सूक्ष्म ऋण के लिए बैंकिंग प्रक्रियाओं और इंडियन बैंक द्वारा आयोजित कौशल विकास कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

DG डॉ एन नंदकुमार ने 'विविधता, समानता और समावेशन' पर अपने विचार साझा किए। पीडीजी ISAK नज़र ने अवसरों को हथियाने के महत्व को समझाया। यह मंच आपके लिए कुछ नया सीखने का अवसर है, इसलिए अपने समुदाय के अधिक लोगों की मदद करने के लिए इसका उपयोग करें, उन्होंने कहा।

प्रतिभागियों के लिए एक शानदार दोपहर के भोजन का आयोजन किया गया था, जिसके बाद उन्होंने एक एनएलपी (न्यूरो-लिंगविस्टिक प्रोग्रामिंग) उपचार सत्र में भाग लिया जो बेहोश दिमाग को स्वस्थ विकल्प बनाने में मदद करता है। सभी प्रतिभागियों को RYLA प्रमाण पत्र और उपहार प्रदान किये गए।■

ADVT.

BLOOD BANK EQUIPMENT

Precision

that ensures you don't have to use a microscope to view the happiness

- 4.3" Colour HMI with touch screen
- 200000 data storage capacity
- Configurable maintenance reminder
- 7 days circular chart recorder
- Caster wheels for ease of mobility
- Self-diagnostic system with error messages
- Email, SMS and call alert up to 15 users
- Connectivity to central monitoring software
- Multilevel password protected HMI
- High speed ethernet connectivity
- Multi-level password protected HMI
- Micro controller based programs
- Frost free refrigeration system
- Micro controller based programs

- Blood Collection Monitor
- Blood Donor Couch
- Blood bag tube sealer
- Cryofreeze (-80.0°C)
- Plasma Freezer (-40.0°C)
- Laboratory Centrifuge
- Cryoprecipitate bath
- Plasma Thawing bath
- Platelet Incubator and agitator
- Blood Bank Scale
- Centrifuge Equaliser
- Walk in Blood Bank Refrigerator
- Laboratory refrigerators
- Plasma expressor
- Laminar air flow

Refrigerated Centrifuge

Lab refrigerator

Blood Bank Refrigerator

Platelet incubator

Ultra Plasma freezer

Labtop Instruments Pvt. Ltd. ISO 13485 : 2012

Labtop House, Plot No. 59, Waliv Phata, Sativali Road, Vasai (E),
Dist - Palghar - 401208, Maharashtra, India. Tel.:+918446053761 to 70 (10 lines)
Email: info@labtopinstruments.com
Web: www.labtopinstruments.com

LABTOP®
Quality Lab Equipment

संगमनेर में आंखों की रोशनी बहाल करने के 33 साल

जयश्री

रोटरी क्लब संगमनेर, रो ई मंडल 3132, के एक सदस्य ए जी दिलीप मालपानी कहते है, ''पिछले 33 वर्षों से हर साल हम अपने रोटरी नेत्र अस्पताल के माध्यम से वंचितों के लिए कम से कम 1,000 मोतियाबिंद सर्जरियाँ कर रहे है।'' 1989 में स्थापित यह अस्पताल, यूके और यूएस क्लबों से प्राप्त दो मिलान अनुदान और यूएस एवं स्विस रोटरी क्लबों से प्राप्त दो वैश्विक अनुदानों की वजह से विस्तारित हुआ है।

इसके लिए भूमि नगरपालिका द्वारा प्रदान की गई थी और जनता एवं क्लब के सदस्यों से प्राप्त हुए उदार योगदान के साथ यह अस्पताल बनकर तैयार हुआ। मंडल एवं नैशनल अवॉइडबल ब्लाइन्डनेस एसोसिएशन और साइटसेवर्स इंटरनेशनल के समर्थन से यहाँ उपकरण लाए गए। आज इस अस्पताल में सभी आधुनिक उपकरण और पूर्णकालिक योग्य सर्जन मौजूद है। दो वैन नियमित रूप से आसपास के गांवों में जांच शिविर आयोजित करके मोतियाबिंद या अन्य नेत्र संबंधित विकारों वाले रोगियों को आगे के इलाज के लिए अस्पताल लेकर आती है जहाँ उन्हें नि:शुल्क उपचार दिया जाता है। अस्पताल में सशुल्क सर्जरियों से होने वाली आय ₹8 लाख के मासिक खर्च को वहन करने में मदद करती है और यह लागत सब्सिडी पुरानी/घिसी-पिटी मशीनों के प्रतिस्थापन का भी समर्थन करती है।

हाल ही में एक विशाल भेंगापन सर्जरी शिविर ने इस विकार से जूझ रही 51 युवतियों को ठीक करने में मदद की। ''उनमें से कुछ विवाह योग्य उम्र की है और इस सुधारात्मक सर्जरी के बाद उन्हें अच्छा वर मिल सकता है। अन्य स्कूली बच्चे थे और वे अब एक नए आत्मविश्वास के साथ स्कूल वापस जा सकते है,'' वह कहते है। इस शिविर में 150 मरीजों को दवाइयां व चश्मे उपलब्ध कराए गए।

ग्राइंडिंग मशीन बांटने के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में आईपीडीजी ओम प्रकाश मोतीपावाले (बाएं से पांचवें), रोटेरियन कृष्णा बूब (बाएं से आठवें), 2021-22 क्लब के अध्यक्ष योगेश गाडे और एजी दिलीप मालपानी (दाएं से दूसरे)।

रोटरी क्लब संगमनेर के रोटरी आई हॉस्पिटल में मरीज़।

अपने अस्तित्व में आने के बाद से, इस अस्पताल ने पांच गांवों में आर्थिक रूप से कमजोर 25,000 से अधिक रोगियों को आंखों की रोशनी का उपहार दिया है।

इस 45 वर्षीय क्लब ने हाल ही में एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से 33 जिला परिषद स्कूलों को पाठ्यक्रम के प्री-लोडेड ऑडियो-विजुअल कंटेंट वाले 655 टैब वितरित किए। इससे वंचित परिवारों की पहली पीढ़ी के 1,900 छात्र लाभान्वित होंगे। इन स्कूलों में 4-5 कक्षाओं को संभालने के लिए केवल 1-2 शिक्षक है। मालपानी कहते है, इस परियोजना से निश्चित रूप से इन छात्रों को विभिन्न विषयों में अपनी शिक्षा और समझ में सुधार लाने में मदद मिलेगी। रोटरी क्लब पूना नॉर्थ, रो ई मंडल 3131, इसका सहक्रिया साझेदार था और रोटरी क्लब मियाओ-ली तुंग फ्लावर, रो ई मंडल 3500, ताइवान इस परियोजना का अंतर्राष्ट्रीय साझेदार था। रोटरी क्लब पंचगनी और अकलुज ने भी इसमें योगदान दिया।

मंडल निधि और सदस्य योगदान के समर्थन से क्लब ने ऐसे 61 परिवारों को सिलाई मशीनें दान की जिन्होंने कोविड में अपने घर के कमाने वाले सदस्य को खो दिया था। उनके लिए सिलाई के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। ''आज वे एक दिन में कम से कम 500 कमाने में सक्षम है, यह राशि भले ही छोटी है लेकिन उनके आत्मविश्वास और उम्मीद को बढ़ाने के लिए बहुत है। हम उन्हें ऑर्डर दिलाने की भी योजना बना रहे है,'' वह मुस्कुराते है। इस परियोजना की सफलता से उत्साहित होकर क्लब ने पुणे के रोटेरियन कृष्णा बूब द्वारा प्रायोजित आटा चक्की को 111 कोविड प्रभावित परिवारों को आजीविका हेतु उनका समर्थन करने के लिए वितरित किया।

हर साल दिवाली के दौरान क्लब अपने रोटरेक्ट क्लब के साथ मिलकर कम से कम 200 परिवारों को खाने के पैकेट, मिठाई और कपड़े वितरित करता है। ■

महिलाओं को आजीविका कमाने में मदद करना

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब, अर्कलगुड मिडटाउन, रो ई मंडल 3182 ने हाल ही में कर्नाटक में हासन के पास एक शहर अर्कलगुड में 65 महिलाओं को गाय दान की। यह क्लब की 'समृद्धि महिला सशक्तिकरण परियोजना' के तहत लागू किया गया था, ताकि वंचित महिलाओं को आजीविका अर्जित करने और उन्हें आर्थिक और सामाजिक स्थिरता प्रदान करने में मदद मिल सके।

रोटरी क्लब के तत्कालीन अध्यक्ष बी सी शशिधर के नेतृत्व में पिछले साल शुरू की गई परियोजना रोटरी क्लब वेस्ट स्प्रिंगफील्ड, रो ई मंडल 7890, यूएस और टीआरएफ के समर्थन के साथ वैश्विक अनुदान के माध्यम से की गई थी। पीडीजी एमजी रामचंद्रमूर्ति और डीआरएफसी पी नारायण की मौजूदगी में इन गोवंशों का वितरण किया गया। शशिधर, क्लब अध्यक्ष बीआर राजीव, सचिव बीसी मंजू, कोषाध्यक्ष कुमार हन्याल आदि मौजूद थे। महानिदेशक डॉ. जयगोवरी हदीगल ने इस पहल के लिए क्लब की सराहना की। ■

डीआरएफसी पी नारायण और पीडीजी एम जी रामचंद्रमूर्ति ने एक महिला को गाय दान की।

Rotary PEOPLE OF ACTION

दिल्ली में साइकिल रैली ने कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाई

किरण ज़ेहरा

रोटरी फेलोशिप फॉर साइक्लिंग टू सर्व के अंतर्गत दिल्ली NCR फेलोशिप फॉर साइक्लिंग, रो ई मंडल 3011, की एक पहल *होप ऑन द व्हील्स* साइकिल रैली में भाग लेने वाली 300 महिला साइकिल चालकों के लिए भीड़ ने सड़क पर गुलाबी और नीले रंग के झंडे लहराए। इस कार्यक्रम को कैंसर के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर (RGCIRC) और साइकिल चालकों के एक क्लब दिल्ली व्हील्स के सहयोग से आयोजित किया गया।

RGCIRC से शुरू होकर दिल्ली के सर्वोत्कृष्ट स्थलों से गुजरते हुए इस 20 किमी मार्ग की यात्रा तय की गई और दो शिविरों में पड़ाव लिया गया जहाँ 100 से अधिक वंचित महिलाओं की स्तन कैंसर के लिए जांच की गई।

DG अशोक कंटूर ने इस रैली को रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स को समर्पित करते हुए उन्हें ''कैंसर से जूझ रही हर महिला के लिए एक प्रेरणा स्रोत'' कहा। ''यह रैली न केवल जागरूकता पैदा करने के हमारे उद्देश्य का समर्थन करती है बल्कि यह संदेश फैलाने में भी हमारी मदद करती है कि कैंसर का समय पर पता लगाने, जांच करने और एक स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने से कैंसर का खतरा कम हो सकता है।''

RGCIRC की निदेशक डॉ गौरी कपूर के नेतृत्व में तीन चिकित्सा दलों ने महिला साइकिल चालकों को कुछ कैंसर के लिए स्वयं जांच करना सिखाया। उन्होंने उनसे आग्रह किया कि ''किसी भी लक्षण या चिंताओं के मामले में जितनी जल्दी हो सके पेशेवर सहायता लें। शुरुआती इलाज योग्य स्तर पर ही कैंसर की पहचान करने से मदद मिलती है, मृत्यु दर में कमी आती है और इससे इसकी उपचार लागत भी कम हो जाती है।''

फेलोशिप अध्यक्ष नरिंदर कुमार लांबा समझाते है, ''हर साल एक सामुदायिक घटक होता है, और इस कारण का समर्थन करने के लिए दिल्ली NCR फैलोशिप फॉर साइकिलिंग विभिन्न संगठनों के साथ साझेदारी करता है। यह हमें और अधिक करने के लिए प्रेरित करता है और अगले साल के आयोजन के लिए तत्पर रहने में हमारी मदद करता है।'' पिछले साल राइड टू एंड पोलियो रैली ने 10,000 डॉलर एकत्रित किए थे।

शुरुआती इलाज योग्य स्तर पर ही कैंसर की पहचान करने से मदद मिलती है, मृत्यु दर में कमी आती है और इससे इसकी उपचार लागत भी कम हो जाती है।

डीजी अशोक कंटूर (बाएं से तीसरे) RGCIRC में साइकिल रैली को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

महिलाएं कैंसर जागरूकता पैदा करने के लिए होप ऑन द व्हील्स साइकिल रैली में भाग लेती हुईं।

नीचे: छियासठ वर्षीय प्रतिभागी रजनी टैकर अपने पति अशोक टैकर के साथ।

''हमारी फैलोशिप का उद्देश्य प्रतिस्पर्धात्मक और मनोरंजक रूप से साइकिल चलाकर दुनिया भर में दोस्ती को विकसित करना और बढ़ावा देना है। हम एक ऐसा कारण चुन सकते है जो स्थानीय या वैश्विक स्तर पर हमारे समुदाय की सेवा करें। हो सकता है कि आप एक साइकिल चालक न हो या यह आपका पसंदीदा खेल न हो लेकिन साइकिल सवारों को देखकर एक कोलाहल होने लगता है और लोग यह जानने के लिए उत्सुक होते है कि हो क्या रहा है,'' वह आगे कहते है।

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ईस्ट, रो ई मंडल 3011, की एक सदस्य रजनी टैकर (66) कहती है कि वह ''साइकिल चलाने की दीवानी है।'' उन्होंने आठ साल की उम्र में साइकिल चलाना शुरू किया था और उनके लिए यह रैली महिलाओं और लड़कियों को स्वयं की देखभाल करने हेतु प्रेरित करने का एक तरीका है। उन्होंने इस रैली को 90 मिनट में पूरा किया लेकिन ''मुझे थकान महसूस नहीं हो रही। यह मजेदार था। अन्य साइकिल चालकों ने मुझसे कहा कि 'रजनी जी हम आपकी उम्र में पहुंचकर आप ही की तरह फिट रहना चाहते है।'''

वह कहती है, ''रोटरी इस तथ्य को पहचानती है कि सामान्य अभिरुचि दोस्ती का एक विशेष बंधन बनाने में मदद करते है और रोटेरियनों के लिए अतिरिक्त अवसर पैदा करते है। मुझे रोटरी में एक नया परिवार मिला। मुझे वहाँ पर सुना जाता है और मैं सम्मानित महसूस करती हूँ और मेरी उम्र में बस यही एक बात मायने रखती है।''

सभी साइकिल चालकों को गुलाबी जैकेट प्रदान की गई जिसमें पीछे की ओर रोटरी, साइक्लिंग फैलोशिप और RCCIRC के लोगो थे। लांबा कहते है, ''इसने एक सार्वजनिक छवि अभ्यास के रूप में भी काम किया।''■

ADVERTORIAL

मण्डल 3110

द्वितीय AKS Member 2022-23

प्राची – पवन अग्रवाल
मण्डलाध्यक्ष
रो. अ. मण्डल 3110

श्रीमती अनीता – रो. सुमित गोयल
रोटरी क्लब आगरा सैफायर

मेजर डोनस लेवल 3

पीडीजी शरत चन्द्रा
एवं श्रीमती अंजना चन्द्रा
रोटरी क्लब आगरा सैफायर

मेजर डोनर्स

पीडीजी देवेन्द्र अग्रवाल
ए.आर.आर.एफ.सी.

पीडीजी शरत चन्द्रा
डी.आर.एफ.सी.

मेजर डोनर्स

पीडीजी किशोर कटरु
एवं श्रीमती संगीता कटरु
रोटरी क्लब बरेली सेन्ट्रल

रो. राजन विद्यार्थी
एवं श्रीमती शालिनी विद्यार्थी
रोटरी क्लब बरेली

रो. ओ. पी. सिंघल
रोटरी क्लब बरेली सेन्ट्रल

रो. मधुकर श्रीवास्तव
एवं श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव
रोटरी क्लब कानपुर ईस्ट

रो. आर. के. बांगड़
एवं रो. मंजू बांगड़
रोटरी क्लब कानपुर विनायकश्री

रो. अजय कुमार गुप्ता
एवं श्रीमती दीप्ती गुप्ता
रोटरी क्लब कानपुर मैट्रो

रो. डा. शाहजहाँ बेगम
एवं श्री एम. टी. सिद्दिकी
रोटरी क्लब बरेली हैरिटेज

रो. डॉ. दीपिका जी. आतरे
एवं डा. नीरज आतरे
रोटरी क्लब काशीपुर कॉर्बेट

सदस्यता विकास

डीजीएन नीरव निमेश अग्रवाल
चेयर
मण्डलीय सदस्यता समिति

वर्ष 2022–23 में हमारे मण्डल 3110 ने लगातार द्वितीय बार

जोन 6 में
उच्चतम सदस्यता वृद्धि

हासिल करी

अधिकतम नवीन सदस्य : **176**
अधिकतम विकास दर : **4.9%**

कुल सदस्य : 3787

(1 सितम्बर 2022 तक के आंकड़ों के अनुसार)

Do follow us: @Rotary3110

मण्डल 3110 की गतिविधियां

रो. राज मेहरोत्रा
CDS (Admin)

अध्यक्ष जोन्स ने पुणे में एक रेडीऐशन सेंटर का उद्घाटन किया

जयश्री

मैं महसूस कर सकती हूँ कि इन महिलाओं पर क्या बीत रही होगी। अगर मुझे तब त्वरित उपचार नहीं मिला होता तो मैं आज यहाँ खड़ी न होती। इसलिए यह कोई छोटी बात नहीं है कि आप किसी के जीवन को इतनी गहराई से बदलने जा रहे है,'' रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने ऑन्कोलॉजी विभाग में अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे स्तन कैंसर रोगियों का जिक्र करते हुए कहा और 15 साल पहले स्तन कैंसर के अपने उपचार को याद किया। वह अगस्त की शुरुआत में अपनी भारत यात्रा के दौरान पुणे के कस्बा पेठ में सूर्य सह्याद्री अस्पताल में रो ई निदेशक डॉ महेश कोटबागी और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश, TRF न्यासी डॉ भरत पांड्या और रो ई मंडल 3131 के DG डॉ अनिल परमार की उपस्थिति में एक रेडीऐशन सेंटर का उद्घाटन कर रही थी। उन्होंने पांड्या और रोटेरियनों को इस सुविधा को संभव बनाने हेतु धन्यवाद दिया क्योंकि यह कम या बिना किसी आर्थिक साधन वाले व्यक्ति को उसी तरह का परिष्कृत उपचार प्रदान करता है। इस अस्पताल की आठ शाखाएं है - छह पुणे में और एक-एक नासिक एवं कराड, महाराष्ट्र, में।

रोटरी क्लब पुणे प्रिस्टीन ने DRFC गिरीश गुने के मार्गदर्शन में एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से इस अस्पताल में 860,000 डॉलर (₹6.9 करोड़) की लागत से इस रेडीऐशन थेरेपी केंद्र की स्थापना की। रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल और रोटरी क्लब यारमाउथ, रो ई मंडल 7780, साझेदार थे।

पुणे में ऐसे चार अस्पताल है जो रेडिएशन थेरेपी की पेशकश कर रहे है, लेकिन वाणिज्यिक दरों पर। परियोजना समन्वयक सुदीन आप्टे ने कहा कि ''यह पुणे, पिंपरी-चिंचवाड़ और पनवेल में रेडीऐशन उपचार की पेशकश करने वाली उनकी एकमात्र सुविधा होगी

बाएं से: पीडीजी रवी धोत्रे, RID डॉ महेश कोटबागी, रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स, टीआरएफ ट्रस्टी डॉ भरत पांड्या, रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल के पूर्व अध्यक्ष एम एल राठी, डीजी डॉ अनिल परमार, परियोजना संपर्क सुदीन आप्टे, डॉ हेमा परमार, RID ए एस वेंकटेश, विनीता वेंकटेश और डीजीएन डॉ निक क्रेयासिच नए विकिरण केंद्र में । DRFC गिरीश गुने, रोटरी क्लब पुणे प्रिस्टिन के अध्यक्ष आमोद फड़के और नितिन मुले पिछली पंक्ति में दिखाई दे रहे हैं। विकिरण ऑन्कोलॉजी के प्रमुख डॉ एम एच संजय, बाईं ओर दिखाई दे रहे हैं।

जिसकी लागत आमतौर पर ₹2 लाख (2500 डॉलर) के आसपास होगी और जो प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना के तहत आने वाले वंचितों के लिए नि:शुल्क होगी। 10,000 से अधिक रोगी इससे लाभान्वित होंगे जिससे इस परियोजना का प्रभाव मूल्य कम से कम 20 मिलियन डॉलर हो जाएगा। ''मैंने TRF के साथ पिछले पांच वर्षों के वैश्विक अनुदान डेटा की जांच की। शायद यह एशिया का सबसे बड़ा वैश्विक अनुदान है,'' उन्होंने जोन्स को हल्के-फुल्के अंदाज में टिप्पणी करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा, ''आपको न्यासियों की तुलना में संस्थान की बारीकियों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।''

कोटबागी ने कहा कि इस मंडल ने पिछले रोटरी वर्ष में TRF को 2.2 मिलियन डॉलर का योगदान दिया था। ''इस परियोजना ने हमें यह दिखाया है कि अगर हम रोटेरियन इसके लिए उदारतापूर्वक अपना दिल और पर्स खोलते है तो यह संस्थान क्या कर सकता है।''

पांड्या ने कहा, ''जब लोग अपना समय देने के लिए धन्यवाद कहते है, तो मैं कहता हूँ कि मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद क्योंकि हम यह देख पाए कि संस्थान एक समुदाय में परिवर्तन लाने के लिए क्या कर रहा है। इस परियोजना को देखकर खुशी होती है कि रोटरी कितने परिवारों को बचा सकती है और यह महसूस करके मेरे रोंगटे खड़े हो जाते है कि हमारा TRF दुनिया भर के लोगों के लिए यह सब संभव बनाता है।''

उत्पत्ति

इस अस्पताल के साथ क्लब का जुड़ाव 2019 में एक न्यूरो पुनर्वास केंद्र की स्थापना करने के समय से है। सुदीन आप्टे ने कहा, ''अस्पताल के CMD डॉ. चारुदत्त आप्टे ने हमसे अस्पताल में हमारे द्वारा रेफर किए गए रोगियों को नि:शुल्क उपचार प्रदान करने के वादे के साथ ऐसी और सुविधाएं प्रदान करने का अनुरोध किया।'' रोटरी और अस्पताल के बीच क्रमशः PDG रवी धोत्रे और डॉ आप्टे द्वारा 10 साल की साझेदारी के एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

इसके बाद रोटरी क्लब पुणे प्रिस्टिन और पुणे सेंट्रल ने वहाँ अनेक परियोजनाएं की। प्रिस्टिन ने एक कोविड ICU और कीमोथेरेपी वार्ड स्थापित किया और अनुदान एवं CSR निधियन के माध्यम से 175 बच्चों के लिए बाल हृदय सर्जरियों को प्रायोजित किया, जबकि रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल ने अस्पताल के नेफ्रोलॉजी वार्ड में 12 डायलिसिस मशीनें स्थापित की। रोटरी क्लब पुणे पाशान द्वारा एक कार्डियक डायग्नोस्टिक्स सुविधा स्थापित की गई।

दानकर्ता

बंकर के निर्माण एवं अन्य सहायक उपकरणों के लिए रोटरी क्लब पुणे प्रिस्टीन और अस्पताल द्वारा अतिरिक्त ₹4.8 करोड़ वित्त पोषित किए गए। पुणे न्यूरोसाइंसेज ट्रस्ट एंड रिसर्च सोसाइटी, एक गैर सरकारी संगठन और अब एक संस्थागत AKS सदस्य ने ₹1.3 करोड़ का दान दिया और इसके अतिरिक्त नागरिक बुनियादी ढांचे के लिए भी योगदान दिया। नाग फाउंडेशन ने ₹50 लाख देकर समर्थन किया। AKS सदस्य नितिन देसाई ने ₹1.3 करोड़ और उद्योगपति मधुसूदन राठी ने अपने पारिवारिक ट्रस्ट से ₹55 लाख का योगदान दिया। अध्यक्ष जोन्स ने रोटरी के साथ अस्पताल की सह-ब्रांडिंग करने के लिए एक साझेदारी का अनावरण किया और इसे 'रोटरी-सूर्य सह्याद्री अस्पताल' नाम दिया। नई रेडीऐशन चिकित्सा मशीन से प्रभावित होकर जोन्स के पति DGN डॉ निक क्रेयासिच ने कहा, ''यह इमारत उम्मीद जगाती है।''

चित्र: जयश्री

किरण ज़ेहरा

हम रोटरी की वजह से
बेहतर लोग है: रो ई अध्यक्ष

किरण ज़ेहरा

ऊपर: रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स और डीजीएन निक क्रेयासिच, रो ई निदेशक महेश कोटबागी, सुमेधा और डीजी एन नंदकुमार, विनीता और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश।

यहाँ कौन एक बेहतर व्यक्ति नहीं है क्योंकि आप रोटरी का हिस्सा है, क्योंकि इसने आपको वापस देने, सेवा करने और मेलजोल बढ़ाने के अवसर प्रदान किए है? मुझे लगता है कि हम में से प्रत्येक के पास रोटरी से जुड़ी एक कहानी है - हमारे जीवन की कुछ ऐसी चीजें जो इतनी खास और महत्वपूर्ण है जिन्हें हम कभी भी रोटरी के बिना अनुभव नहीं कर सकते थे,'' रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने चेन्नई में रो ई मंडलों 2981, 2982, 3000, 3231 और 3232 के रोटेरियनों को संबोधित करते हुए कहा।

''हम न केवल कार्यवाही करने वाले लोग है बल्कि उद्देश्य और प्रभाव लाने वाले लोग भी है। रोटेरियन सद्भावना, शांति का निर्माण करते है, मानवीय सेवा प्रदान करते है और सभी व्यवसायों में उच्च नैतिक मानकों को प्रोत्साहित करते है,'' उन्बोंने कहा।

जॉर्डन में मान शहर के एक अस्पताल हरे रंग के कपड़े पहने हुए उन्होंने रोटेरियन डॉ मार्क टर्पन्टाइन को सर्जरी करते हुए देखा। उन्होंने आगे झुककर रोगी को सर से पैर तक एक चादर में ढके हुए एक टेबल पर लैटे देखा और उस क्षेत्र में केवल एक चौकोर खुला हुआ हिस्सा था जहाँ डॉक्टर ऑपरेशन कर रहे थे। उस कमरे में एक एनेस्थेटिस्ट और एक नर्स थी। जब वह सिलाई कर रहे थे तो हर थोड़ी देर में वह रोगी के दिल के नीचे अपना हाथ ले जाते, उसे थोड़ा हिलाते और एनेस्थेटिस्ट से 'उसे थोड़ा गर्म करने' के लिए कहते, फिर वह दोबारा सिलाई शुरू करते थे। यह हिलाना-गर्म करना-सिलाई करना चलता रहा।

जब उन्होंने कमरे में मौजूद जोन्स पर ध्यान दिया तो उन्होंने उन्हें इसे करीब से देखने के लिए बुलाया। ''उन्होंने मेरा परिचय उस रोगी से करवाया, वह एक छह साल की सीरियाई शरणार्थी सलमा थी। अंतिम सिलाई के बाद उन्होंने एनेस्थेटिस्ट से उसे गर्म करने के लिए कहा। और उसी पल उस नन्ही सलमा का दिल धड़कने लगा... मुझे उसमें वापस जान आते हुए देखने का मौका मिला, ऐसा कुछ देखने का सौभाग्य भी अद्भुत है और फिर उसके माता-पिता के पास जाकर यह कहना कि मैंने उसके दिल की धड़कन देखी है, वह बच्ची बहुत अच्छी हो जाएगी और हमेशा खुश रहेगी। चारों तरफ खुशी के आंसू छलक पड़े। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि मैं रोटरी की वजह से एक बेहतर इंसान हूँ।''

उन्होंने आग्रह किया कि क्लब के सदस्यों के लिए एक गर्मजोशी वाले स्वागत का अनुभव और उनका रोटरी के साथ प्यार में पड़ना महत्वपूर्ण है। ''हमें उनका स्वागत करना चाहिए और उन्हें गौरवान्वित महसूस करवाना चाहिए कि इस संगठन में उनका समान योगदान है।''

DG एन नंद कुमार (रो ई मंडल 3232) ने रो ई अध्यक्ष को ''हमें प्रेरित करने और हमारे सदस्यों की देखभाल करने और उनको अपना महसूस करवाने के बारे में याद दिलाने के लिए'' उनका धन्यवाद दिया।

इससे पहले जोन्स ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन से मुलाकात की और उन्हें रोटरी के पोलियो उन्मूलन

कार्यक्रमों और इसके विभिन्न मानवीय पहलों के बारे में जानकारी दी।

रोटरेक्टर्स के साथ एक मुलाकात

रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स का चेन्नई में एथिराज कॉलेज फॉर वीमेन में ज़ोरशोर से स्वागत किया गया, जहां उन्होंने अपने इमेजिन इम्पैक्ट टूर पर रो ई मंडल 3232 के रोटरेकटरों से मुलाकात की। ''आपकी ऊर्जा बिजली की तरह है! मुझे बताया गया था कि यह मंडल सबसे बड़े महिलाओं के रोटरेक्ट क्लब का घर है और इसमें 29,000 रोटरेकटर है। निक और मुझे अंदाज़ा भी नहीं था जब तक कि हमनें दरवाजे से अंदर आकर आपकी उत्तेजित ऊर्जा का अनुभव नहीं किया... और मुझे यह बहुत पसंद आया,'' उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा। उन्होंने DRR गौतम राज और मीरा शर्मा, RAC मद्रास सेंट्रल के पूर्व अध्यक्ष, को इस अविश्वसनीय कार्यक्रम के लिए धन्यवाद दिया।

उनकी थीम *इमैजिन रोटरी* शक्तिशाली है, क्योंकि यह आप रोटरेकटरों को यह सोचने का अवसर देती है कि आप अपने समुदाय और हमारी दुनिया के लिए क्या करना चाहते है।'' रोटरेक्टरों को बड़े सपने देखने के लिए कहते हुए, उन्होंने कहा, ''रोटरेक्ट के साथ आपके पास एक बेहतर सार्वजनिक वक्ता बनने का मौका है, यह समझें कि विभिन्न सरकारें कैसे काम करती है, नेतृत्व और पेशेवर कौशल विकसित कीजिए, और सेवा के माध्यम से मज़े कीजिए।''

अध्यक्ष जोन्स ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन से मुलाकात की। (बाएं से): पीडीजी एस मुत्तुपलनियप्पन, डीजीएन क्रेयासिच, सरन वेल जयरामन, पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब चेन्नई कोस्टल; रो ई निदेशक वेंकटेश, डीजी नंदकुमार और उनकी पत्नी सुमेधा और मंडल सचिव श्रीराम दुव्वूरी चित्र में शामिल हैं।

जब रोटरी और रोटरेक्ट के बीच चयन करने के लिए कहा गया, तो रो ई अध्यक्ष को रोटरेक्ट का चुनाव करने के लिए तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रशंसा मिली। उन्होंने कहा, ''यदि आप कुछ करवाना चाहते है, तो उस काम को रोटरेक्ट को दे दें,'' रोटरेकटर अपने मजबूत सोशल मीडिया ज्ञान और उपस्थिति के साथ, व्हाट्सएप पर एक चैट के माध्यम से एक महीने में एक परियोजना को डिजाइन कर सकते है। ''वहीं रोटेरियन समितियों का गठन करेंगे और उसी परियोजना को पूरा करने में तीन से छह महीने लगाएंगे। हमें आपसे सीखना चाहिए।''

रोटरेक्टरों को ऊर्जावान बनाते हुए, उन्होंने कहा, ''हमारे संगठन का भविष्य यहीं बैठा है। आप दुनिया की सबसे अधिक दबाव वाली समस्याओं को हल करने में महान ऊर्जा, सकारात्मक नेतृत्व, प्रभावकारिता और तत्परता लाते है और हमें इस बारे में अलग तरह से सोचने के लिए चुनौती देते है कि हम अपने रोटरी व्यवसाय को कैसे करते है। एक साथ मिलकर हम महान चीजें हासिल कर सकते है।'' DEI के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा, विविधता हमारी ताकत है और रोटरेक्ट ने पहले ही इसका पता लगा लिया है। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि आपके मंडल के रोटरेक्ट सदस्यों में 50 प्रतिशत महिलाएं है! यहाँ मौजूद लड़कियां ज़रा शोर मचाए! उनकी टिप्पणी के बाद, ऑडिटोरियम खुशी की गड़गड़ाहट के साथ गूंज उठा।

नीचे: डीजी एन नंदकुमार और डीजीएन क्रेयासिच की उपस्थिति में डीआरआर गौतम राज के साथ बातचीत करते हुए जोन्स।

किरण ज़ेहरा

जोन्स ने उस समय को याद किया जब वह अपने पति DGN क्रेयासिच के साथ अमेज़ॅन में एक चिकित्सा मिशन के लिए गई थी। मैं दुनिया के विभिन्न हिस्सों के कई रोटेरियनों से मिली। रोटरी की अंतर्राष्ट्रीयता ने मुझे प्रेरित किया और मैं समझ गया कि हमारी राष्ट्रीयताओं, पृष्ठभूमि, धार्मिक मान्यताओं के बावजूद... रोटरी सदस्यों के रूप में हम सभी अपने परिवारों, हमारे देशों के लिए एक ही चीज़ चाहते है और रोटरी हमें इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। इसने मुझे टिके रहने के लिए प्रेरित किया। यह संगठन आपको दुनिया में और अपने जीवन में चिरस्थायी परिवर्तन लाने का अवसर देता है। ■

TRF का शानदार काम देखकर अच्छा लगा: इयान राइसली

वी मुत्तुकुमारन

बाएं से: नए डायलिसिस सेंटर में टीआरएफ ट्रस्टी चेयर इयान राइसली, ट्रस्टी डॉ भरत पांड्या, जूलियट राइसली, आईपीडीजी जे श्रीधर और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश। चित्र में पूर्व DRFC एम अंबलावनन भी शामिल हैं।

PDG जे श्रीधर और PDG एस मुत्तुपलनियप्पन (रो ई मंडल 3232) द्वारा चेन्नई में शुरू की गई दो चिकित्सा परियोजनाओं का दौरा करते हुए TRF न्यासी अध्यक्ष इयान राइसली ने कहा, ''कितना अद्भुत और शानदार दिन है। ये सभी चिकित्सा सुविधाएं उन रोटेरियनों की उदारता की वजह से संभव हो पाई है जिन्होंने हमारे वैश्विक अनुदान के माध्यम से दुनिया में दान करके अच्छा करने के लिए रोटरी संस्थान को चुना।''

चेन्नई के उत्तरी उपनगर विनयगपुरम में स्थित MN नेत्र अस्पताल के परिसर में 82वें ऑरेंज विजन सेंटर का शुभारंभ करते हुए राइसली ने कहा कि रो ई मंडल 3232 ने 200 विजन सेंटर स्थापित करने के लिए पांच अन्य रो ई मंडलों के साथ साझेदारी में 3.4 मिलियन डॉलर के 16 वैश्विक अनुदानों का लाभ उठाया/आवेदन किया। *प्रोजेक्ट ऑरेंज* निश्चित रूप से एक व्यापक, दीर्घकालिक टिकाऊ पहल है जो दशकों तक चलेगी,'' उन्होंने कहा। उन्होंने चरणबद्ध तरीके से नेत्र क्लीनिकों को शुरू करने में समर्पण के लिए मुत्तुपलनियप्पन की सराहना की। अपने संबोधन में, TRF न्यासी भरत पांड्या ने कहा, पांच इंद्रियों में से आंखें अद्वितीय है और हमारे जीवन में बहुत महत्व रखती है।

''आंखें हमारी आत्माओं का दर्पण होती है और यह नेत्र देखभाल परियोजना इस बात का एक बढ़िया उदाहरण है कि TRF लोगों की वास्तविक जरूरतों को कैसे पूरा करता है।'' PDG मुत्तु महत्वपूर्ण क्षेत्रों की बड़ी परियोजनाएं करने में विश्वास करते है और उन योजनाओं की कल्पना करने से लेकर उनके निष्पादन तक हर चरण पर ध्यान देते है। *प्रोजेक्ट ऑरेंज* ने वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को अपनाते हुए अन्य मंडलों के लिए अनुकरण करने हेतु एक महान उदाहरण प्रस्तुत किया है, उन्होंने आगे कहा।

अपनी प्रस्तुति में मुत्तुपलनियप्पन ने कहा कि नेत्र देखभाल केंद्रों की योजना पांच साल पहले 2017 में भारत सरकार के लक्ष्य *विज़न 2020* को पूरा करने में मदद करने के उद्देश्य से ₹3,000 करोड़ की लागत से 20,000 दृष्टि केंद्र स्थापित करने के विचार के साथ तैयार की गई थी। ''भारत में रोकी जा सकने योग्य दृष्टिहीनता से निपटने के लिए हमारे पास ऐसे केवल 1,000 केंद्र है।'' रोटरी की ब्रांड वैल्यू और इसके क्लबों की आंतरिक ताकत को देखते हुए, ''लगभग 17 अस्पतालों ने तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में दृष्टि केंद्रों को शुरू करने के लिए हमारे साथ साझेदारी की है। शंकर नेत्रालय, डॉ अग्रवाल नेत्र अस्पताल और अरविंद अस्पताल सहित शीर्ष अस्पतालों ने हमारे साथ हाथ मिलाया है।''

उन्होंने कहा कि पिछले एक साल में इस परियोजना की टीम ने 'प्रभावशाली परिणाम' देखे है क्योंकि नवीनतम शुरू किए केंद्र अब परिचालन मुनाफे पर चलकर आत्मनिर्भर हो गए और प्रत्येक HVC (हाइब्रिड विजन सेंटर) ने आसपास के क्षेत्रों के लगभग 60,000 लोगों को सेवा प्रदान की। वर्तमान में सात रो ई मंडलों के 36 क्लब और 10 विदेशी क्लब एवं मंडल *प्रोजेक्ट ऑरेंज* में शामिल है जिसका अगले कुछ वर्षों में पूरे भारत में कम से कम 1,000 HVC खोलने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है।

जहाँ रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स ने इस नए केंद्र में 10,000 डॉलर का निवेश किया है वहीं रोटरी क्लब चेन्नई कैपिटल ने PDG मुत्तु के साथ 25 HVC के एक क्लस्टर के लिए 50,000 डॉलर का निवेश किया है और उनकी पत्नी कमला ने इस क्लस्टर के लिए 30,000 डॉलर का एक मियादी उपहार दिया है, इस क्लस्टर को 381,718 डॉलर के एक वैश्विक अनुदान की मदद से कार्यान्वित किया जा रहा है। रोटरी क्लब बुकित जलील कुआलालंपुर, रो ई मंडल 3300, इसका वैश्विक साझेदार है।

RID 3232 ने प्रोजेक्ट ऑरेंज के चरण -1 में 200 विजन सेंटर स्थापित करने के लिए

$3.4 मिलियन
के
16
वैश्विक अनुदान प्राप्त किए हैं।

वैश्विक अनुदान की मदद

पूर्व में एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन, RYA मद्रास कॉस्मो फाउंडेशन, द्वारा संचालित कैंसर डिटेक्शन सेंटर में पांच मशीनों के साथ एक डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन करते हुए राइसली ने कहा कि ''एक अटल और दृढ़ नेता के रूप में,'' IPDG श्रीधर ने चेन्नई में 16 अस्पतालों एवं चिकित्सा केंद्रों में 135 डायलिसिस मशीनें स्थापित करने के लिए आगे बढ़कर

चेन्नई में नए विज़न सेंटर के उद्घाटन के अवसर पर ट्रस्टी चेयर राइसली और ट्रस्टी पांड्या। चित्र में (बाएं से) पीडीजी ISAK नज़र, डीजी डॉ एन नंदकुमार, प्रोजेक्ट ऑरेंज के चेयर गणेश सुब्बय्या, पीडीजी मुत्तुपलनियप्पन (दाएं से तीसरे) और डॉ सुमेधा नंदकुमार भी शामिल हैं।

बाएं से: अंबालावनन, डीजी नंदकुमार, रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स के प्रोजेक्ट चेयर आर एम सुरेश, ट्रस्टी पांड्या, ट्रस्टी चेयर राइसली, जूलियट, डीआरएफसी बी दाक्षायनी, पीडीजी मुत्तुपलनियप्पन और क्लब के अध्यक्ष सतीश जुपिटर।

नेतृत्व किया। उन्होंने कहा, ''इस नए केंद्र में, छोटे क्लब एक वैश्विक अनुदान परियोजना (58,000 डॉलर) करने के लिए एक साथ आएंगे जिससे चेन्नई के लोगों को बहुत फायदा होगा।'' रोटरी क्लब चेन्नई मुगप्पेयर के नेतृत्व में चौदह छोटे क्लबों ने नए डायलिसिस केंद्र की स्थापना हेतु 23,000 डॉलर और PDG अबीरामी रामनाथन ने मियादी उपहार के रूप में 36,000 डॉलर का योगदान दिया। उनका वैश्विक साझेदार रोटरी क्लब कार्लिंगफोर्ड, रो ई मंडल 9685, ऑस्ट्रेलिया है।

पांड्या ने कहा कि जहाँ एक दिन पहले बेंगलुरु के रोटेरियनों ने सामुदायिक परियोजनाएं करके राइसली के सामने अपनी उदारता का प्रदर्शन किया, वहीं चेन्नई के क्लबों ने वैश्विक अनुदानों के माध्यम से बड़े समुदायों तक पहुंचकर TRF के प्रभाव का प्रदर्शन किया। ''दुनिया की मधुमेह राजधानी माने जाने वाले भारत में किडनी रोग का बोझ इतना अधिक है कि 180,000 मशीनों की मांग के मुकाबले हमारे पास केवल 45,000 इकाइयां ही है। डायलिसिस केंद्रों की स्थापना में PDG श्रीधर की पहल अन्य गवर्नरों और रो ई मंडलों को इस अति आवश्यक चिकित्सा परियोजना को करने हेतु प्रेरित करेगी।''

रामनाथन ने कहा कि वह मांग और आपूर्ति के इस भारी अंतर को पूरा करने में श्रीधर के शानदार विचार से चकित है क्योंकि चेन्नई में किडनी के मरीज तेजी से बढ़ रहे है।

श्रीधर ने बताया कि रो ई मंडल 3232 के 51 क्लब सामुदायिक सेवा में समग्र दृष्टिकोण के साथ रोटरी के अन्य ध्यानाकर्षण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा साझेदारी और वैश्विक अनुदान निधियन के माध्यम से डायलिसिस परियोजना को लागू कर रहे है। परियोजना के अध्यक्ष शिवा इलंगोवन ने कहा, ''पांच मशीनों में से प्रत्येक, दिन में दो चक्र पूर्ण कर सकती है इस प्रकार हर दिन 10 जरूरतमंद रोगियों को लाभ मिलेगा। हम ₹1,350 प्रति सत्र की बाजार दर के मुकाबले ₹400 प्रति चक्र शुल्क लेंगे और हम मुख्यमंत्री बीमा योजना को लागू करने के लिए सरकार के साथ बातचीत कर रहे है जिससे गरीब रोगियों को नि:शुल्क इलाज मिल सके।''

चेन्नई के **16** अस्पतालों और चिकित्सा केंद्रों में **135** डायलिसिस मशीनें लगाई गईं।

उन्होंने कहा कि रोटरी क्लब चेन्नई मुगप्पेयर ने एक धर्मार्थ अस्पताल को पांच और मशीनें दान करने के लिए अधिक परिश्रम के साथ काम करना शुरू कर दिया है। RYA मद्रास कॉस्मो परियोजना के सचिव उमेश अग्रवाल ने कहा कि पास में स्थित उनके मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल में नौ मशीनें है जो पिछले 10 वर्षों में 50,000 से अधिक चक्र पूर्ण कर चुकी है, जिससे ज्यादातर ऐसे गरीब लाभान्वित हुए है जिन्हें नि:शुल्क सेवा के साथ पूरी सब्सिडी दी जाती है। इस परियोजना के शुभारंभ के दौरान DG एन नंदकुमार, रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश, DRFC बी दाक्षायनी, PDG ISAK नज़र, क्लब अध्यक्ष और मंडल पदाधिकारी उपस्थित थे।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

Rotary
PEOPLE OF ACTION

एक रोटरी स्टडी सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़

तमिलनाडु के मदुरै जिले में एक नगरपालिका शहर तिरुमंगलम के एक पूर्व डिप्टी कलेक्टर ने ग्रामीण छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षित करने और उन्हें यूपीएससी लायक बनाने के खातिर अपनी भव्य दृष्टि को साकार करने के लिए रोटरी के साथ मिलकर काम किया है। पिछले 18 वर्षों में के. गुरुसामी अपनी पत्नी ज्ञानवल्ली की सहायता से एक अध्ययन केंद्र - सह - पुस्तकालय चला रहे हैं, जो उनके 'गुरुसामी ज्ञानवल्ली ट्रस्ट' के माध्यम से मदुरै गांवों के आसपास काफी लोकप्रिय है।

सेवानिवृत्ति के बाद अपने समय का आनंद लेने की बजाय, गुरुसामी ने तिरुमंगलम में अपने अध्ययन केंद्र में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए गांवों में छात्रों की मदद करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है, जयंती सेनिवासन, चार्टर अध्यक्ष, चेन्नई के रोटरी ई - क्लब, रो ई मंडल 3232 कहती हैं।

सुंदरेश गुरुसामी ने जयंती राजा सेनिवासन (दाएं से दूसरे) की उपस्थिति में चेन्नई के रोटरी ई-क्लब की चार्टर अध्यक्ष ए जी अनुराधा वी गिरी को एक स्मृति चिन्ह भेंट किया। पीडीजी राजा सेनिवासन, रो ई मंडल 3000 के डीजी आई जेराल्ड, और गुरुसामी ज्ञानवल्ली ट्रस्ट के संस्थापक के गुरुसामी भी चित्र में शामिल हैं।

अब रोटरी क्लब तिरुमंगलम, रो ई मंडल 3000 ने मदुरै के निकट लालपुरम गांव में एक अध्ययन केंद्र खोलने के लिए ट्रस्ट के साथ साझेदारी की है। रोटरी इस दूरस्थ गांव में भी गुरुसामी द्वारा किए जा रहे अच्छे काम को दोहराएगी। रो ई मंडल 3000, 3212 और 3232 से बड़ी संख्या में रोटेरियन की उपस्थिति में अध्ययन केंद्र के उद्घाटन के अवसर पर डीजी जेराल्ड और राजा सेनिवासन मुख्य अतिथि थे। ■

काकीनाडा में नेत्र शिविर

अस्पताल में मोतियाबिंद के ऑपरेशन के बाद मरीजों के साथ रोटेरियन।

उप्पदा कोट्टापल्ली गांव में रोटरी क्लब काकीनाडा गोल्डन जुबली, रो ई मंडल 3020 द्वारा आयोजित एक मेगा नेत्र जांच शिविर में लगभग 300 रोगियों की जांच की गई, जिनमें अधिकतर मछुआरे परिवार थे। इनमें से 62 की पहचान मोतियाबिंद सर्जरी के लिए की गई थी, जो श्री किरण आई इंस्टीट्यूट, काकीनाडा में दो बैचों में आयोजित की गई। नेत्र शिविर और सर्जरी 40,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना का हिस्सा थे। हमने नेत्र संस्थान को दो आंख परीक्षण मशीन प्रदान की, जीके श्रीनिवास, क्लब के पिछले अध्यक्ष ने कहा जो रोटरी क्लब सौहेगन वैली (नैशुआ), रो ई मंडल 7870, अमेरिका में मेडिकल प्रोजेक्ट के लिए अपने वैश्विक भागीदार के रूप में शामिल थे। ■

आपके गवर्नर्स

कैलाश जेठानी
रियल एस्टेट
रोटरी क्लब ठाणे ईस्ट, रो ई मंडल 3142

आइ जेराल्ड
पावर इलेक्ट्रॉनिक्स
रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली रॉक सिटी, रो ई मंडल 3000

रोटेरियनों के लिए नेतृत्व कार्यशालाएं

फैब 10 परियोजनाओं के अंतर्गत, ठाणे और उसके आसपास के इलाकों में उच्च प्रभाव, उच्च दृश्यता वाली सेवा करने के लिए क्लब एक साथ आएंगे। कैलाश जेठानी कहते है, ''शहरी झुग्गियों का अंगीकरण, हैप्पी स्ट्रीट्स, डिजी वॉकथॉन, किसी कारण के लिए मैराथन, बस अड्डा (डिपो) और बालवाड़ियों और आंगनवाड़ियों के लिए बच्चा पार्टी जैसी परियोजनाओं में बहुत दृश्यता है और ये जनता के बीच रोटरी का प्रदर्शन करेंगी।'' एक एप डिजी वाकाथॉन के माध्यम से रोटेरियनों, उनके परिवारों और रिश्तेदारों ने अब तक ₹30 लाख कीमत के अंक अर्जित किए है, जिन्हें सेवा परियोजनाओं के लिए CSR कोष में अनुवादित किया जाएगा। 600 नए सदस्यों को जोड़कर संख्या को 4,000 से अधिक ले जाने के लिए उत्सुक जेठानी का कहना है कि ''ध्यान केवल आसपास के इलाकों पर होगा, न कि ग्रामीण क्षेत्रों पर।'' वह 2,800 की मौजूदा संख्या में 650 नए रोटरेक्टर जोड़ना चाहते है।

साक्षरता, पर्यावरण, जल और स्वच्छता एवं आर्थिक और सामुदायिक विकास जैसे क्षेत्रों में लगभग 5-6 वैश्विक अनुदान परियोजनाएं (250,000 डॉलर) पंक्तिबद्ध है। ''हम *नेतृत्व* सेमिनारों और कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित कर रहे है। सेलेब्रिटीज़ अपनी सफलता की यात्रा को याद करने के लिए मंच साझा करेंगे।'' TRF के लिए उनका लक्ष्य 600,000 डॉलर एकत्रित करने का है।

कमज़ोर से मजबूत क्लबों का बढ़ता अनुपात उन्हें चिंतित कर रहा है। जेठानी कहते है, ''यदि कमजोर क्लब अपनी असली क्षमता का एहसास कर सके, तो हम अवरोधन में सफल हो सकते है।'' वह 2005 में सेवा और मैत्री का आनंद लेने के लिए रोटरी में शामिल हुए थे।

रोटरी के विकास के लिए रोटेरियनों का सशक्तिकरण

क्लबों को बढ़ाने और नए सदस्यों को जोड़ने के बजाय, जेराल्ड एक रोटेरियन की आंतरिक विशेषताओं को मजबूत करने के लिए उत्सुक है ताकि वह रोटरी के विकास में योगदान करने के लिए आर्थिक और शारीरिक रूप से पर्याप्त मजबूत हो सके,'' वह कहते है। उसी समय, क्लबों को नए सदस्यों को व्यस्त रखना चाहिए ताकि वे सम्मिलित रह सके। 132 क्लबों में 5,400 रोटेरियन होने के कारण, वह 5 प्रतिशत की शुद्ध सदस्यता वृद्धि के साथ नए क्लब शुरू करना चाहते है। जेराल्ड को कम से कम 500 रोटरेकटरों को जोड़ने का भरोसा है, और ''नया रो ई शुल्क यहां एक बड़ी समस्या नहीं है क्योंकि उनमें से ज्यादातर भुगतान करने के लिए तैयार है।''

प्रत्येक क्लब VAO से लेकर शीर्ष IAS अधिकारियों तक की सरकारी नौकरियों की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए एक गांव में एक रोटरी स्टडी सेंटर शुरू करेगा। ''हम तीन साल की स्थिरता के आधार पर काम कर रहे है और उम्मीद करते है कि प्रत्येक केंद्र में कम से कम 3-4 उम्मीदवार इस अवधि में सफल होंगे,'' वह कहते है। कम से कम 25 एकड़ मियावाकी वन बनाने के लिए लगभग एक लाख पौधे वितरित किए जाएंगे; और 50 एकड़ तालाबों/जल निकायों का जीर्णोद्धार किया जाएगा। ''हमनें वैश्विक अनुदानों के लिए आवेदन नहीं किया है।'' TRF में देने के लिए, वह 1 मिलियन डॉलर का लक्ष्य रख रहे है। 1999 में एक व्यावसायिक प्रतियोगी से प्रभावित होकर वह रोटरी में शामिल हुए।

से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

वी पी कालता

जीवन बीमा, रोटरी क्लब शिमला, रो ई मंडल 3080

क्लब ग्रामीण परियोजनाओं को शुरू करेंगे

पिछले साल रोटरी में शामिल होने वाले 1,400 नए सदस्यों में से, अधिकांश अनुस्थापन कार्यक्रमों और व्यस्तता के अभाव में चले गए। ''हमें नए सदस्यों को बनाए रखने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। 800 की शुद्ध सदस्यता के लक्ष्य के साथ, उन्हें अगले साल जून तक 18 नए क्लब बनाने का भरोसा है। मेरा ध्यान छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में 50 सैटेलाइट क्लबों को अधिकृत करने पर होगा। रोटरेक्ट के लिए,'' वह 50 नए क्लब शुरू करना चाहता है और 650 नए रोटरेक्टरों को शामिल करना चाहते है।

रोटरी चलो गांव की ओर इस वर्ष की मंडल थीम है। प्रत्येक क्लब सामुदायिक परियोजनाओं को लागू करने के लिए एक गांव को गोद लेगा। ''हमें अच्छी प्रतिक्रिया मिली क्योंकि व्यावसायिक केंद्र ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को रोजगार देने के लिए कौशल प्रदान करते है।'' दूरदराज के इलाकों में चिकित्सीय शिविर लगाने के लिए दो हेल्थकेयर वैन क्लबों का दौरा कर रही है। तीन चेक डैम (वैश्विक अनुदान: प्रत्येक ₹40-50 लाख); यूपी के सारणपुर जिला अस्पताल में एक ब्लड बैंक (वैश्विक अनुदान: ₹25 लाख); रोटरी क्लब पानीपत मिडटाउन एक डायलिसिस केंद्र (वैश्विक अनुदान: ₹35 लाख) खोलेगा, जो पंक्तिबद्ध है। TRF में देने का उनका लक्ष्य 500,000 डॉलर का है। कालता ने *रोटरी आश्रय* की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो कैंसर रोगियों को व्यक्तिगत देखभाल प्रदान करता है। वह 2000 में रोटरी क्लब रामपुर बुशर के चार्टर सदस्य के रूप में रोटरी में शामिल हुए।

अशोक कंटूर

चार्टर्ड अकाउंटेंट, रोटरी क्लब दिल्ली वेस्ट, रो ई मंडल 3011

शत-प्रतिशत डिजिटलीकृत मंडल क्लब

1 जुलाई से, सभी 122 क्लबों ने अपने दैनिक संचालन को डिजिटल कर दिया है और यहां तक कि गवर्नर के दौरे के दौरान भी, परियोजनाओं को ऑनलाइन प्रस्तुतियों के माध्यम से सुनाया जाता है। ''हम पर्यावरण को बचाने के उद्देश्य से 100 प्रतिशत डिजिटलीकरण में परिवर्तित होने वाले पहले मंडल है,'' अशोक कंटूर कहते है। चार नए क्लबों का गठन किया गया था और पांचवे के अधिकरण की प्रक्रिया चल रही है; कर्मचारियों की संख्या 550 से बढ़ाकर 5,000 से अधिक की जाएगी। व्यावसायिक केंद्र शुरू करने के इच्छुक क्लबों को परियोजना के लिए स्थान की पहचान करने के लिए दिल्ली सरकार और नगर निकाय से मदद मिलेगी। गर्भवती महिलाओं की डिलीवरी की सुविधा के लिए, CSR कोष और सदस्य योगदान द्वारा ₹2 करोड़ की लागत से फतेहपुर, बेरी, स्थित नगरपालिका भवन में नर्सिंग, शिशु देखभाल, शिशु वार्ड और एक ओटी स्थापित किया जाएगा।

साकेत में 700 साल पुरानी सतपुला झील को पुनर्जीवित किया जाएगा (वैश्विक अनुदान/CSR: ₹60-70 लाख)। पार्कों में लगभग 1,000 निष्क्रिय बोरवेलों को भूजल रिचार्ज करने के लिए वर्षा जल संचयन गड्ढों (₹50 लाख) में परिवर्तित किया जाएगा, और 100 से अधिक स्कूलों में हाथों की धुलाई के स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। TRF में देने का उनका लक्ष्य 1.2 मिलियन डॉलर का है। रोटरी में अपनी रजत जयंती मनाते हुए, कंटूर याद करते है, जब मैं अपने बच्चों को एक डॉक्टर के पास ले गया, तो मैंने उनके डेस्क पर एक रोटरी व्हील देखा और उत्सुक हो गया। तब मेरी यात्रा 1997 में शुरू हुई।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3231 ने पौधे लगाये

डीजी जे के एन पलनी ने अन्य रोटेरियन की मौजूदगी में पौधारोपण किया।

कई पर्यावरणीय मुद्दों का मुकाबला करने के उद्देश्य से मंडल के रोटेरियन ने तमिलनाडु के कटपाडी में एक झील में पूरी तरह से नियोजित 1 लाख ताड़ के बीज में से 10,000 पौधे लगाए। इस अवसर पर डीजी जे के एन पलनी और मंडल पर्यावरण अध्यक्ष जोसफ अन्नैया भी उपस्थित थे। ■

कागज-रहित RID 3011

डीजी अशोक कंटूर

पर्यावरण की रक्षा के लिए RID 3011 डिजिटल हो रहा है। मंडल से संबंधित सभी दस्तावेज, रिपोर्टिंग की प्रक्रिया, न्यूज़लेटर और सोशल मीडिया डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होंगे। ■

क्लब ने युवा खेल सितारे को किया सम्मानित

दिव्यांशी गौतम को चेक देते क्लब सदस्य प्रवीण अग्रवाल।

अंडर-13 राज्य बैडमिंटन विजेता दिव्यांशी गौतम के लिए रोटरी क्लब आगरा, रो ई मंडल 3110, और प्रखर अग्रवाल बैडमिंटन अकादमी द्वारा एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। दिव्यांशी को क्लब के सदस्य और प्रखर अग्रवाल मेमोरियल के निदेशक प्रवीण अग्रवाल से ₹51 हजार मिले। ■

आसनसोल में रक्तदान शिविर

क्लब सचिव सुजाता मुखर्जी, क्लब के अध्यक्ष तापस घोष (उनकी बाईं ओर) की उपस्थिति में एक दाता को प्रमाण पत्र देती हुई।

अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर रोटरी क्लब आसनसोल ग्रेटर, रो ई मंडल 3240, द्वारा एक रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया था। शिविर में रक्त की 40 यूनिट्स एकत्र की गई और दानदाताओं को खाने के पैकेट, कॉफी, दूध, और रैनकोट वितरित किए गए। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3160 में ₹25 करोड़ के प्रोजेक्ट्स

टीम रोटरी न्यूज़

पीआरआईपी शेखर मेहता के साथ रो ई निदेशक महेश कोटबागी और उनकी पत्नी अमिता, पीडीजी रवि वडलामणि, आईपीडीजी वी थिरुपति नायडू, उनकी पत्नी निर्मला और रोटरी क्लब होस्पेट के पूर्व अध्यक्ष राजेश कोरीशेट्टार, नायडू द्वारा प्रायोजित एक एम्बुलेंस के सामने।

अपने रो ई मंडल 3160 के लिए नए मानदंड स्थापित करते हुए, आईपीडीजी तिरुपति नायडू अपने कार्यकाल की शुरुआत के लिए जो कुछ भी हासिल करना चाहते थे, उसे हासिल करके खुश हैं। उन्होंने 125 महिलाओं सहित 400 नए रोटेरियंस को शामिल किया और पांच नए क्लबों को चार्टर्ड किया। नायडू ने जिला क्लबों द्वारा ₹25 करोड़ की सेवा परियोजनाओं को शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''हमने सरकारी कॉलेजों में 5,000 नवीनीकृत कंप्यूटर स्थापित किए। अपनी यात्रा के दौरान, पीआरआईपी शेखर मेहता ने एक ब्लड बैंक और एक आईसीयू एम्बुलेंस की नींव रखी, दोनों परियोजनाएं रोटरी क्लब होस्पेट द्वारा शुरू की जा रही हैं। नायडू ने अपने दिवंगत पिता वी रामी रेड्डी की याद में ₹48 लाख की लागत वाली आईसीयू एम्बुलेंस का प्रायोजन किया।

क्लबों ने इन्फोसिस और कॉग्निजेंट टेक्नोलॉजीज की मदद से 1.5 लाख कोविड वैक्सीन खुराक दी। क्लब द्वारा संचालित विभिन्न चिकित्सा केंद्रों में लगभग 30,000 फिजियोथेरेपी की गई।

एक वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत, ''हमने रो ई मंडल 3150 के साथ एक संयुक्त परियोजना में 'श्री सत्य साई संजीवनी अस्पताल', रायपुर में 138 बाल चिकित्सा हृदय सर्जरी की है। हमने सर्जरी के लिए भाग-वित्त पोषण के रूप में अस्पताल को ₹2.1 करोड़ का भुगतान किया,'' उन्होंने कहा। रो ई मंडल 3160 में डायलिसिस केंद्रों ने गुर्दे की विफलता से पीड़ित मरीजों के लिए 5,000 सत्र किए हैं। अपने कार्यकाल के दौरान, नायडू ने टीआरएफ के लिए क्लबों से 37,000 डॉलर एकत्र किए, ''शायद जिले से अब तक का सबसे अधिक सहयोग।'' ■

परियोजना सहयोग ने नई ऊंचाइयों को छुआ।

कृत्रिम हाथ के प्राप्तकर्ता के साथ आईपीडीजी अजय मदान।

अगस्त 2021 में शुरू की गई *परियोजना सहयोग* की सफलता के बाद, जो रो ई मंडल 3080 में विकलांग को कृत्रिम अंग प्रदान करता है, डीजी वी पी कल्टा ने इसे सभी क्लबों के अनुकरण के लिए एक जिला परियोजना के रूप में अपनाया है। अब तक, परियोजना ने प्रति रोगी ₹35,000 की औसत लागत से 155 से अधिक विकलांगों का पुनर्वास किया है। परियोजना की परिकल्पना रोटेरियन सलिल देव सिंह बाली ने की थी और आईपीडीजी अजय मदान ने अगस्त 2021 में इसका शुभारंभ किया था।

परियोजना के लिए वित्तपोषण दाताओं और कंपनियों से आया था; और क्लब ने अपने कोष या भंडार से कोई धन नहीं लिया है। ''हम उन विकलांग व्यक्तियों को उच्च गुणवत्ता वाले कृत्रिम अंग प्रदान करते हैं जिन्होंने एक हाथ या पैर खो दिया था, ताकि वे अपनी आजीविका अर्जित कर सकें और गरिमा के साथ रह सकें,'' परियोजना अध्यक्ष सलिल बाली ने कहा। तकनीकी टीम का नेतृत्व इस क्षेत्र में 40 वर्षों के अनुभव के साथ एक कृत्रिम-अंग विशेषज्ञ रोटेरियन डॉ वीजेएस वोहरा ने िकया था।

प्रारंभ में ऑटो ड्राइवर, सुरक्षा गार्ड, घरेलू सहायता आदि के रूप में कार्यरत 10 विकलांगों को कृत्रिम अंग लगाया गये थे। ''इसकी सफलता से उत्साहित होकर, हमने जिले भर में परियोजना का विस्तार किया और 100 क्लबों में से 55 ने संभावित लाभार्थियों की पहचान करने और उनके लिए कृत्रिम अंगों को प्रायोजित करने में भाग लिया।'' ■

आसनसोल में एक पहियों पर रेस्तरां

जी सिंह

ट्रेनों से यात्रा करने वाले अधिकांश यात्रियों को खानपान सेवाओं द्वारा परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता से सुखद अनुभव नहीं होता। भोजन अक्सर स्वादिष्ट न होने के साथ-साथ किफायती भी नहीं होता।

पश्चिम बंगाल रेलवे के आसनसोल संभाग ने दो परित्यक्त ट्रेन कोचों को शाकाहारी और मांसाहारी भोजन सुविधाओं के साथ विशाल रेस्तरां में बदल दिया है।

रेस्टोरेंट ऑन व्हील्स नामक दो अलग-अलग रेस्तरां के रूप में संचालित होने वाले इन दोनों कोचों में सामने की ओर एक भाप इंजन है जो भारतीय रेलवे के गौरवशाली युग की याद दिलाता है। रेलवे का दावा है कि यह रेस्टोरेंट ऑन व्हील्स भारत में अपनी तरह का पहला है जहाँ पुराने कोचों को नवीनीकृत करके भोजन अड्डों में तब्दील किया गया है।

कोलकाता से लगभग 210 किलोमीटर दूर आसनसोल रेलवे स्टेशन के बाहर स्थित इस सुविधा का उद्घाटन फरवरी 2020 में तत्कालीन स्थानीय भाजपा सांसद बाबुल सुप्रियो ने किया था।

कोचों की सजावट को बदलते समय उनकी मौलिकता को बनाए रखा गया। रेलवे का लक्ष्य अगले पांच साल में ₹50 लाख का गैर किराया राजस्व जुटाने का है।

शाकाहारी और मांसाहारी व्यंजन

दो कोचों में दो रेस्तरां - चाई चुन और वाउ! भोजन - क्रमशः शाकाहारी और मांसाहारी व्यंजन परोसते है। चाय चुन विभिन्न तरह के नाश्ते और विभिन्न प्रकार की चायों के साथ उच्च गुणवत्ता वाली दार्जिलिंग चाय परोसता है, जबकि वाउ! भोजन दोपहर और रात के खाने के लिए मांसाहारी व्यंजन परोसता है।

''हमारे पास 55-60 लोगों के बैठने की क्षमता है और इन कोच को वातानुकूलित और गैर-वातानुकूलित क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। हमारे पास एक रसोई घर है जहाँ हम अपने तीन रसोइयों की मदद से 300 से अधिक खाद्य पदार्थ पकाते है, जिनमें ज्यादातर मांसाहारी व्यंजन होते है। यात्रियों के अलावा पड़ोसी क्षेत्रों के परिवार नियमित रूप से यहाँ आकर रेलवे कोच के अंदर भोजन करने का आनंद लेते है। यह रेस्तरां फोटो लेने का एक शानदार स्थल है,'' एक कर्मचारी, फरहान अंसारी ने कहा।

प्रसन्न ग्राहक

भोजनालयों को लेकर भी ग्राहकों से अच्छी समीक्षा मिली। ''मैं यहाँ पर एक यूट्यूब वीडियो देखने के बाद आया। अंदरूनी हिस्सों को खूबसूरती से सजाया गया है और खाना स्वादिष्ट एवं किफायती है,'' कोलकाता से आए एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर अजय मित्रा (34) ने कहा, आगे यह कहते हुए कि बड़े रेलवे स्टेशनों के बाहर इस तरह के भोजन अड्डे और खोले जाने चाहिए क्योंकि इससे दूरस्थ इलाके से यात्रा करने वालों को खाने का एक अनूठा अनुभव मिलेगा। ग्राहकों ने यह भी सुझाव दिया कि रणनीतिक रूप से स्थापित होने के कारण यहाँ से गुजरने वाली ट्रेनों में भी भोजन की आपूर्ति की जा सकती है। ''रेलवे ने इन भोजनालयों को अपनी स्वयं की जमीन पर स्थापित किया है जो रेलवे स्टेशन के ठीक बाहर है। रेलवे को भोजन की ऑनलाइन बुकिंग को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि ट्रेन के स्टेशन पहुंचने के बाद इसकी डिलीवरी की जा सके। इससे न केवल सरकार का राजस्व बढ़ेगा बल्कि इससे स्थानीय लोगों की आजीविका के अधिक अवसर भी उत्पन्न होंगे।''

महामारी की चुनौती

हालांकि कोविड महामारी के प्रतिबंधों के कारण उद्घाटन के बाद से इन रेस्तरांओं को लगातार बंद का सामना करना पड़ा जिससे उनका व्यवसाय बुरी तरह प्रभावित हुआ। दूसरी लहर के बाद स्थिति में सुधार होने पर इस साल के मध्य तक इन सेवाओं को दोबारा शुरू किया गया।

दोनों रेस्तरां के कर्मचारियों ने स्वीकार किया कि महामारी से पहले ये भोजनालय बड़े पैमाने पर सफल

साबित हुए थे। ''हमारे पास टेबल पाने का इंतजार करने वाले लोगों की एक लंबी कतार होती थी। हमें उनसे कहना पड़ता था कि वे भीड़ से बचने के लिए पहले से बुकिंग कराएं। हमने कतार में इंतजार करने वाले लोगों के बैठने के लिए अपने भोजनालय अड्डों के बाहर कुर्सियां भी लगाईं, वाउ!'' भोजन के शेफ कुमार थापा ने कहा।

''जब महामारी के दौरान भीड़ को रोकने के लिए ट्रेन सेवाएं कम करके पुनर्गठित की गई, तो लोगों ने वित्तीय बाधाओं और वायरस के चपेट में आने के डर से अक्सर बाहर भोजन करना बंद कर दिया।''

फरहान ने कहा कि उन्हें अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अधिक प्रचार की आवश्यकता है। मौजूदा सोशल मीडिया अभियान इन भोजनालयों को लोकप्रिय बनाने में काफी कारगर सिद्ध होगा। ''हमारे लिए सबसे बड़े फायदे की बात यह है कि रेलवे स्टेशन के ठीक बाहर ये भोजनालय रणनीतिक रूप से स्थापित है लेकिन यहाँ पर ज्यादातर स्थानीय ग्राहक आते है क्योंकि बाहरी लोगों को इसके बारे में पता नहीं है।'' ■

TRF की मदद से अच्छे कार्य

मुजफ्फरनगर के लिए एक डायलिसिस सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़

RIDE अनिरुधा रॉय चौधरी, डीजी दिनेश कुमार शर्मा (दाएं से तीसरे) और पीडीजी मनीष शारदा (बाएं से तीसरे) की मौजूदगी में डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन करते हुए।

रोटरी क्लब मुजफ्फरनगर मिडटाउन, RID 3100 ने वैश्विक अनुदान के माध्यम से मुजफ्फरनगर मेडिकल कॉलेज में तीन डायलिसिस मशीनें लगाईं। जिसमें आरसी सिंगापुर हार्टलैंड्स अंतरराष्ट्रीय भागीदार था और परियोजना की लागत ₹20.32 लाख थी। भारत के बारह रोटरी जिलों ने भी परियोजना के लिए समर्थन दिया।

RIDE अनिरुधा रॉय चौधरी ने डीजी दिनेश कुमार शर्मा, पीडीजी मनीष शारदा और एजी सिद्धार्थ सिंघल की उपस्थिति में सेंटर का उद्घाटन किया। ■

नवजात इकाई, रोटरी क्लब तिरुचेंगोड का गौरव

वी मुत्तुकुमारन

माताओं एवं शिशुओं को बचाना रोटरी क्लब तिरुचेंगोड, रो ई मंडल 2982, के रोटेरियनों के लिए सिर्फ एक लक्ष्य ही नहीं है, बल्कि उनके परियोजना निष्पादन का एक मार्गदर्शक मंत्र है। तिरुचेंगोड सरकारी अस्पताल के नवजात वार्ड में चल रही यह भव्य परियोजना मातृत्व और बाल देखभाल प्रदान कर रही है, जो रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक है, इस प्रकार एक महीने में कम से कम 100 गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली माताएं और 60-70 नवजात शिशु लाभान्वित हो रहे है।

चूंकि अब *प्रोजेक्ट सेविंग मदर्स एंड बेबीज़* शहर में चर्चा का विषय बना हुआ है, इसलिए निजी अस्पतालों द्वारा गंभीर समस्या वाले शिशुओं की माताओं को तमिलनाडु के पश्चिमी हिस्से जैसे इरोड, सलेम, नमक्कल, संकागिरी और मेट्टूर से तिरुचेंगोड के सरकारी अस्पताल में भर्ती होने के लिए रेफर किया जाता है। परियोजना प्रमुख PDG टी शण्मुगसुंदरम कहते है, ''चूंकि रोटरी ने वर्षों से वैश्विक अनुदान के माध्यम से नवजात वार्ड में उच्च तकनीक वाली नैदानिक सुविधाएं स्थापित की है, इसलिए आसपास के शहरों के PHC कुछ जटिलताओं वाली गर्भवती महिलाओं को सुरक्षित प्रसव के लिए इस अस्पताल में निर्देशित करते है।''

2008-09 में, क्लब ने इस सरकारी अस्पताल में ₹4 लाख की लागत से नवजात वार्ड की स्थापना की थी। ''हमने बहुत ही सीमित सुविधाओं और उपकरणों के साथ इस मातृत्व वार्ड को शुरू किया था। लेकिन नवजात शिशु देखभाल की मांग में वृद्धि को देखते हुए, हमने 2020 में ₹80 लाख के दो वैश्विक अनुदानों की मदद से इसे अपग्रेड किया,'' वह याद करते है। रोटरी क्लब साओ पाउलो सुल, ब्राजील, रो ई मंडल 4420, रो ई मंडल 6060 के दो अमेरिकी क्लब और रो ई मंडल 9570, ऑस्ट्रेलिया, वैश्विक साझेदार थे। नवजात वार्ड में ह्यूमिडिफायर के साथ शिशु वेंटिलेटर, कलर डॉपलर, हाई-फ्लो नेजल कैनुला (दो इकाई), BiPAP और CAPAP मशीनें, इन्फ्यूजन पंप, मल्टी-पैरा मॉनिटर (दो इकाई) और ओटोएक्कॉस्टिक एमिशन (OAE) जैसे हाईटेक डिवाइस लगाए गए जिससे नवजात वार्ड की चिकित्सा सेवाओं में इजाफ़ा हुआ।

सरकारी अस्पताल में एक बच्चे का क्रिटिकूल उपकरण द्वारा इलाज।

एक जीवन रक्षक उपकरण

इनमें से एक उपकरण, क्रिटीकूल (₹20 लाख) एक नवजात शिशु को विशेष कंबलों से ढंकता है ताकि धीरे-धीरे 72 घंटे की प्रक्रिया के माध्यम से शिशु के तापमान को लगभग 36.5 डिग्री सेल्सियस (सामान्य) से 32-33 डिग्री सेल्सियस तक लाया जा सके। शण्मुगसुंदरम समझाते है, ''फिर यह तापमान 12 घंटे की प्रक्रिया में धीरे-धीरे बढ़ता है ताकि रक्त सामान्य रूप से बच्चे के मस्तिष्क और अन्य अंगों में प्रवाहित हो सके। यह अल्ट्रा-टेक डिवाइस किसी अन्य जिला मुख्यालय या मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में उपलब्ध नहीं है और केवल चेन्नई के इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ, एग्मोर, में पाई जाती है।'' क्लब के अध्यक्ष के रमेश कहते है कि पिछले दो वर्षों में क्रिटीकूल ने 12 कम वजन वाले, निम्न रक्त स्तर वाले शिशुओं को बचाया है और पिछले 10 वर्षों में मातृत्व विंग में इस उन्नत नवजात इकाई से 1,500 से अधिक शिशु और 5,000 माताएं लाभान्वित हुई है।

सभी 70 सदस्य पूरे वर्ष इस नवजात परियोजनाओं के लिए उदारतापूर्वक दान करते है। ''हमने सरकारी अस्पताल में ₹1.5 करोड़ से अधिक की परियोजनाएं की है।

बाएं से: सीएमओ डॉ तेनमोळी, स्वास्थ्य सेवाओं के संयुक्त निदेशक डॉ शांति, तत्कालीन नामक्कल जिला कलेक्टर के मेगराज, तमिलनाडु के पूर्व मंत्री पी तंगमणि, अपने बच्चे के साथ लाभार्थी मां, पीडीजी टी शण्मुगसुंदरम और डॉ प्रकाश।

त्योहारों और विशेष अवसरों पर हम गर्भवती महिलाओं को उपहार देते है,'' वह कहते है। 45 साल पुराने इस क्लब ने ठज प्लांट, ऑक्सीजन सिलेंडर, ब्लड बैंक, ह्यूमन मिल्क बैंक और पोस्ट मैटरनिटी वार्ड भी स्थापित किया है। ''कोविड महामारी के दौरान हमने अस्पताल में ₹15 लाख की परियोजनाएं की है। हर साल क्लब TRF को 12,000-15,000 डॉलर देता है और उसके पास छह प्रमुख दानकर्ता है।'' हाल ही में डॉक्टरों ने एक बायोवेस्ट इंसीनरेटर मांगा है जो जल्द ही दान किया जाएगा। ■

तूतीकोरिन में बाल चिकित्सा हृदय जांच शिविर

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी कल्ब स्पिक नगर, रो ई मंडल 3212, कोविड महामारी के कारण 2020 में विराम के साथ पांच वर्षों से बाल चिकित्सा हृदय जांच शिविरों का आयोजन कर रहा है। 'गोल्डन हार्ट' कैंप, जैसा कि इसे कहा जाता है, इस साल अगस्त में क्लब की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। यह एसपीआईसी, ग्रीनस्टार फर्टिलाइजर्स और अपोलो चिल्ड्रेन हॉस्पिटल, चेन्नई के सहयोग से तूतीकोरिन के स्पिक नगर मेडिकल सेंटर में आयोजित किया गया था। अपोलो चेन्नई के मुख्य कार्डियोथोरेसिक और वैस्कुलर सर्जन डॉ नेविल ए जी सोलोमन ने 12 डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ के साथ युवा रोगियों की जांच की।

शिविर से पहले अध्यक्ष एस अरुण जय कुमार के नेतृत्व में क्लब के सदस्यों ने पीएचसी और शहर और उसके आसपास के गांवों के 20 स्कूलों में शिविर के बारे में प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने कहा ''हमने सांस लेने में कठिनाई, कम वजन और हृदय रोगों से संबंधित अन्य लक्षणों वाले बच्चों की पहचान करने के लिए पीएचसी और स्कूल प्रबंधन के डॉक्टरों से संपर्क किया।'' कैंप में पीडीजी एच शाहजहां और एजी रथकृष्णन मौजूद थे, जिसका उद्घाटन एएम इंटरनेशनल होल्डिंग्स के संस्थापक/अध्यक्ष अश्विन सी मुथैया ने किया।

पीडीजी एच शाहजहां (दाएं)चिकित्सा शिविर में एक बल रोगी की जांच करते हुए। रोटरी क्लब स्पिक नगर के सदस्य भी चित्र में शामिल हैं।

नब्बे बच्चों की जांच की गई और हृदय रोग से पीड़ित 11 बच्चों को उनके माता-पिता के साथ शल्य चिकित्सा के लिए चेन्नई के अपोलो अस्पताल भेजा गया। सभी चिकित्सा खर्चों को एएम फाउंडेशन, SPIC और ग्रीनस्टार फर्टिलाइजर्स द्वारा वित्त पोषित किया गया था। क्लब ने सभी पंजीकरणकर्ताओं के लिए शिविर स्थल से आने-जाने, नाश्ते और दोपहर के भोजन के लिए परिवहन की व्यवस्था की।

स्पिक नगर के लायंस क्लब के सहयोग से एक रक्तदान और वयस्कों के लिए एक सामान्य चिकित्सा शिविर की भी व्यवस्था स्वास्थ्य शिविर में की गयी। ■

इको-फ्रेंडली होने के शुरुआती सबक

प्रीति मेहरा

अपने बच्चे को प्रकृति का सम्मान करना सिखाएं

यह ठीक ही कहा गया है कि बच्चे में अच्छे विचार पैदा करने की शुरुआत घर से होती है। इको-फ्रेंडली विकल्पों के साथ घर को घेरना बच्चों को उनके बढ़ते वर्षों से एक स्वच्छ और हरित जीवन शैली को अपनाने के लिए सिखाता है। वास्तव में, अपने छोटे बच्चे में पर्यावरण चेतना के बीज बोना एक जिम्मेदारी है जिसे आपको आज की दुनिया में अपने अच्छे पालन-पोषण के मैनुअल में शामिल करना चाहिए।

जाहिर है, व्यस्त कामकाजी जोड़ों के लिए यह कोई आसान काम नहीं है, जिन्हें कभी-कभी अपने बच्चों को पार्क के बजाय मॉल ले जाना पड़ता है। वास्तव में, मैं युवा माता-पिता को जानता हूं जो कहते हैं कि वे अपने तीन साल के बच्चों को हर सप्ताहांत में एक मॉल में ले जाने के लिए मजबूर होते हैं ताकि उनके पास खुलने दौड़ने के लिए जगह हो क्योंकि चिलचिलाती धूप में पिकनिक या पार्क की यात्रा की अनुमति नहीं है। सच है, गर्मियां काफी चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं लेकिन अन्य विकल्प भी हैं। एक स्विमिंग पूल क्यों नहीं जहां गर्मी कम होगी और बच्चा जीवन भर के लिए पर्यावरण के अनुकूल कौशल सीखेगा?

यह भीषण गर्मी के विकल्प का सिर्फ एक उदाहरण है, लेकिन पूरे वर्ष के लिए कई अन्य विकल्प हैं। उदाहरण के लिए, आप घर पर पौधे उगा सकते हैं और सप्ताहांत का उपयोग मिट्टी को उलटने के लिए कर सकते हैं, भले ही आप अपने बच्चों को शामिल करें और उन्हें समझाएं कि पौधे कैसे बढ़ते हैं। बच्चों के हर जन्मदिन पर, आप एक पेड़ लगाने की रस्म बना सकते हैं और वृक्षारोपण समारोह के साथ जन्मदिन की पार्टी के लिए परिवार और दोस्तों को आमंत्रित कर सकते हैं। आप बचे वर्ष और आने वाले वर्षों में पौधे को बढ़ते हुए देख सकते हैं और अपने बच्चे में पेड़ों के महत्व और हमारे जीवन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बता सकते हैं।

मूल विचार यह है कि जितना संभव हो सके अपने बच्चे को बाहरी जगत से परिचित कराएं - चाहे वह पार्क हो, समुद्र हो, पहाड़ियाँ हों, या जंगल हों - और उन्हें आकाश की विशालता, महासागरों, महाद्वीपों और भौगोलिक क्षेत्रों से अवगत कराएँ जो पृथ्वी को बनाते हैं। प्रकृति की खोज के लिए शहर से बाहर एक सप्ताहांत न केवल एक स्वागत योग्य परिवर्तन हो सकता है, बल्कि बच्चे को ग्रामीण परिवेश के बारे में अधिक जानने में मदद कर सकता है।

जानवरों को भी कम उम्र में आपके बच्चे को पिक्चर बुक्स, स्टफ्ड टॉयज या वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से पेश किया जा सकता है। बर्ड-वाचिंग ट्रिप, पशु अभयारण्य और जैव विविधता पार्कों का दौरा शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्धक दोनों हो सकता है। घर पर एक्वेरियम रखना या पालतू जानवर को गोद लेना एक समग्र सीखने के माहौल में योगदान दे सकता है जहां ज्ञान एक घर का काम नहीं बल्कि एक खुशी है। मछली को खिलाने या कुत्ते को ब्रश करने जैसे कार्य बच्चों को उन प्राणियों को पालने और समझने की आदत से स्वचालित रूप से जोड़ देते हैं जिनके साथ हम इस ग्रह को साझा करते हैं। प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना महत्वपूर्ण सीख

है जो उन बच्चों को दरकिनार कर देती है जो तेजी से भागती दुनिया में रहते हैं।

छोटे बच्चे अत्यधिक प्रभावशाली होते हैं। अगर उन्हें बचपन से ही पर्यावरण के अनुकूल मूल्य सिखाए जाएं तो वे बड़े होकर बेहतर नागरिक बनेंगे। पानी की बचत करना और अपने दांतों को ब्रश करते समय नल को बंद करना, या उपयोग में न होने पर नल या शॉवर को नहीं चलने देना, ऐसे सबक सीखे जाते हैं जो जीवन भर लगभग प्रतिवर्त क्रियाओं की तरह हो जाते हैं।

इसके बाद फिर से कचरा अलग करने की आदत। यह एक पारिवारिक सिद्धांत की तरह होना चाहिए कि बच्चों को बचपन से ही पालन करना सिखाया जाए। लेकिन इसे एक काम में मत बनाओ। हो सकता है कि चमकीले रंग के डिब्बे रखना और छोटे बच्चे को सूखे या गीले कचरे के रूप में लेबल करने के लिए कहकर उसमें शामिल करना एक बुरा विचार न हो। तो, बच्चा जानता है कि कागज और कार्डबोर्ड सूखे चिह्नित बिन में चला जाता है। यदि उसने केला खाया है, तो उसका छिलका हरे, गीले कूड़ेदान में चला जाता है, इत्यादि। बिस्तर पर जाने से पहले यह अपने आप में एक खेल बन सकता था। बच्चों को उनके द्वारा पैदा किए गए कूड़े को उनके उपयुक्त डिस्पोजल बिन में फेंकने दें। बच्चे को कभी-कभी कंपोस्ट पिट में अपने साथ जाने दें, यदि कोई हो, तो भी, जैसे कि आप खाद बनाने के बारीक बिंदुओं के बारे में बताते हैं।

ये तो बस कुछ ही विचार हैं। आप बच्चे को यह समझाकर इसमें जोड़ सकते हैं कि आप उनके कपड़ों के लिए ऑर्गेनिक कॉटन क्यों चुनते हैं, आप उनके पिकनिक पर प्लास्टिक के कप और प्लेट से क्यों बचते हैं, और आप घर में प्राकृतिक सजावट और प्राकृतिक क्लीनर का उपयोग क्यों करते हैं। वे समझ जाएंगे. और हां, अगर वे कभी-कभार प्लास्टिक का खिलौना, बोतल या प्लास्टिक बैग लाते हैं, तो उन्हें धीरे से समझाएं कि प्लास्टिक से बचना चाहिए। यदि आप उन्हें कड़ी फटकार लगाते हैं, तो 'अनुमति नहीं' के लिए उनका आकर्षण केवल बढ़ सकता है।

एक और तथ्य जो आपको अवश्य मानना चाहिए वह यह है कि बच्चे बड़े होकर बड़ों के कार्यों को देखते हुए बड़े होते हैं। इसलिए, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि बच्चों की परवरिश में शामिल सभी लोग बुनियादी हरे नियमों का पालन करें। यदि घर में बड़े कूड़ेदान के बाहर कचरा फेंकते हैं या कार की खिड़की से कागज की प्लेट खाकर सड़क पर फेंक देते हैं, तो बच्चा उदाहरण का अनुसरण कर सकता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूक होना कोई कठिन कार्य नहीं है। बात सिर्फ इतनी है कि मनुष्य ने जिन विलासिता की वस्तुओं का आविष्कार किया है, वे उन्हें इतना समाहित कर लेती हैं कि वे कभी-कभी यह भूल जाते हैं कि उन्हें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए या इसके प्रकोप को आमंत्रित करना चाहिए।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक रोटरी ब्लड बैंक को मिला एक नए परिसर

टीम रोटरी न्यूज़

बाएं से: रोटरी छल्ला ब्लड बैंक में शर्मिला जैन, ब्लड बैंक की मैनेजिंग ट्रस्टी; शैलेश गुमिदेली; सहायक गवर्नर जी एस एस प्रकाश; रोटरी क्लब हैदराबाद डेक्कन की अध्यक्ष वंदीथ रेड्डी; डीजीएन शरथ चौधरी; डॉ रमेश, एमडी, ज़ोइ हॉस्पिटल्स; डीजी राजशेखर रेड्डी तल्ला और उनकी पत्नी उमा देवी।

मरीजों और दाताओं दोनों तक बेहतर पहुंच के लिए, रोटरी क्लब हैदराबाद डेक्कन, रो ई मंडल 3150, द्वारा संचालित रोटरी चल्ला ब्लड बैंक को शहर के ज़ोई अस्पताल, सोमजीगुडा में स्थानांतरित कर दिया गया था। इससे पहले, इसे अमीरपेट में चल्ला नर्सिंग होम के परिसर में संचालित किया गया था।

ब्लड बैंक, कम विशेषाधिकार प्राप्त रोगियों को मुफ्त या रियायती कीमत पर रक्त और उसके घटकों को प्रदान करता है, इसमें घटक पृथक्करण के लिए सभी आधुनिक सुविधाएं हैं और इसमें पूरी तरह से सुसज्जित रक्त दान वैन है। वर्षों से, क्लब ने रक्त बैंक में ₹2 करोड़ का निवेश किया था, आंशिक रूप से 99,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान और क्लब के सेवा खाते के माध्यम से शेष राशि द्वारा वित्त पोषित।

इस 10 वर्षीय केंद्र ने 15,000 यूनिट से अधिक रक्त एकत्र किया है, जिसका उपयोग ज्यादातर वंचितों को लाभ पहुंचाने के लिए किया गया। डीजी राजशेखर रेड्डी तल्ला ने ब्लड बैंक के अध्यक्ष डीजीएन शरत चौधरी, प्रबंध न्यासी शर्मिला जैन, क्लब के अध्यक्ष वंदित, पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ और एजी शैलेश की उपस्थिति में ब्लड बैंक के नए परिसरों का उद्घाटन किया। ■

श्वेत गैंडे और अश्वेत मांबास

निक डेल

क्या एक पूर्ण-महिला शिकार-रोधी इकाई अफ्रीकी सरक्षित क्षेत्र में वन्यजीव अपराधों पर अंकुश लगा सकती - बिना बंदूक के?

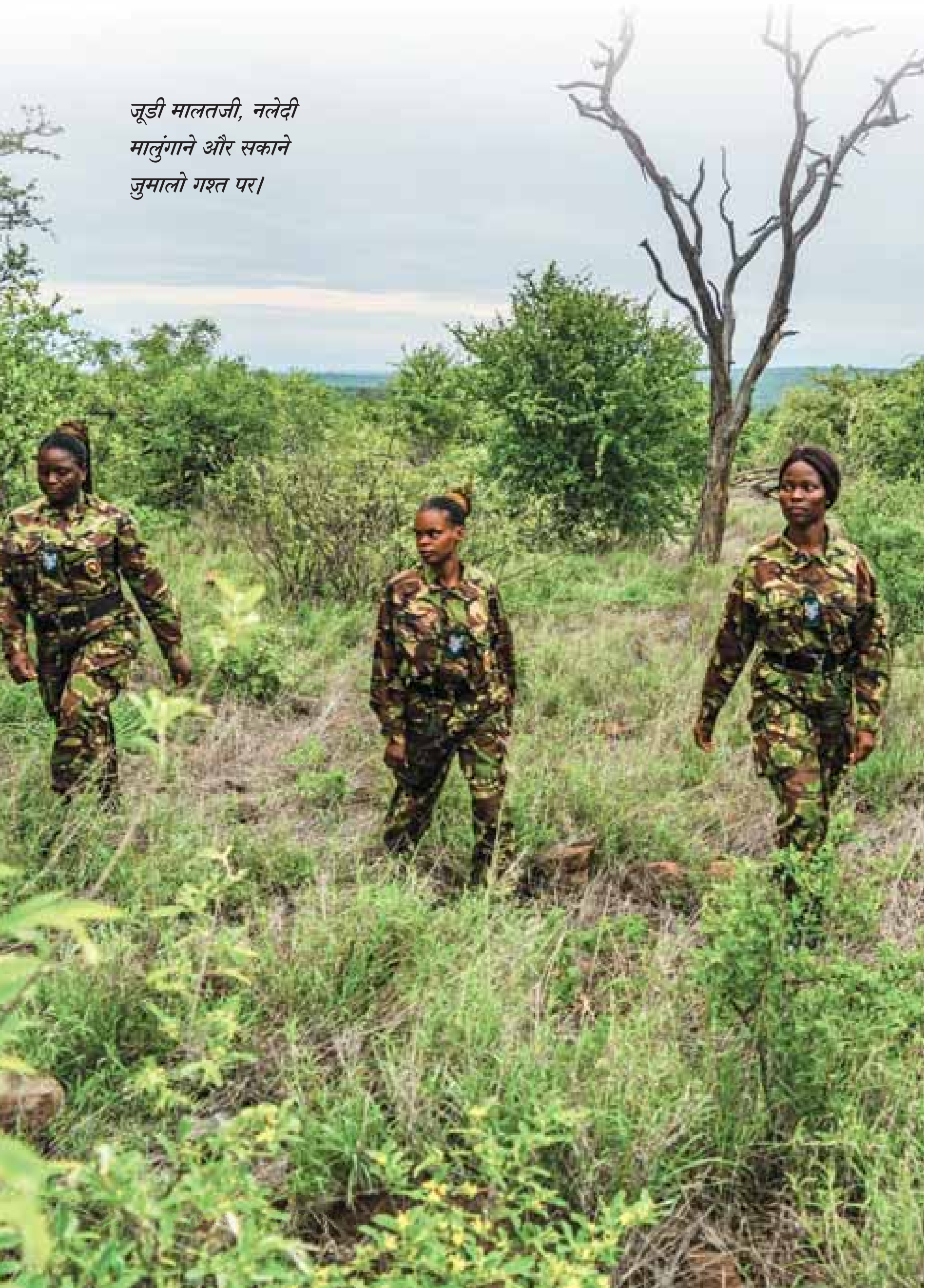

जूडी मालतजी, नलेदी मालुंगाने और सकाने ज़ुमालो गश्त पर।

हरे रंग की छद्मावरण वर्दी और काले बूट पहने, पीठ पर झूलती लंबी पोनीटेल के साथ, 26 वर्षीय सकाने नुक्शमालो, और उसकी 21 वर्षीय सहयोगी नलेदी मालुंगने, एक हाथी-रोधी विद्युत तारबंदी के साथ-साथ चहलकदमी कर रही हैं जो 7 फीट ऊंची और लगभग 100 मील लंबी है। पर्पल-पोड-क्लस्टर-लीफ के पेड़ों की शहद जैसी गंध इस उमस भरी गर्मी की हवा में भारीपन पैदा कर रही है है, जबकि ऊपर पीली चोंच वाला एक पक्षी धनेश (हॉर्नबिल) एक पेड़ के सूखे कंकाल पर बने अपने घोंसले पर झूलता हुआ उतरता है। नुक्शमालो और मालुंगने, 'ब्लैक मांबास एंटी-पोचिंग' यूनिट के सदस्य हैं। इसका नाम इस क्षेत्र में पाए जाने वाले एक लंबे, तेज और अत्यधिक जहरीले सांप के नाम पर रखा गया है, मांबास के सदस्य ग्रेटर क्रूगर नेशनल पार्क के भीतर बने 'बलूले नेचर रिजर्व' के जानवरों की रक्षा करते है, ये एक दक्षिण अफ्रीकी जंगल है, जिसका आकार इज़राइल के बराबर है।

नुक्शमालो और मालुंगने, दोनों यूनिट मुख्यालय के पास ही पले-बढ़े, पर एक-दूसरे को तब जाना जब वे मांबा बन गए, बाढ की निगरानी कर रहे हैं, जैसे वो रोज़ाना उनकी 21-दिन की शिफ्ट में करते हैं, संभावित दरार की तलाश में। ज्यादातर जगहों को बड़े पत्थरों और चट्टानों से उन जगहों को भरने की ज़रुरत पड़ती है जहां जंगली सूअर और तेंदुए जैसे जानवरों ने बाढ़ के नीचे से अपना रास्ता बनाने की कोशिश की है, लेकिन कभी कभी वो उधर भी आते हैं जहां मनुष्यों ने जंगली जानवरों के शिकार के लिए बाड़ को काट दिया है या इससे भी बदतर, गैंडों का शिकार किया है, उनके सींग के लिए।

2013 में, जब पहली बार मांबास ने इस रिजर्व में गश्त करना शुरू किया तो उन्हें शीघ्र ही पता चल गया था कि राइनो तो अवैध शिकार समस्या का सिर्फ एक हिस्सा था। इस पार्क से हर साल कई तरह की प्रजातियों के सैकड़ों जानवर भी गायब हो रहे थे। ''यह शर्मनाक था,'' 48 वर्षीय क्रेग स्पेंसर याद करते हैं, क्योंकि वह एक बुशवेल्ड ब्राई (बारबेक्यू) के पास बैठते हुए, पास में से आ रही एक हाइना की आवाजों के बीच कहते है। एक दक्षिण अफ्रीकी मस्तमौला संरक्षणवादी, वह प्राइवेट संरक्षित क्षेत्र, बालूले के हेड वार्डन थे। ''मुझे मालूम रहना चाहिए

था कि मेरी नाक के नीचे क्या हो रहा था, जबकि मुझे मांबास से पता चला कि यहां क्या चल रहा था।''

अफ्रीका में शिकार की वजह से सफेद गैंडे विलुप्त होने के कगार पर है। इस महाद्वीप के शेष 18,000 सफेद गैंडों की आबादी के लगभग 90 प्रतिशत दक्षिण अफ्रीका में हैं, इस प्रजाति की आखिरी और सर्वश्रेष्ठ उम्मीद। क्रूगर में सफेद गैंडों की सबसे बड़ी आबादी रहती है, साथ ही दुनिया भर में शेष बचे 5,600 काले गैंडों में से लगभग 300 यहां रहते हैं।

कुछ देशों में गैंडे के सींग बेशकीमती हैं, जिसका इस्तेमाल पारंपरिक दवाओं में और स्टेटस सिंबल के रूप में किया जाता है। वन्यजीव न्याय आयोग के अनुसार, अफ्रीका में एक सींग बेचने से औसतन 4,000 डॉलर प्रति पौंड और एशिया में 8,000 डॉलर प्रति पौंड मिलते हैं; यह देखते हुए कि अमूमन सफेद गैंडे के सींगों के एक सेट का वजन करीब 11 पाउंड होता है, इसकी कीमत 44,000 डॉलर और 88,000 डॉलर के बीच पड़ती है। दक्षिण अफ्रीका की प्रति व्यक्ति आय लगभग 5,000 डॉलर प्रति वर्ष है और यहां पर कोविड -19 से पहले, बेरोजगारी दर लगभग 29 प्रतिशत थी। इसलिए, दुख की बात है, एक गैंडा, एक आकर्षक और सहज शिकार है। 2017 में, शिकारियों ने ग्रेटर क्रूगर नेशनल पार्क में 500 से अधिक गैंडों को मार डाला था, जिसमें 17 बालूले से थे।

''शिकारीयों को देख कर मेरा खून खौल जाता है,'' नुक्शमालो कहती हैं, क्योंकि वे उन जीवों की हत्या कर रहे हैं जिन्हें सम्पूर्ण दक्षिण अफ्रीकियों को, भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना चाहिए। हालाँकि नुक्शमालो अच्छी तरह से जानती हैं कि

ब्लैक मांबास का नाम, इस बात का प्रतीक है, उन्होंने इस उद्योग में प्रवेश के अवसर को अत्यंत गंभीरता से लिया था, जो पहले महिलाओं के लिए निषिद्ध था। वे कहना चाहती थीं कि वे दिखावा नहीं कर रही थीं।

कुछ लोग अपने परिवारों का पेट भरने की मजबूरी के चलते शिकार करते हैं, परन्तु इस उद्देश्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अटूट है। वह बताती हैं कि बिग फाइव के किसी भी सदस्य का विलुप्त होना पर्यटन और संरक्षण दोनों के लिए विनाशकारी साबित होगा, ''बिग फाइव'' शिकार की पुरानी शब्दावली का एक शब्द, जो अफ्रीका में पांच सबसे अधिक मांग वाले जानवरों को संदर्भित करता है: शेर, तेंदुए, हाथी, भैंस, और गैंडे। गैंडे के साथ-साथ विशालकाय शाकाहारी हाथी वो जीव हैं जो जंगल के परिदृश्य को इस तरह से आकार देते हैं जिससे अन्य प्रजातियां भी लाभान्वित होती हैं। और किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में बड़े जानवर आमतौर पर 'कोयले की खान में भेजी गई कैनरी की तरह होते हैं', ये कहावत का दुरुपयोग है । टॉम टोचटरमैन कहते हैं, ''अगर हमने इन मुख्य प्रजातियों को विलुप्त होने से नहीं रोका, तो जंगल की अन्य प्रजातियां भी ख़त्म हो जाएंगी।''

2009 के बाद से, दक्षिण अफ्रीका में अपनी पहली फोटो सफारी के दौरान, उनका ''वाह!'' क्षण आया था, 60 वर्षीय टोचटरमैन प्रकृति के इस आरक्षित क्षेत्र के जबरदस्त समर्थक रहे हैं। एक सेवानिवृत्त रियल एस्टेट डेवलपर और रोटरी क्लब ऑफ चेलन, वाशिंगटन के सदस्य, तब उन्होंने राइनो मर्सी नामक एक गैर-लाभकारी संस्था की स्थापना की जो राइनो के अवैध शिकार के विरुद्ध लड़ रही है, और एक लक्जरी फोटो-सफारी कार्यक्रम भी विकसित किया जो वन्य जीव संरक्षण कार्य के कोष में मदद करता है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों की खपत और पारिस्थितिकी तंत्र के क्षरण पर संज्ञानात्मक असंगति के प्रभाव पर शोध करके पीएचडी भी अर्जित की।

इसके अलावा, टॉक्टरमैन लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए सृजित रोटरी एक्शन ग्रुप (आरएजीईएस) के संस्थापक सदस्य थे, जिसका लक्ष्य सभी प्रकार के लुप्तप्राय जानवरों की रिहाइश और जीवन को बेहतर करके लोगों के जीवन में सुधार करना है। वह रोटरी इंटरनेशनल के हाल ही में जोड़े गए फोकस क्षेत्र पर्यावरण की रक्षा को भी सम्बोधित करता है। ''हमारा दृढ़ विश्वास है कि स्वस्थ परिदृश्य, स्वस्थ समाज के

निर्माण में सहायक होता है, वे कहते हैं, माम्बास ने दिखाया है कि इसका विपरीत भी सत्य है।''

वर्ष 2010 में, टॉक्टरमैन एक बुश कैंप में था, एक पूर्व गेम वार्डन स्पेंसर के साथ, कैम्प फायर के पास बैठा था, जो अब उसका करीबी दोस्त और साथी है, रम-और-कोक पीता है और रात में देर तक बातें करता है, उन्होंने एक चिंगारी सुलगाई जो मांबा में तब्दील हो गई। ''पूरे अफ्रीका में, अवैध शिकार रोकने के लिए पूर्व निर्धारित प्रतिक्रिया, ज़्यादा बंदूकों के साथ ज़्यादा आदमियों को साथ लाने की है,'' टॉक्टरमैन कहते हैं। ''पर इससे कोई फायदा नहीं हुआ।'' उन्हें विचार आया कि इस परिदृश्य को बदलने का एकमात्र तरीका है अगली पीढ़ी के दिमाग में परिवर्तन लाना, आकार देना, और बच्चों तक पहुंचने का सबसे अच्छा तरीका उनकी माताओं के रस्ते जाता है।

आखिरकार टॉक्टरमैन और स्पेंसर को एक सरकारी कार्यक्रम, पारंपरिक कृषि क्षेत्र में महिलाओं को पर्यावरण मॉनिटर के रूप में नियुक्त करने के बारे में मालूम चला; उन्होंने सोचा कि शायद वे ''गेम रेंजर'' को इस नौकरी के विवरण में शामिल भी कर सकते हैं, लेकिन दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रीय उद्यानों के वरिष्ठ प्रबंधन ने, उन क्षेत्रों में निहत्थे विचरण करने वाली महिलाओं की अवधारणा पर सवाल उठाते हुए सिरे से नकार दिया जहां शेर, तेंदुए, गैंडे, हाथी और भैंस मुक्त रूप से विचरण करते हैं और एक से अधिक मौकों पर उनसे कहा गया कि ''ये एक बेतुका विचार था और केवल अमेरिका से ही आ सकता था।''

अंततः जब दो लोगों को अपनी धारणा को परिणीत करने का अवसर दिया गया, और सरकारी कार्यक्रम द्वारा चुने गए उम्मीदवारों को जब ये बताया गया कि उनको क्या कार्य करना होगा - वे सभी छोड़ कर भाग गए। इसलिए स्पेंसर और टॉरनेट को स्थानीय प्रमुखों से पार्क के पास के समुदायों में जा कर सही लोगों की तलाश करने की अनुमति मिली। ब्लैक मांबास का नाम पहले समूह ने रखा था, जिसके बारे में टॉक्टरमैन कहते हैं, ये ''इस बात का प्रतीक है, उन्होंने इस उद्योग में प्रवेश के अवसर को अत्यंत गंभीरता से लिया था, जो पहले महिलाओं के लिए निषिद्ध था। वे कहना चाहती थीं कि वे दिखावा नहीं कर रही थीं।''

खबर तेजी से फैल गई, और कुछ ही महीनों के भीतर मांबास को लगभग हर दिन स्थानीय महिलाओं से बिना मांगे ही आवेदन प्राप्त हो रहे थे। शुरुआत से ही, मांबास के दिन-प्रतिदिन संचालन और व्यवस्था को स्पेंसर की गैर-लाभकारी संस्था, ट्रांसफ्रंटियर अफ्रीका द्वारा प्रबंधित है। टॉक्टरमैन की भूमिका मांबास के संचालन केंद्र के साथ-साथ अलग परिसर के निर्माण और वित्तपोषण में महत्वपूर्ण थी जहां महिलाएं अपनी पाली के दौरान रहती हैं। उन्होंने सैन्य पुलिस में भी छह साल बिताए थे, इसलिए वे किसी व्यक्ति को हथकड़ी लगाने जैसे कौशल सिखाने में भी प्रवीण थे। टॉक्टरमैन की 'राइनो मर्सी' गैर-लाभकारी संस्था मांबास के लिए धन उगाहने की अंतर्राष्ट्रीय शाखा के रूप में कार्य करती है और इसने उन्हें वित्तीय सुरक्षा प्रदान की है। सरकार ने हाल ही में महिलाओं के मूल वेतन (लगभग 450 डॉलर प्रति माह) का वित्तपोषण बंद कर दिया है, जो कार्यक्रम की कुल लागत का एक छोटा सा अंश था। टॉक्टरमैन का कहना है कि सब मिला कर, एक मांबा के रोजगार पर प्रति वर्ष 50,000 डॉलर से अधिक का खर्च आता है।

2014 में मांबास के दूसरे दल का हिस्सा रहीं एनकाटेको मज़िम्बा को याद है कि उनके गृहनगर में कई पुरुष उन्हें नौकरी को ले कर चिढ़ाते थे और कहते थे की ज़्यादा दिन ज़िंदा नहीं रह पाओगी, ये पुरुषों का काम है। उनकी भविष्यवाणियां लगभग सच हो गईं होती, जब मांबास के साथ अपने शुरू के कुछ महीनों में, उस पर और उसके दो सहयोगियों पर शेरों के झुंड ने कई बार हमला किया था और वो पेड़ पर चढ़ गई थी, वहां से गुजरते एक वाहन ने उन्हें पेड़ से उतार के बचाया था। ''मैंने मांबास छोड़ने की कोशिश की,'' वह याद करती है। ''लेकिन परामर्श के बाद मैंने डटे रहने का निर्णय किया, आखिर हमें कमज़ोर और शक की नज़र से देखने वालों को भी तो गलत साबित करना था।'' पीछे मुड़कर देखने पर, मज़िम्बा, जो अब एक हवलदार है, जो जल्द ही एक पेशेवर फील्ड गाइड बनने की योग्यता प्राप्त कर लेगी, को लगता है कि अगर उसने शेरों के व्यवहार के बारे में ठीक से पढ़ा होता तो संकट की स्थिति से बचा जा सकता था।

मज़िम्बा अब ध्यान रखती है कि प्रत्येक गश्ती दल में एक अनुभवी माम्बा ज़रूर शामिल हो और

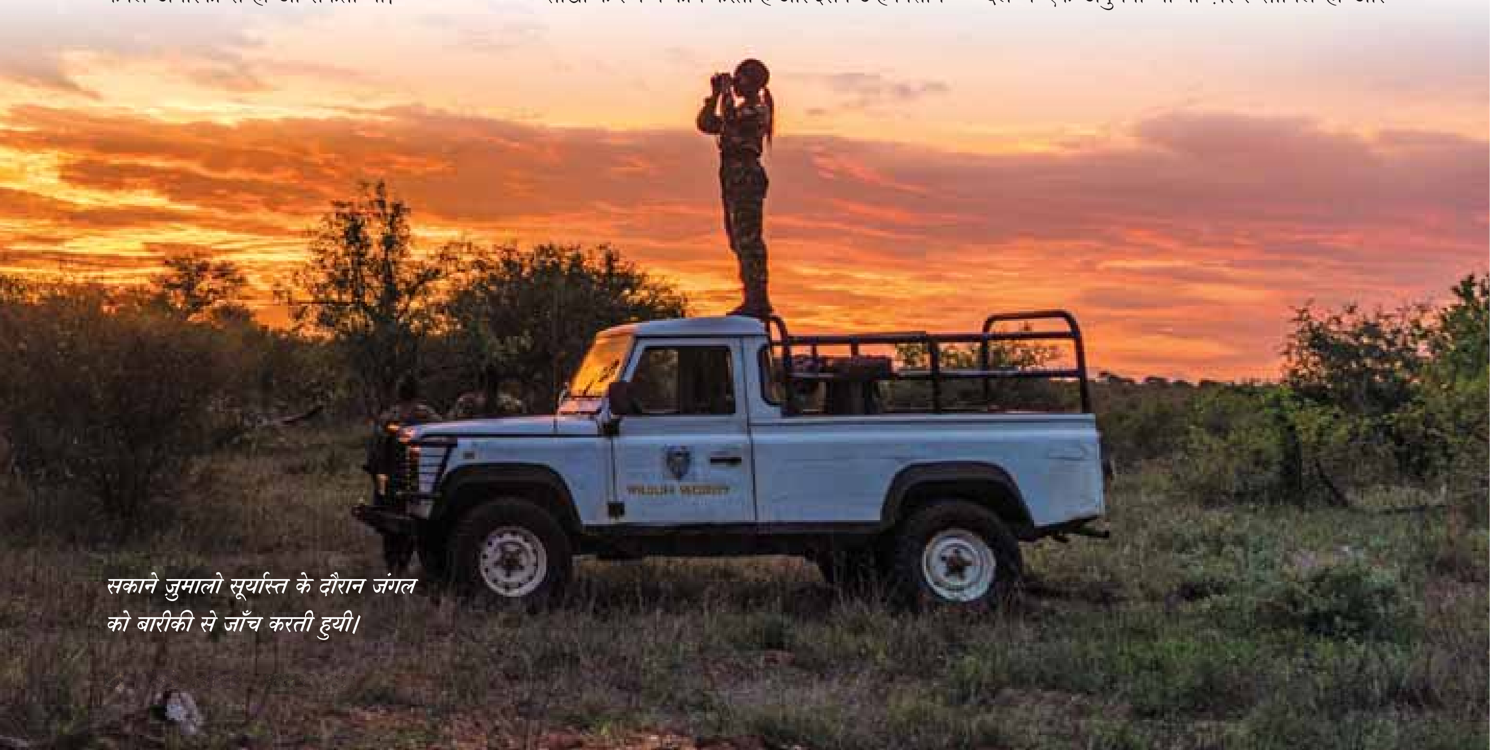

सकाने ज़ुमालो सूर्यास्त के दौरान जंगल को बारीकी से जाँच करती हुयी।

यदि शस्त्र के इस्तेमाल की ज़रुरत पड़े तो वो पहुंच में हो। (एक केंद्रीय संचालन कक्ष के ज़रिये माम्बा की हर हरकत पर नज़र रखी जाती है।) अपने पहले वर्ष में, मांबाओं के लिए एक दिन में 70 जाल या फंदे ढूंढ लेना कोई असामान्य बात नहीं थी। कई बार छापा मारने पर, रिज़र्व के अंदर ही उन्हें ''बुशमीट किचन'' भी मिलते हैं, जहां बड़े पैमाने पर अवैध रूप से शिकार किये गए जानवरों की खाल को सुखाया जाता है।

2015 में उस दिन पूर्णिमा की रात थी, मांबास के एक गश्ती दल ने गोलियों की आवाज़ का जवाब दिया और शिकारियों के एक समूह को चौंका दिया, जिन्होंने अभी-अभी एक गैंडे को मार डाला था। अपने वाहन में कुछ देर पीछा करने के बाद, माम्बा घटनास्थल पर लौट आई जहां दो गैंडे मृत और तीसरा घायल पड़ा था । आपातकालीन पशु चिकित्सकों के भरसक प्रयासों के बावजूद, तीसरे ने भी दम तोड़ दिया। इस भीषण प्रकरण की एकमात्र तसल्ली यह रही कि शिकारियों को उनका इनाम नहीं मिला।

मम्बाओं ने अवैध शिकार पर अंकुश लगाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, नुक्शमालो कहती हैं, ''ये वास्तव में अद्भुत लगता है,'' क्योंकि वो ये सुनते हुए बड़ी हुई है कि यह एक ऐसा काम है जो सिर्फ पुरुषों को करना चाहिए। दक्षिण अफ्रीका में, संरक्षण उद्योग में कई लोग अभी भी महसूस करते हैं कि शिकार विरोधी क्षेत्र में महिलाओं का कोई स्थान नहीं है और 'बिग फाइव' वाले क्षेत्रों में निहत्थे गश्त करना निहायत बेवकूफी भरा काम है। ''मुझे नहीं लगता कि पुरुष 'बिग फाइव' क्षेत्र में निहत्थे काम करना चाहेंगे,'' नुक्शमालो हंसते हुए कहती हैं। ''बंदूक लेने के लिए एक आदमी ढेर सारे कारण गिनायेगा कि उसे बंदूक की आवश्यकता क्यों है। लेकिन हमारे लिए, जानवरों का व्यवहार समझना ज़्यादा ज़रूरी है। हम जानते हैं कि ये वास्तव में बंदूकों से सम्बंधित नहीं है।''

अपने सामुदायिक संपर्कों के माध्यम से, मांबा, पुलिस और लुटेरों की कहानियां बदलने में भी मदद कर रहे हैं, जिसने दक्षिण अफ्रीका में अपनी स्थापना के बाद से ही संरक्षण आंदोलन को प्रभावित किया है। प्रकृति संरक्षण को अक्सर दुष्ट शिकारियों और शोषकों के साथ लड़ाई करते हुए पर्यावरण के रक्षक के रूप में चित्रित किया जाता है, जबकि इससे भी अधिक ज़रूरी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं को नज़रअंदाज़ किया जाता है। क्रूगर नेशनल पार्क के लिए, 1898 में भूमि को चिन्हित कर संरक्षित किया गया था, उस वक्त सोंगा जातीय समूह के लगभग 3,000 लोगों को जबरन जमीन से बेदखल कर दिया गया था। वहां तारबंदी की गईं, राष्ट्रीय सीमाएँ जो पहले केवल मानचित्रों पर दिखाई देती थी, लागू की गईं, और लोगों को उस भूमि पर अनधिकृत प्रवेश के लिए दण्डित या कैद किया गया, जिस ज़मीन पर वे पीढ़ियों से रहते आये थे और हमेशा से उन्हीं जानवरों का शिकार कर खाते थे। नस्ल भेद के दौरान, बाड़ और अभेद्य होती चली गई और सज़ा अधिक निर्मम और कठोर।

यह इतिहास, यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि रेंजर और शिकारी एक ही समुदायों - या परिवारों से कैसे आ सकते हैं। और यही वजह है कि दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय उद्यानों में से एक के किनारे अपना पूरा जीवन बिताने वाले कई लोग इसके बारे में अनभिज्ञ हैं।

नुक्शमालो कई बार क्रूगर गई , लेकिन जंगलों, झाड़ीयों के साथ उसका कोई नज़दीकी रिश्ता नहीं था। एक पैनल साक्षात्कार और फिटनेस टेस्ट सफलतापूर्वक पास करने के बाद, उसने और मालुंगने सहित आठ अन्य रंगरूटों ने अपना प्रारंभिक प्रशिक्षण शुरू किया। प्रशिक्षण काफी कठिन था, वो कहती है, पूरे दिन धूप में दौड़ना वो भी पानी की एक छोटी सी बोतल के साथ जैसे व्यायाम सत्र शामिल हैं। अब वह मुड़ कर प्रशंसा के साथ उस समय को देखती है: ''प्रशिक्षण ने मुझे आगे बढ़ने का मौका दिया और सिखाया कि मैं और अधिक कर सकती हूं और आगे बढ़ सकती हूं।''

बिग फाइव क्षेत्रों में हजारों किलोमीटर पैदल गश्त करने के बाद, नुक्शमालो को इस जंगल और यहां की झाड़ियों से प्यार हो गया है और वो इस की रक्षा के लिए समर्पित है। और वो अकेली नहीं है - उसके समूह की सभी महिलाएं अभी भी मांबा हैं। और उन्होंने जो सीखा है उसे आगे पारित करने पर उन्हें गर्व है। ''हम न केवल अपने बच्चों को पढ़ाएंगे; हम दूसरी लड़कियों को सिखाएंगे कि वे जो चाहें, कर सकती हैं, नुक्शमालो कहती हैं। हम हर महिला से कह रहे हैं कि आप और अधिक कर सकती हो , आप आगे बढ़ सकती हो। वे कभी भी अपनी वर्दी पहने घर नहीं जाते (क्योंकि शिकारी

जंगली जानवरों की ओर

लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए रोटरी एक्शन ग्रुप (RAGES) क्लबों और मंडलों की पर्यावरण संबंधी परियोजनाओं को डिजाइन करने में मदद करता है। प्रसिद्ध संरक्षणवादी जेन गुडॉल के समर्थन से 2015 में शुरू किए गए इस समूह के 71 देशों में लगभग 1,000 सदस्य है।

एक्शन ग्रुप के अध्यक्ष टॉम टोचरमैन कहते है, ''स्वस्थ परिदृश्य स्वस्थ समुदायों की ओर ले जाते है। रोटरी स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध समुदायों के बारे में है। एक स्वस्थ परिदृश्य के बिना चीजें आपके अनुकूल नहीं होंगी।''

अपने क्लब की परियोजना के बारे में लोगों को बताएं; *rag4es.org* पर जाकर उन्हें सबमिट करें।

पर्वतीय गोरिल्ला

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, रवांडा और युगांडा

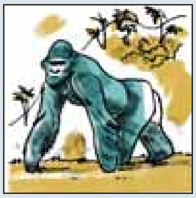

दुनिया में केवल 1,000 पर्वतीय गोरिल्ला बचे है हालांकि संरक्षण प्रयासों के कारण यह संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। पर्वतीय गोरिल्लाओं के फर अन्य वानरों की तुलना में मोटे होते है ताकि उन्हें अधिक ऊंचाई पर ठंडे मौसम से बचने में मदद मिल सके। उनके लिए सबसे बड़े खतरे निवास स्थान की हानि, राजनीतिक अस्थिरता और मानव अतिक्रमण है; क्योंकि पर्वतीय गोरिल्ला अपने DNA का 98 प्रतिशत से अधिक हिस्सा मनुष्यों के साथ साझा करते है, वे फ्लू और निमोनिया जैसी मानव बीमारियों के प्रति अतिसंवेदनशील होते है।

रोटेरियन रायमोंडे बेजेनर के नेतृत्व में माउंटेन गोरिल्ला कंजर्वेशन सोसाइटी ऑफ कनाडा, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, रवांडा और युगांडा के विश्वविद्यालयों में वन्यजीव स्वास्थ्य और प्रबंधन में छात्रवृत्ति के माध्यम से वन्यजीव पशु चिकित्सकों की संख्या बढ़ाने के लिए काम कर रही है। एडमोंटन रिवरव्यू, अल्बर्टा और कंपाला मुन्योनियो, युगांडा के रोटरी क्लबों ने वन्यजीव स्वास्थ्य कार्यक्रम के लिए तीन वैश्विक अनुदान छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए RAGES के साथ काम किया।

परागणक

ग्वाटेमाला

दुनिया की 75 प्रतिशत से अधिक प्रमुख खाद्य फसलें परागणकों पर निर्भर करती है, भले ही वे मधुमक्खियां, पक्षी, तितलियां, भौंरा या चमगादड़ हो। परागणक दुनिया के अधिकांश तेलों, फाइबर और कच्चे माल के लिए भी जिम्मेदार है। लेकिन निवास स्थान की हानि, जलवायु परिवर्तनशीलता और कीटनाशक इन प्रजातियों की गिरावट को तेज कर रहे है।

रोटरी क्लब कार्पिनटेरिया मॉर्निंग ने एटिटलान झील की घाटी में *सेव मी पीस* परियोजना शुरू की, जहाँ अनेक हमिंगबर्ड प्रजातियां खतरे में है। नागरिक-विज्ञान पहल के माध्यम से क्लब के सदस्यों ने स्कूली बच्चों को परागणकों और उनके आवासों के महत्व के बारे में सिखाया। क्लब ने यूनिवर्सिडाड डेल वैले डी ग्वाटेमाला में परागणकों पर एक आभासी संगोष्ठी की मेजबानी करने के लिए RAGES के साथ साझेदारी की।

महान वानर

कैमरून

उष्णकटिबंधीय मजबूत लकड़ी और अवैध वाणिज्यिक बुशमीट व्यापार की लालसा के कारण निवास स्थान का विनाश अफ्रीका के महान वानरों - गोरिल्ला, चिंपांज़ी और बोनोबोस के लिए खतरा है। आदतन शिकारी हजारों वर्षों से अपने परिवारों को भोजन प्रदान करने के लिए जंगली जानवरों को मारते रहे है लेकिन आज, वाणिज्यिक शिकारी पूरे प्राइमेट परिवारों को मारते है, जिससे इन जानवरों के अस्तित्व की दीर्घकालिक संभावनाएं खतरे में पड़ जाती है।

रोटरी क्लब पिकरिंग, ओंटारियो द्वारा प्रायोजित एप एक्शन अफ्रीका, अनाथ महान वानरों को बचाता है और स्थानीय समुदाय के सदस्य कैमरून के मेफौ प्राइमेट अभ्यारण में युवा जानवरों की देखभाल करते है। यह संगठन स्थानीय स्कूली बच्चों को बुशमीट, लॉगिंग, संरक्षण और अन्य पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में भी शिक्षित करता है और यह जानवरों के निवास स्थान क्षेत्रों की पहचान करके उन्हें संरक्षित करने के लिए भी काम कर रहा है ताकि जानवरों को वापस जंगल में छोड़ा जा सके।

ऑरंगुटान और पिग्मी हाथी

इंडोनेशिया और मलेशिया

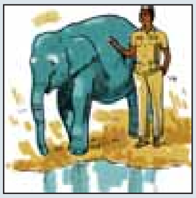

ओरंगुटान दक्षिण पूर्व एशिया में रहा करते थे, लेकिन आज वे केवल बोर्नियो और सुमात्रा द्वीपों के आंशिक वन क्षेत्रों में मौजूद है। जानवरों के पसंदीदा निवास स्थान पर बबूल, रबर और ताड़ के वृक्षारोपण आसानी से हो सकते है: इंडोनेशिया और मलेशिया दुनिया में ताड़ के तेल का 90 प्रतिशत उत्पादन करते है, जो दुनिया के आधे सुपरमार्केट उत्पादों में पाया जाता है। जानवरों के निवास स्थान विनाश ने इसी तरह ही बोर्नियन पिग्मी हाथी, एक एशियाई हाथी की उप-प्रजाति को प्रभावित किया है जो

केवल बोर्नियो में ही पाई जाती है और इनकी अनुमानित आबादी 1,500 से कम है।

ऑरंगुटान अपील यूके अनाथ जानवरों की देखभाल करने के लिए मलेशियाई बोर्नियो में सेपिलोक ओरंगुटान पुनर्वास केंद्र के साथ काम करता है। रोटरी क्लब बुकहम एंड हॉर्सले, इंग्लैंड, के सुसान शेवर्ड द्वारा स्थापित यह संगठन केंद्र के कर्मचारियों को वित्त पोषित करने के साथ ही एक वन्यजीव बचाव इकाई, पुनःवनीकरण प्रयासों और निवास स्थान संरक्षण का समर्थन करता है।

राइनो

दक्षिण अफ्रीका

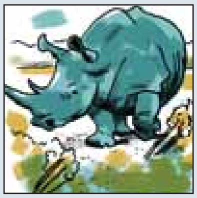

दुनिया के अधिकांश गैंडों के घर, दक्षिण अफ्रीका, में हर 22 घंटे में एक गैंडे को उसके सींगों के लिए मार दिया जाता है। शिकारियों ने 2013 और 2017 के बीच हर साल 1,000 से अधिक गैंडों को मार डाला। राइनो के सींग पारंपरिक चीनी चिकित्सा में उपयोग किए जाते है और तेजी से प्रतिष्ठा का एक प्रतीक बन रहे है; प्रबुद्ध अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक गिरोह अक्सर शिकार के पीछे होते है।

चिपेम्बेरे राइनो फाउंडेशन (एक अफ्रीकी भाषा, शोना में चिपेम्बेरे का अर्थ है 'गैंडा') विशेष रूप से प्रशिक्षित ट्रैकिंग और शिकारी कुत्तों, गैंडों की निगरानी के लिए प्रौद्योगिकी एवं रेंजर उपकरण प्रदान करके शिकार को रोकने के प्रयासों का समर्थन करता है। रोटरी क्लब केंटन ऑन सी, दक्षिण अफ्रीका इस संगठन का काफी लंबे समय से समर्थक है। टोचरमैन द्वारा स्थापित राइनो मर्सी ने ब्लैक मम्बास एंटी-पोचिंग यूनिट का सह-विकास किया जो दक्षिण अफ्रीका में अपनी तरह का पहला अखिल-महिला समूह है और पर्यावरण शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान का समर्थन करता है।

कपड़े चोरी कर इसका इस्तेमाल पार्क में घुसपैठ करने के लिए कर सकते हैं), नुक्शमालो, जो करती है उसे छिपाने का कोई प्रयास नहीं करती है। आप जो करते हैं उस पर गर्व होना चाहिए, वह बताती हैं। ''यह दूसरों को गर्व और स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। मुझे हमेशा पता था कि मैं बहुत कुछ कर सकती हूं। लेकिन मांबा ने वास्तव में मेरी प्रतिभा को बाहर निकाला।''

इस क्षेत्र के हिसाब से मांबास का वेतन काफी अच्छा माना जाता है, अपनी आय का उपयोग अपनी मां और अपनी बहन का सहयोग करने के अलावा, नुक्शमालो खुद की पढ़ाई के लिए विश्वविद्यालय फीस का भुगतान करती है। उसने हाल ही में ऑनलाइन शिक्षण की डिग्री का पहला वर्ष पूरा किया है। मज़िम्बा अपनी आय का उपयोग भूखे पड़ोसियों के लिए एक खाद्य पेंट्री चलाने के लिए करती है - जो अंततः अवैध शिकार को कम करने में सहायता ही करता है।

मांबास के दिन की शुरुआत भोर में उठ कर बाड़ की गश्त लगाने या दरार ढूंढने से होती है (दोनों पैदल) और इसमें अवैध रूप से संचालित गुप्त गतिविधियों या वाहनों का अवलोकन शामिल है। गोलियों की आवाज, टॉर्च की रोशनी, और तंबाकू के धुएं की गंध, ये सभी शिकारियों की गतिविधि के स्पष्ट संकेत हैं, लेकिन इन दिनों, नुक्शमालो का कहना है कि माम्बा को तेंदुए या हाथियों के झुंड द्वारा बाधित किए जाने की संभावना अधिक रहती है। वे रात में बिलकुल शांत रहते हैं, वह कहती हैं। कभी-कभी वे रास्ता रोकते हैं, लेकिन हम कभी जल्दी नहीं करते।

माम्बा के साप्ताहिक कार्यों में उन परिसरों की छानबीन करना शामिल है जहां रिजर्व कर्मचारी और ठेकेदार रहते हैं, रोड ब्लॉक का संचालन करते हैं, और पर्यटकों और स्थानीय समुदायों से वन्यजीव संरक्षण के महत्व के बारे में बात करते हैं। ''अगर गश्त के दौरान कुछ नहीं मिलता है तो यह एक बड़ी सफलता है,'' नुक्शमालो कहती हैं। ''अगर मुझे कोई जानवरों के लिए बिछाया हुआ कोई जाल नहीं मिलता, तो यह बोनस है क्योंकि इसका मतलब है कि जब मैंने इसे आखिरी बार चेक किया था उसके बाद नया जाल लगाने के लिए यहां कोई भी नहीं आया है और ना ही किसी ने बाड़ को काटा है। यह बहुत बड़ी राहत की बात है।''

2015 में एक उन्मुक्त हंसी वाली, प्रकृति संरक्षण की एक ऊर्जावान छात्रा लेविन मेफाला के आगमन के साथ मांबास कार्यक्रम ने गति पकड़ी । मेफाला ने श्वाणे यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी में अपने शोध के लिए स्पेंसर की गैर-लाभकारी संस्था के साथ एक साल का प्रशिक्षण अभ्यास किया और तब से इसे नहीं छोड़ा। उसने देखा कि हालांकि बाड़ पर गश्त लगा कर मांबा, शिकारियों से जानवरों की रक्षा कर रहे थे, लेकिन वे शिकार की रोकथाम के लिए, जिस समुदाय से शिकारी आते हैं वहां पर कोई विशेष कार्य नहीं कर रहे थे। कुछ ही महीनों के भीतर, मेफाला को चार स्थानीय प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों को पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम पढ़ाने की अनुमति मिल गई।

अपने कार्यक्रम का नाम उन्होंने 'बुश बेबीज़' रखा, मेफ़ला ने पढ़ाने में उन जानवरों का प्रयोग करने पर ध्यान केंद्रित किया, जो उन्हें चलते फिरते खेत या जंगल में दिख जाते हैं ,जिसके माध्यम से छात्रों को पर्यावरण और पारिस्थितिक तंत्र संरक्षण पढ़ा सकें। ''हम जानवरों के बारे में चर्चा करते हैं कि वे स्थानीय संस्कृति में क्यों ज़रूरी होते हैं, उनकी क्या भूमिका है,'' वह कहती हैं, घाना में शाई लोगों का उदाहरण देते हुए, जो हाथियों के लिए नृत्य करना पसंद करते हैं, अपने कुलदेवता जानवर के लिए। लेकिन बुश शिशुओं को ये भी सिखाया जाता है कि जीवित रहने के लिए जानवरों को स्वच्छ पानी और स्वस्थ पेड़ों की आवश्यकता क्यों पड़ती है। और उन्हें सिखाया जाता है कि वे पीढ़ियों से चले आ इस अवधारणा को मिटा दें कि सांप और बिच्छू को मारना चाहिए। ''बस अगले ही दिन, मेरे कुछ बुश शिशुओं को एक पफ एडर (वाईपर सांप) मिला, मेफ़ला कहती हैं। हमने मिलकर इसे जंगल में छोड़ दिया, अपने घरों से बहुत दूर। कुछ साल पहले तक ऐसा बिलकुल नहीं होता होगा।''

2017 तक, माफेला ने इस कार्यक्रम का विस्तार करते हुए 10 स्कूलों, दो ग्रेड स्तर के और 1,000 से अधिक छात्र- छात्राओं को इसमें शामिल कर लिया है। उन्होंने बुश शिशुओं को पढ़ाने के लिए कई युवा पुरुषों और महिलाओं को काम पर रखने के लिए सरकार द्वारा वित्त पोषित पर्यावरण मॉनिटर पहल का भी लाभ उठाया। कभी चैन से नहीं बैठने वाली माफेला ने इस कार्यक्रम को स्कूली पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत

किया है (उदाहरण के लिए, गणित के छात्र, उन सभी जानवरों की प्रजातियों, उम्र और लिंग को रिकॉर्ड कर सकते हैं, जिन्हें वे गेम ड्राइव पर देखते हैं और उस डेटा का उपयोग लघु - जनगणना में कर सकते हैं) साथ ही एक सब्जी-बागवानी परियोजना शुरू की, जहां बच्चे मिट्टी की मल्चिंग से लेकर उत्पाद पकाने तक की पूरी प्रक्रिया देखते हैं। उसने एक बुश ग्रैनीज़ कार्यक्रम भी शुरू किया है, जो स्थानीय दादी-नानी के ज्ञान की थाह लेता है, और स्काउट्स दक्षिण अफ्रीका से संबद्ध, एक स्थानीय संगठन, के साथ मिलकर यह निश्चित करता है कि ये कार्यक्रम किशोरों तक भी पहुंचे। पिछले साल बुश बेबीज़ एनवायर्नमेंटल एजुकेशन सेंटर में 1500 से अधिक किशोरों ने स्काउट मीटिंग में भाग लिया था। प्रशंसा करते हुए स्पेंसर कहते हैं, ''लेविन बुश बेबीज़ को चाँद पर ले गई हैं।''

2019 में जब नुक्शमालो मांबास में शामिल हुई, तब तक कार्यक्रम पूरी क्षमता के साथ गति पकड़ चुका था (बुश शिशुओं की टीम सहित 36 मम्बास), और महिला रेंजरों के बारे में सामजिक दृष्टिकोण में काफी नरमी आई थी। जब मैं अपने गांव में घर जाती हूं, तो अन्य महिलाएं पूछती हैं, मांबास में कोई खाली जगह है क्या, वह कहती हैं। लोगों की बदली हुई विचारधारा देख कर वास्तव में अच्छा लगता है कि महिलाएं अवैध शिकार के खिलाफ लड़ाई में वास्तविक परिवर्तन ला सकती हैं।

COVID-19-संबंधित यात्रा प्रतिबंधों से मिली सहायता की वजह से, जिसने गैंडे के सींग सीमा पार ले जाना मुश्किल कर दिया है, दक्षिण पूर्व एशिया में सींगों की मांग में स्पष्ट कमी, और

यह तथ्य कि मारने के लिए गैंडे अब कम बचे हैं, इस बात का सबूत हैं कि गैंडों के अवैध शिकार में गिरावट आई है। 2021 की पहली छमाही में, शिकारियों ने दक्षिण अफ्रीका में 249 गैंडों को मार डाला था - 2013 से 2017 की तुलना में काफी कम है, जब वो प्रति वर्ष 1,000 से अधिक की हत्या कर देते थे। और 2020 की शुरुआत के बाद से, मांबास के भीतरी इलाके में, सिर्फ एक गैंडे का शिकार हुआ है।

निकट भविष्य में अब माम्बास एक हाई स्कूल और/या व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करने की योजना बना रहे हैं, और इसे दक्षिण अफ्रीका और उसके बाहर भी, उन क्षेत्रों में ले जाने की योजना है, जहां से केवल भूमि को प्रतिरक्षित करने के लिए ही नहीं बल्कि जहां अधिक महिलाओं को शामिल करने की मांग भी आ रही हो। बस एक ही चीज की कमी है, धन की। ''वैश्विक महामारी द्वारा पारिस्थितिक पर्यटन और संरक्षण की इस पहल में आ रही परेशानियों के बावजूद हम अपने कार्यक्रमों को मजबूती से जारी रखेंगे,'' टॉक्टरमैन कहते हैं।.

माफेला के बुश बेबीज कार्यक्रम ने इसके पहले बैच के दो सदस्यों को प्रकृति संरक्षण की डिग्री हासिल करने के लिए प्रेरित किया है। वह प्रांत के हर स्कूल में अपने कार्यक्रम लागू होते हुए देखना चाहती है, और उसकी नज़र है 100 सीटों वाली बस पर (''क्रुगर पार्क दिखाने के लिए 100 बच्चों को ले जाने की कल्पना कीजिये!'') और वास्तव में एक बहुत बड़ा बुश शिशु संसाधन केंद्र भी जहां एक पुस्तकालय और इंटरनेट की सुविधा हो। ''कार्यक्रम चलाने के लिए लोगों का मिलना कोई मुश्किल काम नहीं है,'' वह कहती हैं। कल ही मुझे सौ लोग मिल सकते हैं, लेकिन हमारे पास इतना ही पैसा है कि ये कार्यक्रम हम 10 स्कूलों में चला सकें।

नुक्शमालो कहती हैं, बस, सिर्फ यही एक अड़चन बची है जिससे निजात पानी है। ''हमें सम्पूर्ण पार्क में काम करने के लिए मांबास की जरूरत है, वह कहती हैं। यदि गैंडे विलुप्त हो गए, तो ये शिकारी हाथियों, पैंगोलिनों, शेर की हड्डी के व्यापार की तरफ रुख कर लेंगे। ''हम चाहते हैं कि हाथी जंगल में घूमें, पेड़ों को रौंदें ताकि उसकी पत्तियां इम्पाला (अफ्रीकी हिरन की एक प्रजाति) खा सकें। शेरों को जीवित रहने के लिए इम्पाला की जरूरत है। संरक्षण का मतलब है सभी जानवरों को बचाना। इसीलिए हम जो काम कर रहे हैं वो बहुत महत्वपूर्ण है।''

यदि गैंडे विलुप्त हो गए, तो ये शिकारी हाथियों, पैंगोलिनों, शेर की हड्डी के व्यापार की तरफ रुख कर लेंगे। संरक्षण का मतलब है सभी जानवरों को बचाना।

निक डेल दक्षिण आफ्रिका के केप टाउन से एक स्वतंत्र लेखक है।

चित्रः बॉबी नेप्ट्यून

©Rotary

वृद्धाश्रम में दोपहर का विशाल ओणम भोजन

टीम रोटरी न्यूज़

ईरा नेन्जम ट्रस्ट' द्वारा संचालित एक वृद्धाश्रम के 80 कैदियों के साथ केरल का त्यौहार ओणम रोटरी क्लब कोयम्बटूर मोनार्क, रो ई मंडल 3201 के रोटेरियन्स द्वारा मनाया गया। कोयंबटूर नगर निगम के 'राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन' परिसर में बुजुर्गों को स्वादिष्ट भोजन परोसा गया। इस मौके पर क्लब के अध्यक्ष ए अभिषेक, सचिव सी एन शरवना और ए जी शशि कुमार उपस्थित थे।

हर महीने के पहले सप्ताह में क्लब '*स्माइल विद मील*' परियोजना के तहत पोदनूर के पास 180 बच्चों को दोपहर का भोजन प्रदान कर रहा है। इस परियोजना को क्लब के सदस्य गुरुमूर्ति विघ्नेश प्रायोजित कर रहे हैं। ■

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

वैश्विक अनुदान योगदान

वैश्विक अनुदान के लिए नकद योगदान अनुदान की स्वीकृति से पहले नहीं भेजा जाना चाहिए। यदि आवेदन को मंजूरी नहीं मिलती है तो योगदानों को वार्षिक फंड-शेयर में जमा किया जाएगा। उसे पुन: आवंटित नहीं किया जा सकता। सभी वैश्विक अनुदान योगदानों को TRF में अचल योगदान माना जाता है। इसे वापस नहीं किया जाएगा।

आपदा प्रतिक्रिया अनुदान

महामारी के दौरान, TRF ने समुदायों को सहायता प्रदान करने हेतु मंडलों के लिए आपदा प्रतिक्रिया अनुदान को मंजूरी दी और उन्हें वितरित किया। संस्थान मानता है कि इन अनुदान निधियों का उपयोग उसी उद्देश्य के लिए किया गया है जिसके लिए इसे वितरित किया गया था और मंडलों से इन अनुदानों की अंतिम रिपोर्ट भेजने का अनुरोध किया जाता है। रिपोर्ट हाथ से तैयार की गई होनी चाहिए और यह अनुदान केंद्र में उपलब्ध नहीं है।

रोटरेक्ट दान प्रमाण पत्र में बदलाव

रोटरेक्ट क्लबों में अब TRF को दान करने के लिए मान्यता प्राप्त करने में अधिक लचीलापन है। रोटरी वर्ष 2022-23 की शुरुआत से, जिन क्लबों के सदस्य संस्थान को कम से कम 100 यूएस डॉलर का योगदान करते है, उन्हें रोटरेक्ट दान प्रमाण पत्र प्राप्त होगा। अब सदस्यों के भाग लेने की कोई न्यूनतम संख्या नहीं है और रोटरेक्ट क्लबों के सदस्य एक समूह के रूप में या व्यक्तिगत रूप से योगदान कर सकते है।

प्रमुख दानकर्ता मान्यता निर्देश

- यह केवल व्यक्तिगत योगदान के लिए उपलब्ध है। केवल पति या पत्नी के योगदान को प्रमुख दाता मान्यता के लिए जोड़ा जा सकता है।
- परिवार-नियंत्रित कंपनी या परिवार-न्यास द्वारा किए गए योगदान के मामले में, यह आधिकारिक तौर पर लिखित रूप से प्रदान करना होगा कि दान का वास्तविक श्रेय इसके मालिक/ट्रस्टी को दिया जाए।
- प्रमुख दानकर्ता मान्यता स्वचालित रूप से संसाधित नहीं होती है और दाता से प्राप्त हुए निर्देशों के साथ रो ई कर्मचारी को रिपोर्ट करने की आवश्यकता होती है।
- संस्थान मान्यता अंक APF, पोलियोप्लस और वैश्विक अनुदान में योगदान देने पर दिए जाते है। अक्षय निधि, निर्देशित उपहार और CSR उपहार के लिए कोई मान्यता अंक नहीं मिलते।

योगदान के पुनः वर्गीकरण के लिए दिशानिर्देश

सभी अनुरोध दान की तारीख के 60 दिनों के भीतर प्राप्त होने चाहिए और वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए ही होना चाहिए। दानकर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया जाना चाहिए। वार्षिक कोष से वैश्विक अनुदान नकद योगदान के लिए पुनर्वर्गीकरण की अनुमति नहीं दी जाएगी। ■

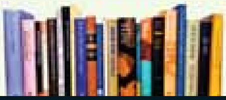

शब्दों की दुनिया

पर्वत की वादियों में साहित्य उत्सव

संध्या राव

ऊटी लिटफेस्ट (साहित्य उत्सव) में 'लैप्सड रेवोल्युशनरी' से लेकर मशहूर दादियों से कुछ दिलचस्प बातचीत हुईं।

'मैं लेखिका नहीं हूं। मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ क्यों हूँ।' और इस तरह गीता रामास्वामी ने मंच से अपनी बात शुरू की। सत्र के अंत में, दर्शकों ने खड़े हो कर करतल ध्वनि के साथ उनकी सराहना की। साफ़ तौर पर, वह, ऊटी लिटरेरी फेस्टिवल (OLF) के इस साल के संस्करण की स्टार थीं जिसका आयोजन 9 और 10 सितंबर को औपनिवेशिक, गोथिक शैली की नीलगिरी लाइब्रेरी में हुआ था जो लगभग 1869 से वहां खड़ी है। वह जो स्पष्ट करना चाहती थी कि असल में वो हैदराबाद बुक ट्रस्ट (एचबीटी) की संपादक और प्रकाशक हैं, जो 1980 से पाठकों को तेलुगु में मूल और अनुवादित पुस्तकें सस्ती कीमत पर उपलब्ध करा रहा है। लेकिन ऊटी में उनकी मौजूदगी की वजह, एचबीटी से जुड़ाव नहीं है बल्कि उनकी लिखी किताब थी, *लैंड, गन्स, कास्ट, वुमन*।

लैंड, गन्स, कास्ट, वुमन। इसका भारी भरकम शीर्षक वजह थी, मुख्य रूप से मेरी स्थानीय किताबों की दुकान से ये पुस्तक खरीदने की। वो, और इसकी टैगलाइन: *मेमॉयर ऑफ़ लैप्सड रेवोल्युशनरी*। मुझे नहीं मालूम था कि गीता रामास्वामी कौन थीं, लेकिन जिस क्षण से मैंने पढ़ना शुरू किया - जो अनायास था - मैं वहीं अटक गई : 'यह मेरी और मेरे आस-पास की दुनिया के साथ मेरे हिसाब की कहानी है। मेरा जन्म एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था, जिसकी जड़ें केरल में हैं। पांच दशकों से अधिक समय से, हैदराबाद और उसके आसपास के जिलों का ऊबड़-खाबड़ दक्कन परिदृश्य मेरा घर रहा है। ब्रा फेंक देना, पश्चिम में महिला मुक्ति सुधारवादी कदम का द्योतक था, जबकि मेरे परिवार में, जब मैं चौदह साल की उम्र में, जब मैंने ब्रा पहनी तो मुझे फूहड़, बदतमीज़ कहा गया था। मेरे बचपन की यादों में गणित के प्रति मेरा जुनून और छोटे मोटे विद्रोह थे। 1970 के दशक में मेरा झुकाव नक्सली आंदोलन की तरफ हुआ और आपातकाल के दौरान मैं भूमिगत हो गई। मेरे माता-पिता को लगा कि मेरा ब्रेनवॉश कर दिया गया है।'

पहले वो अपने परिवार से विरक्त हुई, फिर आंदोलन से मोहभंग हुआ, गीता रामास्वामी कहती हैं कि एचबीटी ने 'मेरे अवसाद पर मरहम का काम किया। मैं जल्द ही एचबीटी का चेहरा बन गई और आज भी हूं। फिर भी मैं इस भूमिका में स्थिर नहीं रह सकी। मैंने जिस क्रांति के लिए जीवन जिया और जो सपना देखा था, वह अभी भी बहुत दूर था। मैं बेचैन थी । मैं तीस साल की थी।' उनके जीवन की दिशा एक बार फिर से बदल गयी , जब 1984 में, वो हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिम में इब्राहिमपट्टनम गई, और दलित समुदायों के लोगों से मिलीं जिन्हें सामंत वादियों ने भूमिहीन कर अपने शिकंजे में फंसा कर कुचल दिया था। बस, उन्हें अपना उद्देश्य मिल गया और अगले दस वर्षों तक इस क्षेत्र के गाँवों में निडरता पूर्वक, घूम घूम कर, कानूनी तरीकों से भूमि संघर्ष के लिए सफलतापूर्वक नेतृत्व किया, और बंधुआ मजदूरी के खिलाफ आवाज़ उठाई।

'उन्होंने मुझे अपनाया और ढेर सारा प्यार दिया,' गीता कहती हैं, जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने एक 'सवर्ण' ब्राह्मण जाति से बिलकुल विपरीत जीवन का ही नहीं बल्कि विपरीत परिस्थितियों का सामना भी किस प्रकार किया। 'मैं उस प्यार को लौटाने के सिवा कुछ नहीं कर सकती थी।' वह लिखती हैं, रेड्डी जमींदार, 'दंड' के रूप में घंटों तक लोगों की पीठ पर भारी पत्थर रखते थे ; कुछ गांवों में, मदिगा जाति की नवविवाहित दुल्हनों को सबसे पहले मालिक की हवेली में उनके 'ब्रेक इन' के लिए लाया जाता था; स्तनपान कराने वाली महिला मजदूरों के स्तनों को दबा कर देखा जाता था, यह जांचने के लिए कि वास्तव में उनके शिशुओं को दूध की ज़रूरत है या नहीं ... हर गाँव में गरीबों और दलितों के बीच ऐसी भयावह कहानियाँ आम हैं। यह कल्पना करना मुश्किल नहीं है कि वो जिस तरह के काम में संलग्न थीं, उनकी खुद की जान पर हमेशा खतरा मंडराता रहता था। सरल भाषा में, विस्तार से, पारदर्शी और बहुत सोच-समझ कर लिखी गई, *लैंड, गन्स, कास्ट, वुमन* ने भारत से सम्बंधित कई सच्चाइयों के प्रति मेरी आंखें खोल दी हैं जिनके बारे में या तो हम जानते नहीं हैं, या शायद, जानबूझ कर मुंह फेर लेते हैं।

वर्तमान में, गीता रामास्वामी ने अपने आप को पूरी तरह से एचबीटी पर केंद्रित कर लिया है, जो कुछ वर्षों तक नियमित रूप से कई टाइटल

छापने के बाद, महामारी के समय में बुरी तरह प्रभावित हुआ था और एक बार फिर से अपने पैर जमाने के लिए वो संघर्ष कर रहा है। अगले दिन छोटे, स्वतंत्र प्रकाशकों के विषय पर लेखक जेरी पिंटो के साथ चर्चा में, उन्होंने कहा कि वह दो तेलुगु भाषी राज्यों के आदिवासियों के लेखन का संकलन प्रकाशित करने की इच्छुक थी, लेकिन इस परियोजना के लिए धन की व्यवस्था एक बड़ी चुनौती थी। ''दो साल में, आप इस पुस्तक को यहीं, इसी जगह पर लॉन्च करेंगी,'' जैरी ने कहा, और उन्होंने उसी समय स्वयं ₹25,000 दे कर ऑन-द-स्पॉट क्राउडसोर्सिंग अभियान की शुरुआत कर दी। सभा में हाथ तेजी से बढ़े और, कुछ ही मिनटों में, पांच अंकों की एक बड़ी राशि इकट्ठी हो गई, जो अधिकांश नकद थी।

अत्यंत सरल, शानदार और प्रेरणादायक शोभा डे बिलकुल अलग नज़र आ रही थीं, जिन्होंने पिछली रात को डिनर से पहले अपनी किताब *सेवेंटी एंड टू हेल विथ इट* के कुछ अंश पढ़े थे। कोई आश्चर्य नहीं कि उनके सत्र में सबसे ज़्यादा भीड़ उमड़ी थी क्योंकि वे गिनती जा रही थी और प्रसन्न भी हो रही थी, अपने श्रोताओं को गंभीरता से लेते हुए । उनकी सार्वजनिक छवि और भीतर की महिला दोनों एक दूसरे में समाती दिख रही थी,

नीलगिरि पुस्तकालय, जहां ऊटी लिटफेस्ट का आयोजन किया गया था।

और ऐसा लगता है कि वो इस बात को जानती थी, उसका सम्मान करती थी कि और उन्होंने जो कुछ भी साझा किये वह उदगार सीधे उनके दिल से निकलते प्रतीत हो रहे थे। और लोग जब सेल्फी के लिए उमड़े तो उन्होंने कोई हंगामा खड़ा नहीं किया !

शोभा डे का कहना है कि वह 12 साल की उम्र से लिख रही हैं, हालांकि उन्होंने कभी भी एक लेखक बनने का 'सपना' नहीं देखा था, स्पष्ट रूप से जीवन और लोगों के अवलोकन और उनसे मिले अनुभवों से मिली प्रेरणा ने उन्हें कई पुस्तके लिखने के लिए प्रेरित किया था, जिसमें ज़िन्दगी के कई दशकों में बिखरी उनकी लिखी किताबें शामिल हैं। विश्वास ही नहीं होता है कि वह 75 वर्ष की होंगी - जी हाँ! - जनवरी में और उसके लिए भी उन्होंने योजना बना रखी है, जिसमें एल्विस पार्टी भी शामिल है: 'आई लव एल्विस!' महिलाओं को उनकी सलाह? आर्थिक रूप से स्वतंत्र रहें, कभी भी बैंक में संयुक्त खाता न रखें, अपने धन की प्रभारी खुद बनें।

जो हमें *द एजुकेशन ऑफ़ यूरी* की तरफ ले जाती है। ''यह पुस्तक बुकर जीतने जा रही है!' ओएलएफ की दयालु समन्वयक आरती मुथन्ना सिंह ये बुदबुदाते हुए नहीं थकती। सौभाग्य से हमारे लिए, जैरी पिंटो - वही - आमतौर पर मेरे जैसे अति उत्साही खरीदारों के लिए अपनी पुस्तकों की प्रतियां हमेशा साथ रखते हैं - छूट के साथ - और हस्ताक्षरित। हाल ही में प्रकाशित हुई पुस्तक के बारे में, वो बोले कि उनकी इच्छा है कि पाठक ये चाहें कि पुस्तक कभी समाप्त न हो जैसे कुछ किताबें हैं जो पढ़ने में इतनी अद्भुत होती हैं कि जब आप अंत के करीब आते हैं तो आप देखते हैं कि और कितनी बची है और फिर आप पढ़ने की गति धीमी कर देते हैं जिससे पुस्तक अधिक समय तक चलती है। हाँ और, मैंने अभी किताब पढ़ना शुरू किया ही है, और मैं इसे शुरू से ही धीरे-धीरे पढ़ रही हूं ताकि यह वास्तव में लंबे समय तक चले। यह बहुत ज़्यादा दिलचस्प है।

आप में से कुछ लोगों ने शायद उनकी लिखी शानदार *एम एंड द बिग हूम* को पढ़ा होगा। यदि नहीं पढ़ी तो कृपया ज़रूर पढ़ें। वैसे, जब आपको पता चलता है कि शोभा डे की सर्वाइविंग मेन

गीता रामास्वामी,
***लैंड, गन्स, कास्ट, वुमन* की लेखिका।**

के साथ उन्हें *सर्वाइविंग वुमेन* लिखने का काम दिया गया था, तो आप जैरी पिंटो की लेखनी की रेंज और उतार चढ़ाव देखने के अलावा एक चलते फिरते इनसाइक्लोपीडिया से भी रूबरू होंगे। उनकी बहन एंड्रिया भी एक इनसाइक्लोपीडिया है!

ओएलएफ के बारे में एक अंतिम बात। इसकी शुरुआत 2015 में हुई थी, जो लंबे समय से नीलगिरी में निवास कर रहे यश मुथन्ना के दिमाग की उपज थी। यहां तक कि जब उसने अपने परिवार को खबर दी, तो पुस्तकालय की सीढ़ियों पर वह उनकी पड़ोसी गीता श्रीनिवासन टकरा गई और इस तरह एक कहानी की शुरुआत हो गई। ओएलएफ अब तक सात संस्करण देख चुका है। साहित्य में उनके योगदान के लिए ओएलएफ द्वारा मान्यता प्राप्त विभिन्न हस्तियों द्वारा लगाए गए पौधे विभिन्न ऊंचाइयों के पेड़ों में परिवर्तित हो गए हैं जिससे संस्थापकों की प्रकृति से नज़दीकी और प्रेम साफ़ साफ़ नज़र आता है। इस वर्ष की पुरस्कार विजेता तारा बुक्स की संस्थापक गीता वुल्फ रहीं। जिन्होंने ओएलएफ की शुरुआत की, हालांकि सब लोग उन दोनों को प्यार से 'दादी' बुलाते हैं, लेकिन यश मुथन्ना और गीता श्रीनिवासन अपनी असीम ऊर्जा और उत्साह के साथ 'दादी' जैसे कहीं से भी नहीं लगते। आगे कैसे बढ़ते रहें, वे इसकी जीती जागती मिसाल हैं - रचनात्मक तरीके से, सक्रिय रहते हुए शिष्टता, सम्मान और आदर के साथ।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब चंडीगढ़ ने 75 कल्याणकारी परियोजनाओं के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया

जयश्री

ऊपरः चंडीगढ़ की एक झुग्गी बस्ती में बच्चों को कहानी की किताबें बांटने के बाद क्लब के सदस्यों के साथ PRIP राजेंद्र साबू।
नीचेः उषा साबू बच्चों को उपहार बांटती हुई।

रोटरी क्लब चंडीगढ़, रो ई मंडल 3080, ने भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में पांच दिनों में 75 मानवीय परियोजनाओं को निष्पादित किया। पांच विभागों - शारीरिक/मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षणिक और रचनात्मक गतिविधियों और जागरूकता सत्रों - के तहत वर्गीकृत इन परियोजनाओं को 650 निवासियों के साथ शहर के एक झुग्गी क्षेत्र सकेत्री कॉलोनी में निष्पादित किया गया।

क्लब 2018 से यहाँ के लोगों के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। ''यह सब 2016 में एक सर्द नव वर्ष की रात को शुरू हुआ जब हम अपनी मार्गदर्शक उषा साबू के साथ ऊनी कंबल वितरित करने के लिए उस झुग्गी में गए थे। वहाँ के लोगों की दुर्दशा से अत्यंत प्रभावित होकर उषा ने सुझाव दिया कि हमें इस कॉलोनी के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए,'' परियोजना अध्यक्ष नीनू विज ने कहा।

दो साल बाद 2018 में क्लब ने उन कार्यक्रमों पर काम करना शुरू किया जिनमें स्वास्थ्य और स्वच्छता, शिक्षा, वकालत और कौशल विकास शामिल थे। कॉलोनी के 120 बच्चों के लिए स्कूल के बाद कोचिंग कक्षाएं संचालित की जाती है और क्लब के सदस्य यहाँ के निवासियों के साथ त्योहार मनाते है। SEWA, एक गैर सरकारी संगठन, और भवन विद्यालय के विशेषज्ञ सहायता प्रदान करने के लिए क्लब के साथ काम करते है।

इस साल स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए नीनू और डॉ सीमा गुप्ता, परियोजना सह-अध्यक्ष, ने SEWA समन्वयक सिमरनजीत सिंह के साथ पांच दिनों में 75 कल्याणकारी परियोजनाएं करने के लिए इस कॉलोनी के निवासियों तक पहुंचने का फैसला किया। नीनू ने कहा कि उषा और PRIP राजेंद्र साबू ने तुरंत इस योजना पर अपनी सहमति व्यक्त की और वित्तीय सहायता प्रदान की। सभी सदस्यों ने परियोजनाओं के लिए अपना योगदान दिया। ''परोपकारी रोटेरियनों ने धन का योगदान दिया और हमारे क्लब में डॉक्टरों, शिक्षकों और कलाकारों ने अपने कौशल का योगदान दिया। यह एक परफेक्ट टीमवर्क था जिसने उत्सव का माहौल बनाने में मदद की।''

बच्चों के लिए खेल और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं, रचनात्मक सोच, ड्राइंग, मोम पेंटिंग और क्ले मॉडलिंग पर कार्यशालाएं; और महिलाओं एवं किशोरियों के लिए वित्तीय साक्षरता, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत सौंदर्य पर सत्र; और नृत्य एवं संगीत प्रतियोगिताएं कुछ उल्लेखनीय कार्यक्रम थे। निवासियों को यातायात नियमों, मादक द्रव्यों के सेवन, नैतिकता और नैतिक मूल्यों, शिष्टाचार और व्यक्तिगत स्वच्छता जैसी बुनियादी बातों पर संवेदनशील बनाया गया। कॉलोनी के नवोदित कलाकारों को ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ चैप्टर, की कलाकृतियों और चित्रों की प्रदर्शनी में ले जाया गया।

क्लब द्वारा आयोजित 'हर घर बगीचा' अभियान बच्चों में काफी प्रचलित हुआ। वे अपने स्वयं के पुस्तकालय और पौधों एवं जन्मदिन की सजावट बैंक को लेकर रोमांचित थे। क्लब के सदस्यों ने बच्चों में पढ़ने की आदत डालने के लिए किताबें दान की और उन्हें पढ़ने के बाद आपस में किताबों का आदान-प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कॉलोनी वासियों ने 'सकेत्री क्वीन' और 'हेल्दी बेबी' प्रतियोगिताओं के विजेताओं का उत्साहवर्धन किया।

नीनू ने कहा, ''इन पांच दिनों ने हमें कॉलोनी निवासियों के साथ करीब से बातचीत करने का अवसर दिया जिससे हमें यह पता चला कि उन्हें वास्तव में क्या चाहिए और हम बढ़ने में उनकी मदद कैसे कर सकते है।''■

एक चैंपियन रक्त दाता और पोलियो योद्धा

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी श्रीकांत छत्रपति
RID 3190

रक्तदान ही उनकी विशेषता थी। पीडीजी श्रीकांत छत्रपति ने 52 बार रक्तदान किया था और अपने होम क्लब, रोटरी क्लब बैंगलोर डाउनटाउन, रो ई मंडल 3190 के माध्यम से नियमित रूप से रक्तदान शिविरों का आयोजन करते थे। ''मेरे भाई इस उद्देश्य के लिए इतने भावुक थे कि वह टीटीके ब्लड बैंक और विभिन्न अन्य संगठनों के साथ साझेदारी में रक्तदान शिविर भी आयोजित किया करते थे। वह अपने जीवन के मिशन के रूप में रक्तदान करने के लिए बहुत प्रसिद्ध थे,'' पीडीजी मधुरा छत्रपति कहती हैं। पीडीजी श्रीकांत छत्रपति का नवंबर 2021 में निधन हो गया।

रोटरी क्लब बैंगलोर डाउनटाउन ने 25 अगस्त को सीएमआर विश्वविद्यालय, बेंगलुरु में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसमें पिछले अध्यक्ष जगदीश रेड्डी की पहल पर उनके जन्मदिन को याद किया गया। यह एक ऐतिहासिक कार्यक्रम था जिसमें बड़ी संख्या में छात्र शामिल हुए। ''क्लब ने मेरे भाई द्वारा छोड़ी गई विरासत को जारी रखने का फैसला किया है,'' मधुरा कहती हैं, जो इसी क्लब की सदस्या भी हैं।

पीडीजी श्रीकांत छत्रपति 'पोलियो उन्मूलन' के लिए समान रूप से प्रतिबद्ध थे। हर महीने पोलियो फंड में 100 डॉलर का योगदान देते थे। उन्हें रोटरी फाउंडेशन द्वारा हाल ही में 'एंड पोलियो फेलो' से सम्मानित किया गया था।■

डीमापुर क्लब, नागा बच्चों के लिए वरदान

वी मुत्तुकुमारन

नेटवर्किंग और मंडल अनुदान परियोजनाओं का लाभ उठाने से रोटरी क्लब डीमापुर, रो ई मंडल 3240, नागालैंड, के 63 सदस्यों वाले एक अपेक्षाकृत छोटे क्लब को जन्मजात हृदय रोगों से पीड़ित 109 नागा बच्चों तक पहुंचने के लिए दूरी और दूरस्थता की बाधाओं को दूर करने में मदद मिली। ''एक वैश्विक अनुदान परियोजना *गिफ्ट ऑफ लाइफ* के माध्यम से हमने 2006-07 से दिल्ली के एक क्लब के साथ साझेदारी में नई दिल्ली में स्थित फोर्टिस अस्पताल और नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट में 12 साल से कम उम्र के बच्चों को भेजा। बाद में, मंडल परियोजना हार्ट-टू-हार्ट ने हमें गरीब बच्चों को कोलकाता के पास दुर्गापुर मिशन अस्पताल में भेजने में मदद की,'' बाल हृदय सर्जरियों के प्रमुख प्रदीप कुमार जैन कहते है।

पिछले साल (2021-22) क्लब की स्वर्ण जयंती को भव्य आयोजनों के साथ चिह्नित करने के बाद, क्लब के संस्थापक अध्यक्ष जैन कहते है, ''हमें हर साल जन्मजात हृदय दोष वाले बच्चों के परिवारों से लगभग 15-20 अनुरोध प्राप्त होते है। यह बाल हृदय रोग नागालैंड समाज के निचले आर्थिक स्तर में अधिक व्याप्त है। लेकिन हमारे पास पूरे पूर्वोत्तर में सिर्फ दो अस्पताल है और यहां ऑपरेशन की लागत बहुत अधिक है।'' इसलिए मंडल परियोजना के समाप्त होने के बाद क्लब ने श्री सत्य साईं संजीवनी अस्पताल, रायपुर, से हाथ मिलाने के बाद हार्ट-टू-हार्ट कार्यक्रम जारी रखा। जैन याद करते है कि PDGगण अशोक अग्रवाल, रो ई मंडल 3240, और शशि वरवांदकर, रो ई मंडल 3261, ''ने नागा बच्चों के लिए इस बहुत ही महत्वपूर्ण परियोजना को जारी रखने हेतु हमारा बहुत समर्थन किया।'' पिछले चार वर्षों में रायपुर अस्पताल में 48 बच्चों का ऑपरेशन किया गया, ''जहाँ सब कुछ मुफ्त है और वे कोई पुराने कागजात या मेडिकल रिपोर्ट नहीं मांगते। सत्य साईं अस्पताल में भोजन, आवास और अन्य सुविधाएं नि:शुल्क दी जाती है।'' रायपुर अस्पताल के कार्डियक सर्जन डॉ अतुल प्रभु ने 2018 में और दोबारा इस साल भी सर्जरी की जरूरत वाले बच्चों की जांच के लिए क्लब का दौरा किया।

पहला मिलान अनुदान

2003 में अपने वैश्विक साझेदार रोटरी क्लब नॉर्थ फीनिक्स, यूएस, रो ई मंडल 5490, और TRF की बदौलत एक मिलान अनुदान (₹2 लाख) की मदद से दो कंप्यूटरों के साथ एक युवा शैक्षिक केंद्र

रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश (बीच में) के साथ (बाएं से) संजना अग्रवाल, डीजी मोहन श्याम कोंवर, पीडीजी चंदू अग्रवाल, ममता बुचा, पूर्व अध्यक्ष बजरंग बुचा और पंकज मोदी।

स्थापित किया गया। इस केंद्र ने एक वर्ष में लगभग 250 युवाओं को बुनियादी कंप्यूटर कौशलों में प्रशिक्षित किया। ''हमें ₹2 लाख का मंडल अनुदान भी मिला और 2018 में जब हमने इस केंद्र को बंद किया तब तक हमारे पास 15 कंप्यूटर थे और हम लगभग 4,000 छात्रों को प्रशिक्षित कर चुके थे।''

इसकी कुछ स्थायी सुविधाएं - तीन पेयजल कियोस्क (₹24 लाख); एक सार्वजनिक शौचालय (₹10 लाख); और ₹40 लाख की कुल लागत के साथ छह हैप्पी स्कूलों ने आसपास के इलाकों में क्लब को चर्चित किया। जैन कहते है, ''सभी हैप्पी स्कूलों को अब हाथों की धुलाई के स्टेशन, पुस्तकालय और पुनर्निर्मित परिसर की दीवारें मिल गई है जिससे दीमापुर के 2,500 बच्चे लाभान्वित हुए है।'' क्लब हर साल एक कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर (निचले अंग) आयोजित करता है जिससे पिछले 20 वर्षों में 800 विकलांगों को कृत्रिम अंग प्राप्त हुए है।

क्लब के अध्यक्ष मनीष कुमार जैन एक विशाल परियोजना को याद करते हुए कहते है, 2015-16 में मंडल अस्पताल, दीमापुर, ''में एक सप्ताह का विशाल चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया।

हैप्पी स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर क्लब के सदस्यों के साथ रो ई निदेशक वेंकटेश (वक्ता के बाएं बैठे)।

लगभग 7,000 रोगियों की जांच की गई और 200 से अधिक आंखों की सर्जरियाँ की गई। क्लब द्वारा भोजन और आवास सहित सभी सुविधाओं का ध्यान रखा गया।''

स्वर्ण जयंती समारोह में बोलते हुए, रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने दीमापुर रोटेरियनों से विशाल परियोजनाओं का लक्ष्य रखने का आग्रह किया ''जो आपके समुदायों में एक बड़ा परिवर्तन लाएगी। आपको नागालैंड के दूरदराज के लोगों तक अपनी सेवा पहुँचाने के लिए अपने पैमाने का विस्तार करना होगा।'' तब DG डॉ मोहन श्याम कंवर, गोल्डन जुबली समिति के अध्यक्ष PDG चंदू अग्रवाल और क्लब के तत्कालीन अध्यक्ष बजरंग बुचा भी मौजूद थे।■

दिल्ली में किफायती आईकेयर

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब दिल्ली अनंत, रो ई मंडल 3012 ने इस साल फरवरी में ग्रेटर नोएडा में बने रोटरी अनंत चैरिटेबल अस्पताल में एक नेत्र देखभाल केंद्र की स्थापना की। जुलाई में आरआई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स द्वारा ऑनलाइन नेत्र देखभाल केंद्र का उद्घाटन किया गया, क्लब के रोटरी अनंत वेलफेयर ट्रस्ट के माध्यम से कम कीमत पर मोतियाबिंद, भेंगापन और ग्लूकोमा के इलाज के लिए सर्जरी करेगा।

उद्घाटन समारोह में डीजी डॉ ललित खन्ना और पीडीजी आलोक गुप्ता मौजूद थे। रोटरी कल्ब कराची, रो ई मंडल 3271, पाकिस्तान ने वैश्विक अनुदान के माध्यम से नेत्र देखभाल केंद्र का समर्थन किया। उद्घाटन के उपलक्ष्य में चार मंजिला अस्पताल में आयोजित एक विशाल चिकित्सा शिविर में 200 से अधिक लोगों ने उपचार का लाभ उठाया। ■

डीजी डॉ ललित खन्ना और उनकी पत्नी नीलू ने पीडीजी आलोक गुप्ता (दाएं) की उपस्थिति में नेत्र देखभाल केंद्र का उद्घाटन किया।

आपकी खुशी और बेहतर स्वास्थ्य के लिए

भरत और शालन सवुर

मौसम बदलते है, समय बदलता है और हम भी बदलते है। हम बढ़े होते है और शायद समझदार भी! पते की बात यह है कि पुराने तरीकों में उलझकर उसके आदि न हो जाएं जिससे हमारे स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार ही न हो सकें। सिगरेट, शराब, ड्रग्स हमारे शरीर के मित्र नहीं है। अपने शरीर और मन को किसी लत में उलझाए बिना ही आप वास्तव में एक बढ़िया भोजन का स्वाद ले सकते है, अपने आस-पास की चीजों को अधिक स्पष्ट रूप से देख सकते है, हल्की-हल्की सुगंध महसूस कर सकते है, कुल मिलाकर अच्छी आदतों में पड़कर आप अपने आसपास मौजूद हर चीज़ की सराहना करेंगे, और... ऐसी ज़िंदगी बहुत अच्छी होती है।

ठीक होने के लिए आपको कुछ नहीं करना पड़ता। यह एक स्वाभाविक एवं सतत प्रक्रिया है। यदि गलती से आपकी उंगली कट जाती है, तो वह तुरंत ठीक होना शुरू हो जाती है। एक छोटा सा कट लगते ही आपका उपचार तंत्र सक्रिय हो जाता है। यह ज्ञान और परिप्रेक्ष्य मदद करता है। सवाल यह है कि: मैं खुद को स्वस्थ और खुश रखने के लिए किन गतिविधियों या आदतों को अपना सकता हूँ, किनको छोड़ सकता हूँ या किनको सुधार सकता हूँ?

भूख लगने पर ही खाएं

पिछले एक साल से मैंने दोपहर 12 बजे दोपहर का भोजन और शाम 6 बजे रात का भोजन खाना शुरू किया - जो पहले एक या दो घंटे देरी से होता था। मुझे अच्छा लगने लगा। हाल ही में मुझे अचानक शाम 5 बजे भूख लगी। यह सोचकर कि क्या मुझे बिस्कुट खाना चाहिए, अचानक मेरे दिमाग में आया: क्यों न रात्रिभोज जल्दी कर लिया जाए? और भोजन के बाद हुई तृप्ति का अहसास कुछ खास था। मैं अभी भी दिन में दो बार भोजन करता हूँ लेकिन अब इसके पीछे वजह यह है कि - जब आपको भूख लगे तब खाओं।

उपचारक प्रीता हमें बताती है, 'शरीर खाने की मशीन नहीं है। केवल तभी खाएं जब आपकी पाचन अग्नि भोजन मांगती हो न कि तब जब आपकी जीभ चाहे, और उचित भोजन ही खाएं। जाहिर है, हमारे पास प्रतिरक्षा ग्लोब्युलिन नामक जीवित तंत्र है। 'ये वे एंटीबॉडी है जो बीमारियों से लड़ते है और वे प्रोटीन से बने होते है। इसलिए, आहार में प्रोटीन की सही मात्रा प्रतिरक्षा को बढ़ाती है,' वह समझाती है।

अपने लिए अपने सुनहरे ऊर्जा घंटों का उपयोग करें

हम में से कुछ रात के 3 बजे सबसे ऊर्जावान होते है, कुछ सुबह 7 बजे, कुछ शाम 4-6 बजे के बीच, और कुछ रात के उल्लू होते है। अपने सर्वोत्तम ऊर्जा-घंटों की पहचान करें। इस समय को अपने व्हाट्सएप संदेशों की जांच करके, कोई काम पूरा करके या मूवी देखकर इसका दुरुपयोग न करें। ये आपके सुनहरे घंटे होते है जब आपकी शारीरिक और मानसिक क्षमताएं अपने चरम पर होती है। उन्हें किसी ऐसी चीज़ के लिए उपयोग करें जिसको लेकसर आप जोशीला महसूस करते हो - जैसे शिल्प, कला, कोई स्वयंसेवा कार्य।

अयोध्या के एक सब-इंस्पेक्टर रंजीत यादव सुबह जल्दी उठकर अपनी वर्दी पहनकर अनौपचारिक रूप से अपना स्कूल नामक अपने गली के स्कूल में जाते है और सुबह 7-9 बजे तक 60 वंचित बच्चों को हिंदी, अंग्रेजी और गणित की शिक्षा देते है। उनका स्कूल पेड़ की शाखाओं के नीचे चलता है - प्राचीन भारत की तरह ही।

उपचार का एक शानदार तरीका यह है कि आपको जो सबसे अधिक पसंद है वो करो। यहाँ 16 व्यापक श्रेणियां है जो आपको अपने जुनून से जोड़ती है: सीखना, सिखाना, रचनात्मक गतिविधियाँ, व्यक्तिगत वृद्धि, चिंतन, दूसरों की मदद करना, शरीर, मन, आत्मा की आत्म-शुद्धि, समस्या को सुलझाना, स्वास्थ्य और फिटनेस, कैरियर की वृद्धि, वित्त प्रबंधन, बच्चे, पशु और पक्षी, पर्यावरण, संगीत, चीजें व्यवस्थित करना।

यह स्वयं को असंतोषजनक और परेशान करने वाली चीजों से दूर करके सबसे अधिक मायने रखने वाली चीजों पर ध्यान केंद्रित करने के बारे में है। एक स्वस्थ जुनून से शरीर स्वस्थ रहता है।

कसरत करते समय सब कुछ भूल जाएं

एक छात्रा ने मुझसे कहा, '12.30 बजे मेरा एक अपॉइंटमेंट है तो क्या मैं आज साइकिल ही चला लूँ? हम आम तौर पर दोपहर 1 बजे अपना सत्र समाप्त करते है, 'नहीं,' मैंने सहजता से कहा। 'हम पहले अन्य सभी कसरत करेंगे और अंत में साइकिल चलाएंगे।' 'ठीक है,' उसने कहा। मुझे नहीं पता कि यह कैसे हुआ। शायद तीव्रता ने हमारी गतिविधि को तेज कर दिया। और हमने रिकॉर्ड समय में 40 मिनट

की साइकिलिंग सहित पूरा सत्र पूर्ण किया। मेरी छात्रा स्वस्थ और खुश थी। 'यह मेरा अब तक का सबसे अच्छा कसरत सत्र था!' उसने खुशी से कहा। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने कसरत करते समय बात नहीं की और न ही अपना सेलफोन देखकर माफी मांगते हुए कहा, 'मुझे यह कॉल उठाना पड़ेगा'। वह कसरत के अलावा सब कुछ भूल गई। टिप: अपने कसरत के अलावा के समय में, कुछ मजेदार करें जैसे जब आप दूध उबलने की प्रतीक्षा करते है तो कुछ लंजेस करें; अपने कार्य-डेस्क से उठें और थोड़ा जंपिंग जैक करें। एक दीवार के सहारे बैठने और खड़े होने की कोशिश करें। अपनी जीवनशैली में नई जान डालें।

पर्याप्त मात्रा का नियम

मैं एक लेख पढ़कर चकित था जिसमें बताया गया था कि कितने घंटे सोना है, कितना फाइबर लेना है, कितने मिनट पढ़ना है और भी बहुत कुछ। यह सब आंकड़ों के बारे में था। मैं एक पोषण विशेषज्ञ की सलाह पर चकित था जिसमें उन्होंने लोगों से सही मात्रा में प्रोटीन प्राप्ति के लिए प्रति भोजन के दौरान 4-5 कटोरी दाल खाने की सलाह दी थी। प्रोटीन की इतनी अधिक मात्रा से - आपके पेट के निचले हिस्से में एक दर्द उठ सकता है और आपके पेट में सूजन आ सकती है! इसलिए मैं कहूंगा किसी भी चीज़ की अति अच्छी नहीं होती केवल पर्याप्त मात्रा में ही सेवन करें:

* **नींद**: यदि आपकी भावनाएं नियंत्रित है, आपका मूड, समझ क्षमता, स्मृति और ध्यान-अवधि अच्छी है तो इसका अर्थ है कि आपको गुणवत्ता पूर्ण रात्री नींद मिल रही है। सुझाव: 20 मिनट का योग निद्रा ध्यान सोने का एक उत्तम तरीका है। यह मन को योजना बनाने, चिंता करने, गणना करने से रोकता है और शांत करके सुलाता है। मैं एक ऐसी महिला को जानता हूँ जो नर्सरी की कविताओं को सुनकर सो जाती है। उसे चुने जो आपको सूट करता है।

* **सूर्य**: रोजाना 10-20 मिनट की धूप प्राप्त करना उपचरात्मक होता है - सभी छोटी-मोटी परेशानियाँ, दर्द, असुविधाएं, थकान, अवसादग्रस्तता विचार इसकी गर्मी में घुल जाते है। सूरज की रोशनी खराब बैक्टीरिया को मारती है और यह एक महान स्वास्थ्य-बूस्टर है।

* **फ़ाइबर**: दिन में एक बार चुटकी भर नमक के साथ ओट्स वाले दूध का एक मध्यम कटोरा पूर्ण महसूस करने का एक सुपर तरीका है। फाइबर वसा और चीनी को बांधता है और शरीर को उनकी कैलोरी को अवशोषित करने से रोकता है; यह मधुमेह से ग्रसित और वजन कम करने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए अच्छी खबर है। गाजर, चुकंदर और भिंडी सुपर फाइबर खाद्य पदार्थ है। फाइबर कैंसर के खतरे को कम करता है।

* **ध्वनि**: प्राकृतिक ध्वनियाँ भी उपचरात्मक होती है। समुद्र तट पर, पहाड़ों के बीच, एक बहती धारा या फव्वारे के बगल में समय बिताएं। इसे तब तक सुने जब तक आपको शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक रूप से तनाव से मुक्त होकर आराम न मिले।

* **पीठ दर्द/सिरदर्द**: यदि आपको जागने के बाद पीठ दर्द महसूस होता है, तो अपने घुटनों के नीचे तकिया रखकर अपनी पीठ के बल सोने की कोशिश करें। और यदि आपको जागने के बाद सिरदर्द महसूस होता है तो यह अव्यवस्थित स्थिति में सोने के कारण हो सकता है। कंधों को सीधा रखकर सोएं। एकबार जागने के बाद दोबारा न सोएं। जब आप खड़े होकर एक मिनट के लिए घूमते है तो ये दोनों दर्द गायब हो जाते है।

अंत में, हम में से अधिकांश को इस अंतर्ज्ञान की आवश्यकता है कि हम अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं से अपना बोझ बढ़ाते है। दोनों को दूर करें ताकि अधिक स्थान एवं स्पष्टता के साथ एक नया जीवन शुरू हो सकें।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब वेप्पुर - रो ई मंडल 2981

सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, वेप्पुर, को लाउडस्पीकर (₹70,000) दान किया गया। सौंपने के कार्यक्रम में अध्यक्ष अबू सैयद मौजूद थे।

रो ई मंडल 3020

इंटरेक्टरों ने राष्ट्रीय ध्वज के महत्व को समझने और पूए मंडल में देशभक्ति की भावना पैदा करने के लिए साइकिल रैली निकाली।

रो ई मंडल - 3000

आठ राजस्व मंडलों में 20 रोटरी अध्ययन केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षित करने हेतु NRS IAS अकादमी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

रोटरी क्लब भुसावल रेलसिटी - रो ई मंडल 3030

प्लास्टिक मुक्त अभियान के दौरान जनता को लगभग 1,500 कपड़े की थैलियां वितरित की गईं। पुराने साड़ियों को पर्यावरण-अनुकूल थैलियों का रूप दिया गया।

रोटरी क्लब कुंडली - रो ई मंडल 3012

रसोई गांव के एक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय को 40 से अधिक डेस्क-बेंच दान किए गए।

रोटरी क्लब अहमदाबाद सुप्रीम - रो ई मंडल 3054

एक व्यस्त इलाके में एक रोटरी सुप्रीम *वॉल ऑफ ह्यूमैनिटी* स्थापित की गई, जिसके माध्यम से ताज़ा पका हुआ या बचा हुआ भोजन वंचितों को दान किया जा सकता है।

Rotary
PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब सूरत ईस्ट - रो ई मंडल 3060

कैंसर जांच शिविर में 300 से अधिक लोगों की जांच की गई। ब्रेस्ट स्कैन, पैप स्मीयर टेस्ट और PSA टेस्ट किए गए।

रोटरी क्लब मुजफ्फरनगर विशाल - रो ई मंडल 3100

मुजफ्फरनगर स्थित बाल मंदिर स्कूल में 108 बच्चों को पानी की बोतलें और रूमाल भेंट किए गए।

रोटरी क्लब यमुनानगर रिवेरा - रो ई मंडल 3080

सरकारी माध्यमिक पाठशाला, दयालगढ़, परिसर में पचास पौधे लगाए गए। रोटेरियन और एन्स ने वृक्षारोपण में भाग लिया।

रोटरी क्लब आगरा - रो ई मंडल 3110

बसई खुर्द के सरकारी संयुक्त विद्यालय के लगभग 270 छात्रों की दंत चिकित्सा शिविर में मौखिक स्वच्छता के लिए जांच की गई।

रोटरी क्लब फरीदकोट - रो ई मंडल 3090

फरीदकोट की आंगनबाड़ी में बच्चों को विटामिन सप्लीमेंट बांटे गए।

रोटरी क्लब सिद्धार्थनगर - रो ई मंडल 3120

सरकारी प्राथमिक विद्यालय सनई खुर्द में 100 विद्यार्थियों को खाने की प्लेट दी गई।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब पुणे रॉयल - रो ई मंडल 3131

पुणे स्टेशन पर 140 रेलवे कुलियों के लिए बोन डेंसिटी कैंप लगाया गया। इस परियोजना पर ₹3 लाख की लागत आई है।

रोटरी क्लब भाल्की फोर्ट - रो ई मंडल 3160

नेत्र परीक्षण और मोतियाबिंद जांच शिविर से लगभग 100 लोग लाभान्वित हुए। सर्जरी के लिए तीस मरीजों को चुना गया।

रोटरी ई-क्लब एम्पाउअरिंग युथ - रो ई मंडल 3132

इस कारण-आधारित क्लब का गठन PDG टॉम गंप, रो ई मंडल 4950, यूएस के साथ एक मिश्रित बैठक में किया गया था, जिसमें उन्होंने एक विशेष भाषण दिया गया था।

रोटरी क्लब गजेंद्रगढ़ - रो ई मंडल 3170

सरकारी कन्या उच्च विद्यालय के दंत चिकित्सा शिविर में 1,000 से अधिक छात्राओं की जांच रोटेरियन डॉक्टरों टी एच शंकर और कोमल आर रायबागी द्वारा की गई।

रोटरी क्लब न्यू बॉम्बे सीसाइड - रो ई मंडल 3142

GN हियरिंग इंडिया द्वारा प्रायोजित ₹10 लाख के आठ मोटर चलित खउण बेड आचार्य श्री नानेश्वर अस्पताल, बेलापुर, को दान किए गए।

रोटरी क्लब आइवरी सिटी मैसूरू - रो ई मंडल 3181

PDG डॉ रवि वाडलमानी और क्लब अध्यक्ष M N रमेश की उपस्थिति में 50 सब्जी विक्रेताओं को छाते वितरित किए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कोयंबटूर ईस्ट - रो ई मंडल 3201

करैयूर झण एलीमेंट्री स्कूल में ₹15 लाख की स्मार्ट क्लासरूम बनाई गई। भवनों का जीर्णोद्वार किया गया, नए शौचालय बनाए गए, नए फर्नीचर, कंप्यूटर, पंखे, फाल्स सीलिंग, RO संयंत्र और CCTV लगाए गए।

रोटरी क्लब टूटीकोरिन ट्रेलब्लेजर्स - रो ई मंडल 3212

PDG जैसिंथा धर्मा ने काल्डवेल उच्तर माध्यमिक स्कूल में एक शौचालय खंड (₹1 लाख) का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब मेट्टुपलायम प्राइम - रो ई मंडल 3203

120 से अधिक रोगियों की स्तन कैंसर की जांच की गई, जिसमें 60 की मैमोग्राम के माध्यम से जांच की गई। गंगा अस्पताल ने क्लब के साथ साझेदारी की।

रोटरी क्लब जमशेदपुर दलमा - रो ई मंडल 3250

75वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर, क्लब ने रोटरी की छवि को बढ़ाने के लिए टाटानगर रेलवे स्टेशन पर तिरंगे में एक लोकोमोटिव इंजन पेंट किया।

रोटरी क्लब अलेप्पी ग्रेटर - रो ई मंडल 3211

दो गांवों में वंचित परिवारों को ₹80,000 की ओणम किट वितरित की गई। क्लब के अध्यक्ष विजयकुमार उपस्थित थे।

रोटरी क्लब जबालीपुरम - रो ई मंडल 3261

MP पावर मैनेजमेंट कंपनी के साथ साझेदारी में आयोजित विशाल वृक्षारोपण और जागरूकता वॉकाथॉन में लगभग 1,500 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

आखिर, विकसित देशों में बाथरूम छोटे क्यों हैं?

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले दो हफ्तों से मैं पश्चिमी यूरोप की यात्रा पर हूं, जहां माना जाता है कि इसमें विकसित देश हैं। कोई राष्ट्र विकसित है या नहीं इसके लिए अर्थशास्त्री और अन्य लोग तरह तरह के, विचित्र मानदंडों का उपयोग करते हैं जैसे प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति डॉक्टर और अस्पताल बेड सुविधा और प्रति व्यक्ति स्कूल और शिक्षक, आदि। वे कहते हैं कि प्रति व्यक्ति संख्या का अधिक होना बेहतर है और कम होना खराब। इन मामलों में भारत का प्रदर्शन खराब है।

चलो ठीक है, लेकिन प्रति व्यक्ति ये और प्रति व्यक्ति वो की इस सूची में, अब मैं एक और मानदंड जोड़ना चाहता हूं: प्रति व्यक्ति बाथरूम। पिछले कई महीनों तक विदेश में रहने और विदेश यात्रा करने के बाद, मैं यकीनन कह सकता हूं कि जैसे ही आपने इस मानदंड को जोड़ा, यहां तक कि सबसे विकसित देश भी कई पायदान नीचे लुढ़क सकते हैं।

ब्रिटेन के साथ-साथ यूरोप की स्थिति बहुत खराब है। स्विट्जरलैंड जैसा देश भी इसका अपवाद नहीं है। मुझे इसलिए मालूम है क्योंकि मेरा बेटा वहीं रहता है, एक समृद्ध शहर के बढ़िया इलाके में। जिनेवा झील को देखते वहाँ के घर सुंदर हैं। वे प्राचीन हैं, सबसे सुंदर हैं दरवाजे, खिड़कियां और भव्य पुराने फर्श। कमरे बड़े हैं और हवादार हैं। कुल मिला कर, वो सब कुछ है जो आप एक अपार्टमेंट में चाहते हैं।

लेकिन इन सभी शानदार अपार्टमेंटों में एक बड़ी खामी होती है: उनमें एक छोटे से शावर सहित सिर्फ एक स्नानघर और एक पृथक शौचालय होता है। सिर्फ एक। इतना ही नहीं वो होते भी बहुत छोटे हैं। यहां भारत में पश्चिमी कमोड वाले बाथरूम का औसत आकार 40 वर्ग फुट होता है, यूरोप के 'विकसित' देशों में, यह इसका आधा या आधे से भी कम होता है। या, जैसी एक कहावत है, आप वहां एक बिल्ली तक नहीं घुमा सकते। मेरे बेटे का अपार्टमेंट भी कोई अपवाद नहीं है। वास्तव में, मैं एक बार सेंट्रल लंदन के एक होटल में रुका था, जो काफी आलीशान था, जहाँ बाथरूम इतना छोटा था कि उसकी दीवारें मेरे कंधों को लगभग छू रही थीं।

हाल ही में अन्यथा शानदार फ्लैटों में और यहां तक कि घरों में भी एक छोटे बाथरूम की प्राथमिकता और पसंद पर मैंने कुछ शोध किया है। पहले तो मुझे लगा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वहां अचल संपत्ति महंगी थी इसलिए वे उन कमरों पर पैसा बर्बाद नहीं करना चाहते थे, जिसका उपयोग एक व्यक्ति पूरे दिन में अधिकतम 15 मिनट के लिए करते है। और घर में बड़ी उम्र के चार या पांच लोग हों, तो भी पूरे दिन में कुल एक घंटा ही खर्च होता है। तो फिर जगह और पैसा क्यों बर्बाद करें? लेकिन मालूम चला की इसकी वजह ये नहीं है। भारत में रियल एस्टेट अपेक्षाकृत अधिक महंगा है और इसके बावजूद हमारे बाथरूम काफी बड़े हैं। वास्तविक कारण, मुझे बताया गया था, नलसाजी, पाइपलाइन फिटिंग आदि की लागत बहुत ज़्यादा होती है । या हो सकता है कि उससे गन्दगी फ़ैलती हो।

यहां भारत में पश्चिमी कमोड वाले बाथरूम का औसत आकार 40 वर्ग फुट होता है, यूरोप के 'विकसित' देशों में, यह इसका आधा या आधे से भी कम होता है।

लेकिन एक चीज का श्रेय तो यूरोपियों को देना ही होगा। बाथरूम कितना ही छोटा क्यों न हो, वहाँ एक टब ज़रूर होता है जिसमें पानी का उपयोग काफी अधिक मात्रा में होता है। इसी से पता चलता है कि वे शायद सप्ताह में एक दो बार या उससे भी कम स्नान करते हैं, यह बात गले उतरती है क्योंकि वहां सर्दी बहुत ज़्यादा पड़ती है। हालाँकि, यह समझना मुश्किल है कि गर्मियों के मौसम में वे क्या व्यवस्था करते होंगे जब बहुत तेज़ गर्मी पड़ती है। लेकिन अब कुछ जगहों पर उन्होंने बाथरूम में शावर लगवा लिए हैं जो अच्छा है। लेकिन अब एक नई समस्या खड़ी हो गई है: नहाने के लिए आपको टब में खड़ा होना होगा। यह काफी मुश्किल है और खतरनाक भी साबित हो सकता है।

न ही, जैसा कि होता है, इन लोगों के पास अटैच्ड बाथरूम की सोच या अवधारणा है। सभी बाथरूम का मार्ग गलियारे से या रास्ते के बीच से हो कर जाता है। यह गैर-यूरोपीय महिलाओं के लिए काफी शर्मनाक हो सकता है। तो इसके मद्दे नज़र यहां विश्व बैंक को मेरा सुझाव है, जो तय करता है कि कौन सा देश विकसित है और कौन सा नहीं: अपने मानदंडों में अटैच्ड बाथरूम को भी जोड़ें। यकीन मानिये भारत शीर्ष पर नज़र आएगा। ■

संक्षेप में

जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए रिटेलर का बड़ा दान

अमेरिकी रिटेलर और कपड़ों के ब्रांड पेटागोनिया के संस्थापक यवोन चौइनार्ड ने जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए अपनी परिधान कंपनी के मूल्यांकन का पूरा 3 बिलियन डॉलर दान किया है। हाल ही में इस ब्रांड ने इसी मुद्दा के लिए 10 मिलियन डॉलर का दान किया जो उसने कॉर्पोरेट कर कटौती में से बचाया है।

WWF के लिए दौड़

एक ब्रिटिश मैराथन धावक और 2018 लंदन मैराथन में फॉरेस्ट गंप (फिल्म चरित्र) की वेशभूषा में दो घंटे और 36 मिनट का समय लेकर सबसे तेज धावक के रूप में गिनीज़ रिकॉर्ड बनाने वाले रॉबर्ट पोप ने हाल ही में विश्व वन्यजीव फाउंडेशन (WWF) के लिए धन जुटाने हेतु 24 घंटे से भी कम समय में आयरलैंड की चौड़ाई के बराबर दूरी तय की।

प्रशांत महासागर की सफाई

एक गैर-लाभकारी संगठन, ओशन क्लीन-अप, ने अपने सिस्टम 02 नामक प्रोटोटाइप सफाई प्रणाली का उपयोग करके प्रशांत महासागर से 100 टन से अधिक प्लास्टिक को हटाया है। इसने 3,000 वर्ग किमी के क्षेत्र की सफाई करने के लिए 45 से अधिक निष्कर्षण का उपयोग किया।

एक रक्त परीक्षण जो 50 प्रकार के कैंसर का पता लगाता है।

एक अमेरिकी जैव प्रौद्योगिकी कंपनी ग्रेल ने रक्त प्रवाह में बहने वाली कैंसर कोशिकाओं के डीएनए में देखकर रक्त के नमूने के माध्यम से 50 से अधिक प्रकार के कैंसर का पता लगाने के लिए गैलेरी टेस्ट नामक एक सरल रक्त परीक्षण विकसित किया है।

कार्बन उत्सर्जन पर मूल्य टैग

भारत सरकार ने लोकसभा में एक संरक्षण विधेयक पारित किया जिससे कार्बन उत्सर्जन पर कीमत लगाना आसान हो गया। जहाँ यह विधेयक गैर-जीवाश्म ईंधन के उपयोग को प्रोत्साहित करता है, वहीं इसमें उन निगमों के लिए दंड का प्रावधान भी शामिल है जो अपने संचालन को शक्ति प्रदान करने के लिए पर्याप्त मात्रा में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग नहीं कर रहे है।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹40
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

ADVT.

UNDERGRADUATE PROGRAMMES

- **B.A.**
- **B.Sc.**
- **B.Com.**
- **B.A. Hons.**
- **B.Sc. Hons.**
- **B.Com. Hons.**

SPECIALIZED PROGRAMMES

- **B.Com. Hons.** (Proficiency in Chartered Accounting/ Proficiency in Company Secretaryship) Specialized programmes and separate academic calendars for aspirants of CA & CS.
- **B.Com. Hons.** (Applied Accounting and Finance) Accredited by ACCA, UK.

UG - PROFESSIONAL PROGRAMMES

- **B.A.** (J.M.C.)
- **B.F.A.**
- **B.C.A.**
- **B.Sc. Hons.** (Forensic Science)
- **B.Sc. Hons.** (Data Analytics and Artificial Intelligence)
- **B.Sc. Hons.** (Home Science)
- **B.Sc.** (Fashion Design)
- **B.Sc.** (Jewellery Design & Technology)
- **B.B.A.**
- **BBA** (Aviation and Tourism Management)

BACHELOR OF VOCATION (B.Voc.) PROGRAMMES*

- **B.Voc.** (Office Management and Secretarial Practices)
- **B.Voc.** (Banking and Financial Services)
- **B.Voc.** (Entrepreneurship and Business Innovation)
- **B.Voc.** (Digital Marketing)

*UGC Approved

CO-EDUCATIONAL PROGRAMMES

@ IISU Block, ISIM Campus, Mahaveer Marg, Mansarovar

- **B.Sc. Hons.** (Multimedia & Animation)
- **B.C.A.** (Bachelor of Computer Applications)
- **B.B.A.** (Bachelor of Business Administration)
- **B.Lib.I.Sc.** (Bachelor of Library and Information Science)
- **M.A.** (Digital Media and Communication)
- **M.C.A.** (Master of Computer Applications)
- **M.B.A.** (**Dual Specialization, Trimester based**)- Marketing, Finance, Production and Operation Management HR, IB, IT

INTEGRATED PROGRAMMES

- **B.A. B.Ed.***
- **B.Sc. B.Ed.***
- **B.Sc. M.Sc.** (Nano Science & Technology)

*NCTE Approved

SHORT TERM COURSES

- **Cyber Security and Cyber Law (Online)**
- **Certificate Course in Textile Design**

POST GRADUATE PROGRAMMES

- **M.A.-** English, History, Economics, Psychology, French, Sociology, Geography, Mathematics, Political Science, Statistics, International Relations, Public Administration
- **M.Sc.-** Zoology, Chemistry, Microbiology, Botany, Biotechnology, Psychology, Environmental Science, Geography, Mathematics, Physics, Economics, Statistics
- **M.Com. -** Accounting & Taxation, Business Studies, Financial Studies

PG - PROFESSIONAL PROGRAMMES

- **M.A.-** Journalism & Mass Communication
- **M.A. /M.Sc.** (Yogic Sciences)
- **M.A./M.Com./M.Sc.** (Fashion Design)
- **M.A./M.Com./M.Sc.** (Jewellery Design)
- **M.F.A. -** Applied Art (Graphic Design/Illustration), Print Making, History of Art, Painting, Sculpture (Portraiture, Creative Sculpture)
- **M.S.W.** (Master of Social Work)
- **M.Sc. Home Science** - Clothing and Textiles, Foods and Nutrition, Human Development
- **M.B.A. (Semester Based)** Human Resource Management; International Business; Retail Management; Tourism & Travel Management; Finance; Advertising & Brand Management; Business Analytics; Innovation, Entrepreneurship and Venture Development

MBA/MCA AICTE Approved

RCI APPROVED PROFESSIONAL DIPLOMA IN CLINICAL PSYCHOLOGY

RESEARCH PROGRAMMES

- **Ph.D.:** Admission through Research Entrance Test.
- **D.Sc./D.Litt.**

CAREER ORIENTED & SKILL DEVELOPMENT PROGRAMMES, 3-LEVEL CERTIFICATE/ DIPLOMA/ADVANCED DIPLOMA ALONG WITH DEGREE PROGRAMMES

Scholarship for Meritorious/ National Level Sports Achievers

PREPARATORY CLASSES

along with UG/PG programmes

- Civil Services
- NET
- USCMA

DISTINGUISHING FEATURES

- Hostel Facilities Available
- Placement Support
- Wi-Fi Enabled Campus
- Extension Activities
- Extra & Co-Curricular Activities
- Conveyance Facility, covering all parts of Jaipur including remote areas
- NCC
- NSS
- Sports

FOR MORE INFORMATION :

Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur-302020
Rajasthan (INDIA)

+91 141 2400160, 2397906/07
Toll Free No.: 1800 180 7750

admissions@iisuniv.ac.in

www.iisuniv.ac.in